राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

उभरता बिहार

मूल्य: ₹15/-

वर्ष : 16, अंक : 7, जनवरी 2024

सच्चाई, ऊर्जा, सकारात्मक विचार

मोदी रामबाण रूपी ब्रह्मास्त्र से जीतेंगे 2024 की जंग ?

LA CLOVE

la Clove

Cafe & Dining .....

*** We making all Food From Pure Refined Oil & Pure Ghee**

Contact for
Party and Birthday
Seating Capacity
100 Person

follow us on : laclovecafe

laclovecafe@gmail.com www.laclove.com

Hardi Complex, Dakbanglow Crossing, Patna - 800001

Contact For Booking @746203335 / 0612-3507094

Hardi Complex, Dakbanglow Crossing, Patna - 800001

उभरता बिहार

वर्ष : 16, अंक : 07, जनवरी 2024

RNI No. BIHHIN/2007/22741

संपादक

राजीव रंजन

विशेष संवाददाता

कुमुद रंजन सिंह

छायाकार

विनोद राज

विधि सलाहकार

उपेन्द्र प्रसाद

चंद्र नारायण जायसवाल

साज-सज्जा

मयंक शर्मा

प्रशासनिक कार्यालय

सी-49 हाऊसिंग कॉलोनी, लोहियानगर

कंकड़बाग, पटना - 800020

फोन : 7004721818

Email : ubhartabihar@gmail.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक रांजीव रंजन द्वारा कृत्या पब्लिकेशन, लंगरटोली, बिहार से मुद्रित एवं सी-49 हाऊसिंग कॉलोनी, लोहियानगर, कंकड़बाग, पटना - 800020 से प्रकाशित।

संपादकः राजीव रंजन

सभी कानूनी विवाद पटना न्यायिक क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत निपटाये जायेंगे। लेखकों द्वारा व्यक्त विचार उनके अपने है। इसकी जिम्मेदारी उनकी है एवं इसके लिये संपादक, प्रकाशक की सहमति अनिवार्य नही है। सामग्री की वापसी की जिम्मेवारी उभरता बिहार की नहीं होगी। इस अंक में प्रकाशित सभी रचनाओं के सर्वोधिकार सुरक्षित है। कुछ छाया चित्र और लेख इंटरनेट, एजेंसी एवं पत्र-पत्रिकाओं से साभार। उपरोक्त सभी पद अस्थायी एवं अवैतनिक है। किसी भी आलेख पर आपत्ति हो तो 15 दिनों के अंदर खंडन करें।

नोट : किसी भी रिपोर्टर द्वारा अनैतिक ढंग से लेन-देन के जिम्मेवार वे स्वयं होंगे।

संरक्षक

डॉ. संतोष कुमार | अखिलेश कुमार जायसवाल

राजीव रंजन | डॉ. राकेश कुमार

स्वयं श्रीराम ने कहा, जन्मभूमि से सुंदर लंका नहीं : साध्वी ऋतंभरा 09

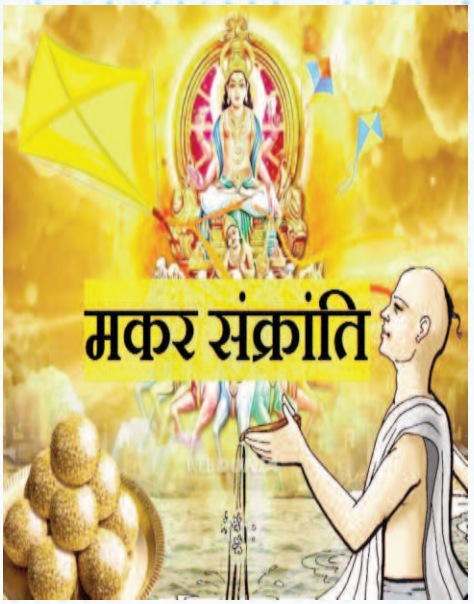

रवि योग में मनेगी मकर संक्रांति 12

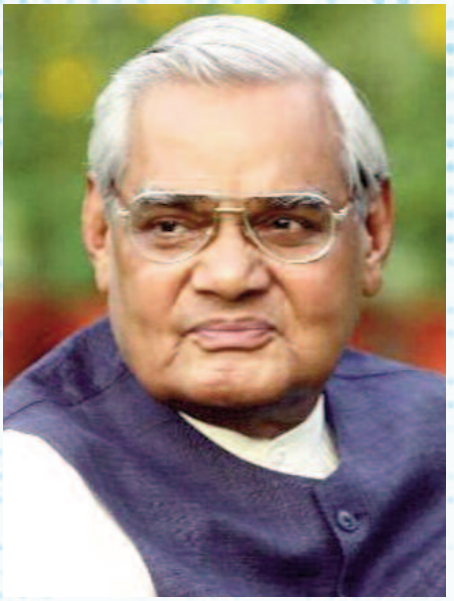

वाजपेयी जी कहते थे राजनीति और ... 41

स्वच्छता का जज्बा

राजीव रंजन
संपादक

एक बार फिर स्वच्छता के देशव्यापी सर्वे में इंदौर ने सातवीं दफा अपना ताज बरकरार रखा, हालांकि इस बार कभी प्लेग से जूझने वाला सूरत भी साथ खड़ा नजर आया। निश्चित रूप से सफलता के शिखर पर पहुंच जाना महत्वपूर्ण होता है, लेकिन शिखर पर सात साल तक टिके रखना बड़ी बात होती है। जाहिर है यह सफलता सिर्फ प्रशासन व स्थानीय निकाय की ही कोशिशों से संभव नहीं थी, जब तक कि इसमें जनभागीदारी सुनिश्चित न होती। इंदौर ने घर-घर से कचरा उठाने, अगलनीय कचरे को अलग करने व कचरे का पुनर्चक्रण करने जैसे कई चरणों को सफलतापूर्वक अंजाम दिया। कभी सिटी ब्यूटीफुल के उपनाम से पहचान बनाने वाले चंडीगढ़ का स्वच्छता सर्वे में सर्वश्रेष्ठ सफाई मित्र बनना संतोष की बात है। लेकिन हरियाणा, पंजाब व खुद केंद्रशासित प्रदेश चंडीगढ़ की राजधानी होने तथा देश के पहले नियोजित शहर होने के नाते इस शहर को स्वच्छता के शीर्ष मानकों में खरा उतरना चाहिए था। वहीं इंदौर के साथ पहला स्थान साझा करने वाले सूरत की उपलब्धि भी सराहनीय है। कभी प्लेग की महामारी के कारण दुनियाभर में सुर्खियों में आने वाले सूरत का स्वच्छता के मानकों पर खरा उतरना निश्चित ही चौंकाने वाला है। महामारी के बाद इस शहर में सफाई के प्रयास युद्धस्तर पर किये। पिछले तीन दशक में लगातार स्वच्छता के प्रयासों का नतीजा है कि सूरत का कायाकल्प हुआ है। राज्य के रूप में महाराष्ट्र ने बाजी मारी है। वहीं गंगा किनारे बसे शहरों में वाराणसी अव्वल रहा है। मगर उत्तर प्रदेश व बिहार के किसी भी शहर का देश के दस स्वच्छ शहरों की सूची में स्थान न बना पाना नीति-नियंताओं को आत्ममंथन का मौका देता है। बिहार को भी सोचना चाहिए कि क्यों उसकी राजधानी पटना का स्थान ढाई सौ शहरों से ऊपर है। इन राज्यों को स्वच्छता को लेकर युद्ध स्तर पर काम करने की जरूरत है। स्वच्छ शहर शोभनीयता के अलावा जनस्वास्थ्य की दृष्टि से भी विशेष महत्वपूर्ण है।

बहरहाल, केंद्रीय शहरी विकास और शहरी मामलों के मंत्रालय ने पिछले लगभग एक दशक से स्वच्छता रैंकिंग जारी करके देश में सफाई के प्रति एक स्वस्थ प्रतियोगिता शुरू की है। सभी राज्यों को सफाई के लिये प्रेरणा मिली है। जन-जन में भी जागरूकता आई। लेकिन स्वच्छ भारत अभियान को सफल बनाने के लिये अभी अधिक प्रयासों की जरूरत है। हमें याद रहे कि लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री द्वारा स्वच्छ भारत मिशन की घोषणा किये दस साल हो गए हैं। अपेक्षित लक्ष्य पाने के लिये अतिरेक प्रयास करने की जरूरत है। यह भी समझने की जरूरत है कि गंदगी से ही तमाम बीमारियों को पैदा करने वाले जीवाणु-विषाणु पनपते हैं। हम स्वच्छता को प्राथमिकता देकर बीमारियों पर होने वाले खर्च को भी बचा सकते हैं। हम विचार करें कि इंदौर जैसी प्रशासनिक व जनता की भागीदारी अन्य शहरों व राज्यों में क्यों नहीं होती। यह भी कि हम घर में तो साफ-सफाई रखते हैं, लेकिन सार्वजनिक स्थलों पर सफाई को लेकर गंभीर क्यों नहीं होते। क्यों हम घर से निकलने वाले कचरे का वर्गीकरण सूखे, गीले और अगलनीय कचरे के रूप में नहीं करते। निश्चित रूप से दिल्ली में आबादी के भारी दबाव का स्वच्छता पर असर पड़ता है। लेकिन फिर भी राष्ट्रीय राजधानी में दिखने वाले कचरे के वास्तविक पहाड़ देश को शर्मसार करते हैं। जिस पर राजनीति तो होती है, लेकिन सारे दल मिलकर इसे हटाने का प्रयास नहीं करते। दरअसल, सफाई हमारी आदत में शामिल होनी चाहिए और प्रशासन को सफाई व्यवस्था दुरुस्त करने का सलीका आना चाहिए। स्थानीय निकायों को घर-घर से वगीर्कृत कूड़ा उठाने, सीवरों की सफाई और उनका पानी जीवनदायिनी नदियों में जाने से रोकने के लिये अतिरिक्त प्रयास करने होंगे। कचरे के निस्तारण के लिये हरित तकनीक प्रयोग हो। सफाई मित्रों की सुरक्षा व सम्मान सुनिश्चित किया जाए। जिससे पूरे देश में स्वच्छता के प्रति जागरूकता को विस्तार मिले। हमें ध्यान रखना चाहिए कि पर्यावरण प्रदूषण से देश में लाखों लोगों की जान चली जाती है। सफाई की दिशा में कदम उठाकर हम पर्यावरण को शुद्ध बनाने का महती दायित्व निभा सकते हैं।

मोदी रामबाण रुपी ब्रह्मास्त्र से जीतेंगे 2024 की जंग ?

देखा जाएं तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राम की नगरी अयोध्या से लोकसभा चुनाव 2024 का शंखनाद कर दिया है। हजारों करोड़ की विकास योजनाओं का लोकार्पण के बाद मोदी ने यूपी ही नहीं, बिहार, पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र से लेकर पूरे भारतीयों या यूं कहे हर तबके को साधा। एक तरफ उन्होंने महर्षि वाल्मीकि इंटरनेशनल एयरपोर्ट के जरिए वाल्मीकि समाज को रिझाया, तो दुसरी तरफ मीरा मांझी के घर पहुंचकर रामलला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह का आमंत्रण देकर उन्होंने दलित और निषाद समाज को साधने का बड़ा दांव खेल दिया। उन्होंने नेताजी सुभाष चंद्र बोस को अयोध्या की धरती से याद किया। वहीं, स्वर कोकिला लता मंगेशकर के जरिए महाराष्ट्र की राजनीति को भी साधने की कोशिश की। अमृत भारत एक्सप्रेस के जरिए बिहार के लोगों को संदेश दिया कि विकास हम ही करेंगे। खास यह है कि मोदी ने विकास योजनाओं के साथ-साथ लोगों का आह्वान किया कि वे अपनी ऐतिहासिक विरासत को भी संजाने संवारने के लिए आगे आएं। रामलला के प्राण प्रतिष्ठा की तिथि 22 जनवरी को उत्सुकता का प्रदर्शन करते हुए श्रीराम ज्योति इस कदर जलाएं, मानों सचमुच मयार्दा पुरुषोत्तम श्रीराम का अवतरण आज ही हुआ है। मतलब साफ है मोदी ने राम की धरती से चुनावी बिगुल फूंकते हुए रामबाण रुपी ब्रह्मास्त्र चलाकर 2024 की जंग जीतने का ऐलान कर दिया है। बाजी किसके हाथ लगेगी, ये तो चुनाव परिणाम बतायेंगे? लेकिन लोकसभा चुनाव 2024 से पहले पीएम मोदी ने अयोध्या के मंच से धर्म के साथ विकास की राजनीतिक एजेंडा सेट कर दिया है। विरासत को विकास के लिए जरूरी बताकर एक बड़ा संदेश दिया है

सुरेश गांधी

फिरहाल, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी निमार्णाधीन भव्य राम मंदिर में भगवान राम के बाल स्वरुप मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा से पहले चैथी बार अयोध्या पहुंचकर पहले रोडशो किया, फिर अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन का उद्घाटन भी किया. या यूं कहे पीएम नरेंद्र मोदी रामनगरी में रोड शो करने वाले पहले प्रधानमंत्री बने। पीएम का रोड शो अद्भुत, अविश्वसनीय व अकल्पनीय रहा..। अद्भुत इसलिए रहा कि पीएम मोदी का स्वागत करने के लिए अयोध्या समेत पूरे देश की संस्कृति उमड़ पड़ी। अविश्वसनीय व अकल्पनीय इसलिए रहा कि आज से पहले कोई कल्पना नहीं कर सकता था कि कोई प्रधानमंत्री अयोध्या में रोड शो करेगा। अयोध्या में रोड शो के जरिए पीएम नरेंद्र मोदी पूरे देश के दिल में उतर गए। बारी जब लोगों को संबोधन की आयी तो यह कहने में संकोच नहीं किया कि आज देश में सिर्फ बाबा विश्वनाथ धाम, महाकाल महालोक व केदार धाम का पुनरुद्धार ही नहीं हुआ है, बल्कि 315 से ज्यादा नए मेडिकल कॉलेज भी बने हैं। हर घर जल पहुंचाने के लिए पानी की 2 लाख से ज्यादा टंकियां भी बनवाई गई हैं। पीएम नरेंद्र मोदी इसके बाद अयोध्या के नवनिर्मित महर्षि वाल्मीकि इंटरनेशनल एयरपोर्ट का उद्घाटन करने पहुंचे। उद्घाटन समारोह को लेकर तैयारी पहले से पूरी की गई थी। महर्षि वाल्मीकि के नाम पर

एयरपोर्ट का उद्घाटन और उससे पहले निषाद राज को प्रभु रामलला के प्राण प्रतिष्ठा में आमंत्रण को लेकर एक अलग ही राजनीतिक लाइन पर काम किए जाने की चर्चा शुरू हो गई है। भारतीय जनता पार्टी दलित पॉलिटिक्स पर लगातार काम करती दिखी है। यूपी चुनाव 2022 के दौरान सीएम योगी आदित्यनाथ को दोबारा सत्ता में लाने में दलित वोट बैंक का बड़ा योगदान था।

पीएम नरेंद्र मोदी ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जिक्र अयोध्या के मंच से किया। उन्होंने कहा कि आज के ही दिन 30 दिसंबर 1943 को नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने अंडमान जेल में देश की आजादी का झंडा फहराया था। उसके आजाद भारत के विकसित होने के संकल्प को हमारी सरकार पूरा करने में जुटी हुई है। दरअसल, पश्चिम बंगाल में भाजपा को तृणमूल कांग्रेस से कड़ी टक्कर मिलती दिख रही है। भगवान श्रीराम के अयोध्या मंदिर में विराजमान होने को लेकर पीएम मोदी से नेताजी को याद कर साधने की कोशिश की। पीएम नरेंद्र मोदी ने लता मंगेशकर को याद कर महाराष्ट्र की जनता को बड़ा संदेश देने का प्रयास किया। पीएम नरेंद्र मोदी महाराष्ट्र में पार्टी की स्थिति को मजबूत बनाने का प्रयास करते दिखे। दरअसल, महा विकास अघाड़ी सरकार के विघटन के बाद से महाराष्ट्र की सत्ता में भाजपा की वापसी तो हुई है। लेकिन, उद्धव ठाकरे और शरद पवार जैसे नेताओं के विरोध के कारण पार्टी को कुछ नुकसान होने की आशंका दिख रही है। ऐसे में हिंदुत्व के संकेत अयोध्या से महाराष्ट्र को देने की कोशिश की गई। दरभंगा- अयोध्या- आनंद विहार अमृत भारत एक्सप्रेस ट्रेन के जरिए अयोध्या के मंच से बिहार का जिक्र किया। पीएम मोदी ने कहा कि बिहार के लोग अब आसानी से अयोध्या धाम आ सकते हैं। उन्हें बेहतर सुविधाओं वाली ट्रेन की सुविधा दी गई है। इससे लोगों को काफी फायदा मिलेगा। इसके अलावा

लोगों को काफी फायदा मिल जाएगा। इसके अलावा उन्होंने बोधगया के बौद्ध धर्मावलंबियों के आगमन का भी जिक्र किया। बिहार में राजद और जदयू के गठबंधन के बाद भाजपा की परेशानी बढ़ने की बात कही जा रही है। ऐसे में पीएम नरेंद्र मोदी की इस चर्चा को अलग प्रकार की राजनीति से देखा जा रहा है।

पीएम नरेंद्र मोदी देश के लोगों को प्रभु रामलला के आगमन के मौके पर पीएम नरेंद्र मोदी ने श्रीराम ज्योति जलाने का आह्वान किया। इस प्रकार के आह्वान के जरिए उन्होंने दीपोत्सव का एक संदेश दिया। उन्होंने कहा कि भगवान राम के 550 वर्षों के बाद आगमन के मौके पर देश के लोग उत्सव मनाएं। यह एक खुशियों का मौका है। यह हमारी विरासत का महापर्व है। इस प्रकार के संदेश के जरिए पीएम मोदी ने देश को एक बार फिर एक सूत्र में बांधने की कोशिश की है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्रभु रामलला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह को लेकर लोगों से बड़ा अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि 550 सालों तक हमने इंतजार किया। कुछ दिनों तक और इंतजार कर लें। 22 जनवरी को देश के सभी लोग प्रभु राम के धाम में पहुंचने की कोशिश कर रहे हैं। यह संभव नहीं है। कुछ दिन बाद आप भगवान श्रीराम का दर्शन करने अयोध्या आ सकते हैं। उनके भव्य मंदिर का दर्शन कर सकते हैं। 22 जनवरी को यहां आकर आप परेशान न हों। पीएम मोदी ने कहा कि पिछले तीन- चार सालों से अयोध्या के लोग राम मंदिर के काम में जुटे हुए हैं। उन्हें कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए। पीएम मोदी ने कहा कि अयोध्या रामलला के मंदिर के उद्घाटन समारोह को लेकर कुछ लोगों को निमंत्रण दिया गया है। उनको किसी प्रकार की सुविधा न हो, इसका भी ध्यान हमें रखना है। अयोध्या के लोगों को संबोधित करते हुए पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि यहां पर बड़ी संख्या में लोग आने वाले हैं। यहां आने वाले लोगों की संख्या में लगातार वृद्धि होगी। इसके लिए अयोध्यावासियों को एक संकल्प लेना है। वह संकल्प है अयोध्या नगर को देश का सबसे स्वच्छ शहर बनाने का संकल्प। यह अयोध्यावासियों की जिम्मेदारी है, यह हमें मिलकर हर कदम उठाना है। पीएम मोदी ने देश के सभी तीर्थ क्षेत्र और मंदिरों से आग्रह किया रामलला के आगमन के एक सप्ताह पहले यानी 14 जनवरी से विशेष स्वच्छता अभियान चलाया जाए। अपनी तीर्थ नगरी को साफ- सुथरा करें। उन्होंने कहा कि यह अभियान पूरे देश में चलना चाहिए। प्रभु रामलला का स्वागत अस्वच्छता वाले माहौल में नहीं होना चाहिए।

निषादराज को रिझाया

पीएम नरेंद्र मोदी ने अयोध्या दौरे के दौरान अचानक अपने कार्यक्रम में बदलाव किया। वे उज्ज्वला योजना की लाभार्थी मीरा के घर पहुंचे। वहां उन्होंने न सिर्फ निषादराज को प्रभु रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का न्यौता दिया, बल्कि योजनाओं की जानकारी लेने के बाद वहां चाय भी पिया। निषादराज को प्रभु श्रीराम का मित्र कहा जाता है। ऐसे में निषादराज को आमंत्रण देकर पीएम मोदी ने एक बड़ी राजनीति की शुरूआत कर दी है। भगवान राम के लंका विजय से लौटने के बाद राज्याभिषेक कार्यक्रम में भी निषादराज को आमंत्रण भेजा गया था। कहते हैं कि भगवान राम ने इसके लिए भाई भरत को विशेष निर्देश दिए थे। उन्हें अपना अभिन्न मित्र बताया था। ऐसे में अयोध्या राम मंदिर के उद्घाटन समारोह और रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का न्यौता लेकर निषादराज के यहां स्वयं प्रधानमंत्री पहुंचे। इसे राजनीतिक रूप से भी काफी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। पीएम मोदी ने देश में विकास योजनाओं को लेकर बड़ा दावा किया। उन्होंने कहा कि महिलाओं को धुएं से आजादी दिलाने में हमारी सरकार ने बड़ी भूमिका निभाई है। आजादी के बाद

से 2014 तक केवल 14 करोड़ लोगों को गैस कनेक्शन दिया गया था। पिछले एक दशक में 18 करोड़ गैस कनेक्शन दिए गए हैं। इसमें से 10 करोड़ कनेक्शन उज्ज्वला योजना के तहत दिए गए हैं। पीएम नरेंद्र मोदी ने अयोध्या में उज्ज्वला योजना के 10 करोड़वें कनेक्शनधारी मीरा मांझी के घर पहुंचकर उनसे मुलाकात की। अपने संबोधन के दौरान यह जिक्र किया। कोरोना कल में मुफ्त अनाज स्कीम ने इस पर को भाजपा से जोड़ा। अब उन्हें सम्मान देकर पार्टी अपने साथ पूरी तरह जोड़ने की तैयारी में है। एक तरफ अखिलेश यादव जहां दलित, पिछड़ा और अल्पसंख्यक समाज को जोड़कर पीडीए पॉलिटिक्स को यूपी की राजनीति में लाने का प्रयास कर रहे हैं। वहीं, भाजपा ने दलित वर्ग को श्रीराम से जोड़कर अलग ही माहौल बनाने का प्रयास किया है।

भव्य एवं दिव्य रही अयोध्या

पीएम ने एयरपोर्ट पर उतरने के बाद हाईवे होते हुए धर्मपथ के रास्ते से अयोध्या में प्रवेश किया। उनके स्वागत के अद्भुत इंतजाम थे। 51 जगहों पर पीएम के अभिनंदन के लिए मंच सजाया गया था। 12 जगहों पर संत-धमार्चार्य पुष्पवर्षा कर रहे थे। 23 संस्कृत विद्यालयों के 1895 वैदिक छात्र जगह-जगह वेदमंत्र और शंख ध्वनि से स्वागत कर रहे थे। धर्मपथ पर उनकी गाड़ियों का काफिला जैसे पहुंचा, वैदिक मंत्रोच्चार व शंखनाद ने यह बता दिया कि पीएम अयोध्या में प्रवेश कर गए हैं। लता मंगेशकर चैक पर पहुंचे तो फिर वैदिक मंत्रोच्चार हुआ, पुष्पवर्षा हुई। इससे आगे बढ़ने पर साधु-संत भगवान राम, लक्ष्मण व सीता के स्वरूपों के साथ उनके अभिनंदन को तैयार थे। पीएम ने न सिर्फ संतों को प्रणाम किया बल्कि भगवान के स्वरूपों के सामने भी सिर झुकाया। यहां से आगे बढ़ने पर तिवारी मंदिर के पास संतों के समूह ने पीएम पर पुष्पवर्षा की, अनवरत शंखनाद गूंजता रहा। पीएम के स्वागत में रामपथ के दोनों तरफ लोग मौजूद थे। हर कोई पीएम को अपने बीच पाकर खुश था। पीएम मोदी ने हाथ हिलाकर सभी का अभिवादन किया। इसी तरह का दृश्य तुलसी उद्यान, छोटी देवकाली, हनुमानगढ़ी चैराहे व बिड़ला धर्मशाला के पास भी रहा। टेढ़ीबाजार से पीएम अयोध्या रेलवे स्टेशन के लिए मुड़े तो यहां फूलों से बनी गणपति की छवि काफी आकर्षित कर रही थी। रामजन्मभूमि पथ को भी भव्यता पूर्वक सजाया गया था। पीएम ने राम जन्मभूमि पथ की ओर देखकर सिर भी नवाया। पीएम मोदी के स्वागत में अयोध्या का श्रृंगार काफी अद्भुत था। यह श्रृंगार जिसने भी देखा, मोहित उठा। जगह-जगह बने तोरणद्वार, रामायण के सातों कांड पर आधारित होर्डिंग्स आकर्षण बढ़ा रहे थे।

लोककला की प्रस्तुतियों के रंगों से सजी अयोध्या

पीएम मोदी के रोड शो के दौरान 1400 से कलाकारों ने प्रस्तुतियां दी। लता चैक पर एक विशाल मंच बनाया गया था। यहां पीएम मोदी के काफिले पर फ्लावर कैनन से पुष्प वर्षा की गई। हवाई अड्डे के गेट नंबर तीन पर व हवाई अड्डे और साकेत पेट्रोल पंप के बीच पांच मंचों का संचालन किया गया। शंख वादन और डमरू वादन ने सभी को झंकृत कर दिया। मथुरा के खजान सिंह और महिपाल ने अपनी टीम के साथ बम रसिया के प्रदर्शन के माध्यम से छाप छोड़ी। इसके अतिरिक्त, मथुरा के लोकप्रिय मयूर नृत्य ने भी कई मंचों की शोभा बढ़ाई। अवधी, वनटांगिया और फरुवाही समेत विभिन्न संस्कृतियों की प्रस्तुतियों के रंगों से सजी अयोध्या में पलवल (हरियाणा) के बीन-बांसुरी डांस और राजस्थान की चकरी डांस ने लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मिथिला से रामनगरी को रेलमार्ग से जोड़ने की संतों की बहुप्रतीक्षित इच्छा को पूरा किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, एक समय था, जब यहीं अयोध्या में रामलला टेंट में विराजमान थे। आज पक्का घर सिर्फ रामलला को ही नहीं बल्कि पक्का घर देश के 4 करोड़ गरीबों को भी मिला है। आज का भारत अपने तीर्थों को भी संवार रहा है, वहीं डिजिटल टेक्नोलॉजी की दुनिया में भी छाया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, दुनिया में कोई भी देश हो, अगर उसे विकास की नई ऊंचाई पर पहुंचना है, तो उसे अपनी विरासत को संभालना ही होगा। हमारी विरासत हमें प्रेरणा देती है, हमें सही मार्ग दिखाती है। इसलिए आज का भारत, पुरातन और नूतन दोनों को आत्मसात करते हुए आगे बढ़ रहे हैं।

स्वयं श्रीराम ने कहा, जन्मभूमि से सुंदर लंका नहीं : साध्वी ऋतंभरा

अयोध्या के कण-कण में प्रभु राम का वास है. अयोध्या वो है जहां मयार्दा पुरुषोत्तम प्रभु राम ने जन्म लिया. आज उसी अयोध्या की हर तरफ चर्चा है. वजह साफ है कि 22 जनवरी को प्रभु राम अपने भव्य महल में विराजमान होंगे. कार्यक्रम में कई खास मेहमान भी शामिल होंगे. उन्हीं में से एक है मंदिर के लिए अपना सबकुछ न्योछावर करने, मानवतावादी सामाजिक प्रकल्पों की प्रेरणा स्रोत, पांच दशकों तक चले अयोध्या के राम मंदिर आंदोलन से जुड़ी फायर ब्रांड वक्ता, धर्मगुरु साध्वी ऋतंभरा, जिनके भाषण 90 के दशक में काफी लोकप्रिय हुए। वैसे भी साध्वी ऋतंश्रारा का आरोपों से गहरा नाता रहा है। 1995 में ऋतंभरा ने तब सुर्खियां बटोरीं थी जब उन्हें ईसाइयों के खिलाफ कथित तौर पर भड़काऊ भाषण देने के आरोप में इंदौर में गिरफ्तार किया गया था। उस समय कांग्रेस के दिग्विजय सिंह राज्य के मुख्यमंत्री थे। मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय ने उन्हें 11 दिनों तक जेल में रखने के बाद रिहा कर दिया गया था। ऐसे महान सख्यिसत ने सीनियर रिपोर्टर सुरेश गांधी की एक्सक्लूसिव बातचीत में सुनाई राम मंदिर की संघर्ष गाथा। प्रस्तुत है कुछ अंश:-

सुरेश गांधी

साध्वी ऋतंभरा वह नाम है जिसने अयोध्या के राममंदिर आंदोलन को अपने भाषणों के जरिए नई धार दी। जिस स्थान पर साध्वी भाषण देती थीं वहां सुनने को हजारों की भीड़ जुटती। मुख से निकला हर शब्द, रामभक्तों में ऊर्जा का संचार करता। साध्वी ऋतंभरा का अब एक और स्वरूप दीदी मां का है। अब वह वात्सल्यमी हैं। इसके लिए वृंदावन में वात्सल्य ग्राम समेत कई इलाकों में समाजसेवा के प्रकल्प चलाए जा रहे हैं। पुस्तकें पढ़ने का शौक रखने वाली दीदी मां के वृंदावन स्थित वात्सल्य ग्राम में अब देश का पहला बालिका सैनिक स्कूल भी खुला है। राष्ट्रहित में अपना योगदान देती है। खास यह है कि एक दिन में 22-22 सभाएं कीं। भाषण देते-देते गले में खून का थक्का जम गया था। तब डॉ. हर्षवर्धन ने कहा कि आपको गले का कैंसर हो जाएगा। लेकिन, मैंने कहा मैं रामकाज में हूं, मुझे कुछ नहीं होगा। लेकिन उनका यह संघर्ष कामयाब हो रहा है। उनका मानना है कि ये बात निश्चित हो गई कि सत्य की जीत हमेशा होती है लेकिन ये बात मैं जनता को कहना चाहती हूं कि सत्यमेव जयते भर सच नहीं है। सत्य को अपने आपको स्थापित करने के लिए भी संघर्ष करना पड़ता है। उसके बिना तो लोग आपको कुचलकर निकल जाएंगे।

एक सवाल के जवाब में साध्वी ऋतंभरा ने बताया कि लक्ष्मणजी सोने की लंका देख श्रीराम से कहा, भैया देखो लंका कितनी सुंदर है, जवाब में राम ने कहा कि मेरी जन्मभूमि अयोध्या से सुंदर नहीं हो सकती। श्रीराम के यह शब्द उन्हें बाल्यावस्था से ही कचोट रही थी, अपनी जन्मभूमि से इतना लगाव रखने वाले राम कैसे अपनी जन्मभूमि से विमुख हो सकते है। यही विमुखता रामजन्मभूमि आंदोलन उनके लिए प्रेरणास्रोत बनी और स्वामी परमानंदजी महराज के आशीर्वाद एवं सरजू मईया की संकल्प के साथ आंदोलन में कूदी, तो बिना किसी परवाह के हिन्दूओं को देश-विदेश में जागृत करती रही। यह अलग बात है उस दौर में अपने को हिन्दू कहने वालों को देशद्रोही समझा जाता था। साम्प्रदायिकता फैलाने की आड़ में उन्हें प्रताड़ित किया जाता रहा। माहौल पूरी तरह प्रतिकूल था। खासतौर से मेरे साथ आतंकियों जैसा बर्ताव होता था। मेरे खिलाफ झूठे मुकदमें दर्ज किए जाते थे। मेरे चरित्र पर किचड़ उछाला जाता था। तबकी सरकारें मेरे भाषण नहीं होने देते थे। हर एअरपोर्टो पर रोका जाता था। हम सबके पासपोर्ट जब्त कर लिए गए। कहीं नहीं जा सकते थे। छतरपुर आश्रम पर हमला होता था। मेरे ऊपर इतनी मुकदमें लग गए कि लोग अपने घरों में रोकने से डरते थे। मेरे किसी साथी को प्रताड़ना न झेलने पड़े मैं स्वयं स्टेशनों पर रात बिताती थी। मेरे नाम के आगे गंदे-गंदे टाइटल्स लगाए जाते थे। अंधेरा होते ही मैं अपनी जान बचाने के लिए आरा मशीन वाले जगहों पर उसके बुरादों के बीच रात बिताती थी। सुबह अगले पड़ाव के लिए निकलती थी। क्योंकि श्रीराम हमारे प्रेरणा और ऊर्जा थे। राम आंदोलन को लेकर बहुत अपमान झेला है।

उन्होंने कहा कि राममंदिर आंदोलन हमारी जिंदगी का सबसे बड़ा संघर्ष था। इसके लिए काफी कीमत चुकाई, अपमान झेले। जो प्रताड़ना दी गई, वह कभी भुलाई नहीं जा सकती। इसके बावजूद मुझे राम मंदिर बनने का पूरा विश्वास था, जो आज पूरा होते देख रही हूं। उन्होंने कहा, कारसेवकों के बलिदान की वजह से आज रामलला स्थापित हो पा रहे हैं। कर्नाटक की एक घटना का जिक्र करते हुए उन्होंने बताया कि वह वहां एक हिन्दू जागरण समारोह में गयी थी। पुलिस ने पहले उन्हें जाने से रोका और जब मैं नहीं मानी तो मेरी कार उस बाबरी समर्थक गांव की ओर मोड दिया जहां उनकी कार पर हजारो पत्थर बरसाएं गए। कार पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गयी। सीसे उनकी आंखों में घुस गए, सिर फट गए, गरदन की हड्डी टूट गयी। हमारे ड्राइवर ने अपने जान की परवाह किए बगैर अचेतावस्था में जब हास्पिटल पहुंचाना चाहा तो पुलिस प्रशासन वहां भी रोक दिया। श्रीराम की कृपा से किसी तरह वहां से बचकर मैं लौटी तो

मेरे संत समाज ने कहा, यह सब मत कर बेटी, नहीं जागृत होगा हिन्दू समाज, पर मैं स्वस्थ होते ही अपने मिशन पर निकल गयी। उन्होंने कहा कि राजनीतिक पार्टियां कैंची की तरह काम कर रही हैं। पूरे सामाजिक परिधान को काटने का प्रयास कर रही है। अगर हम आपस में बंट गए तो राम शबरी के बेर कैसे खाएंगे। पिछड़े और स्वर्ण के नाते को तोड़ने की साजिश करने वालों को धूल में मिटाएंगे। हम राष्ट्र भाव को जागृत करेंगे। कोई कहीं भी हो राम सबके और सब में राम हैं। साध्वी ऋतंभरा ने सनातन संस्कृति पर टिप्पणी करने वाले राजनेताओं पर बड़ा हमला बोलते हुए कहा कि प्राचीन काल में रावण और कंस जैसे लोग जब सनातन धर्म का बाल बांका नहीं कर सके तो फिर इन राजनेताओं की टिप्पणियों का क्या प्रभाव होगा. सूर्य के समान हमेशा चमकने वाले सनातन धर्म पर टिप्पणी करने वाले ऐसे राजनेता बहुत बड़ा पाप कर रहे हैं. इन राजनेताओं को यह नहीं पता कि एक सनातन धर्म ही ऐसा धर्म है जो एक चींटी से लेकर ब्रह्मा तक का एक ही चेतना में दर्शन करता है.

प्रताड़ना भी कम नहीं

उन्होंने बताया कि राम मंदिर के लिए हमने बहुत बड़ा बहुत पीड़ा सही है, जिसे शब्दों में बया नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि 1990 के आसपास जब रामजन्म भूमि आंदोलन परवान पर था, उस समय जब कहा गया कि राम जन्मभूमि पर परिंदा भी पर नहीं मार सकता, लेकिन गांव-गांव से लोग पहुंचे थे, तब सत्ताधीशों ने सत्ता का दुरुपयोग कर रामभक्तों पर खूब जोर-जुल्म किया। मध्य प्रदेश की तत्कालीन दिग्विजय सरकार ने झूठा आरोप लगाकर जेल भेजा। उस दिन पुलिस ने ऐसा तांडव मचाया कि डर के कारण उस घर की महिला का गर्भपात हो गया। इंदौर में सेंट्रल जेल थी, लेकिन पुलिस मुझे वहां नहीं ले गई। जंगल-जंगल सारा दिन घुमाते हुए मुझे ग्वालियर जेल ले गए। उस वक्त भाषण बहुत देने होते थे। मुझे अस्थमा था। अस्थमा रोगी को इनहेलर तुरंत चाहिए होता है, लेकिन उन लोगों ने न तो इनहेलर लेने दिया और न ही दवाएं। ग्वालियर की जेल में जिस बैरक में रखा, उसमें 70-72 लोग थे। बहुत झींगुर थे। शौचालय में घुटनों तक मलमूत्र भरा था। दुर्गंध के बीच सांस लेना भी मुश्किल हो रहा था। बड़ा सा बल्ब मेरे सिर के ऊपर लगा दिया। जिससे उसकी तेज रोशनी में सो न पाऊं। ये मेरे खिलाफ षड्यंत्र था दिग्विजय सिंह की सरकार का। चार दिन मुझे अवैध रूप से बैरक में रखा। जबकि बड़े से बड़े अपराधी को 24 घंटे में कोर्ट के सामने ले जाया जाता है। मेरे साथ ऐसा व्यवहार कर रहे थे, जैसे मैं पाकिस्तान से आई आतंकवादी हूं। इसी तरह नागपुर में भाषण के बाद ही गिरफ्तार करने की योजना बनी। मेरे कार्यकताओं ने ये बताया तो मैं स्टेज से कूद गई। मेरे साथ गुरु बहन साध्वी साक्षी थीं। हम पीछे दौड़ते गलियों में गए। एक लकड़ी के कारखाने में बुरादे के बोरे में छिपकर खुद को बचाया। भेष बदलकर इतनी बार भागना पड़ा कि उसकी गिनती नहीं। ललितपुर में सभा के दौरान जिस घर में, मैं रुकी थी, पुलिस ने वह घेर लिया। मेरे लंबे बाल थे, सारे बाल काटकर छोटे करने पड़े। ललितपुर में मैंने साड़ी पहनी और एक बच्चा गोद में लिया, तब पुलिस से बचकर निकली। इंदौर में एक आधुनिक लड़की बनकर साइकिल चलाते पुलिस के सामने से निकलना पड़ा, ताकि वह पहचान न सके।

संतो का तप व्यर्थ नहीं जाता

एक दुसरे सवाल के जवाब में ऋतंभरा ने बताया कि साधुओं का विलास आत्मविलास होता है। उनका तप कभी व्यर्थ नहीं जाता। उनका सबसे बड़ा धर्म राष्ट्रधर्म होता है। लेकिन कुछ राजनीतिक पार्टियां व उनके नेता सत्ता के लिए न सिर्फ ईश्वर को जातियों मे बांट देना चाहते है, बल्कि राष्ट्र व सनातन धर्म के खिलाफ भी अनर्गल टिप्पणी करने से बाज नहीं आते। साध्वी ने कहा कि भगवान को काल्पनिक कहने वाले अब कहां हैं। रामलला अब टाट में नहीं, भव्य मंदिर में ठाठ से विराजने वाले हैं और इस बात की प्रसन्नता है। 500 साल के संघर्ष का फल है राम मंदिर। भारत के रोम-रोम में राम विराजमान है। मुगलों द्वारा भारत की आस्था पर बहुत आक्रमण किए गए। उन्होंने कहा कि संघर्ष के वक्त प्रभु राम का नाम लेने वालों पर झूठे मुकदमे लगाए आते थे। जब नारा दिया जाता था कि रामलला हम आएंगे, मंदिर वहीं बनाएंगे तो ऐसा कहने वालों पर पुलिस से डंडे लगवाए जाते थे। गोलियां भी चलवाई गईं। वह दुर्भाग्यपूर्ण और कभी न भूला जाने वाला क्षण था, जब दरिंदों ने राम भक्तों के हृदय में गोलियां उतारीं थीं। कई माताओं ने रामजन्म भूमि आंदोलन में अपने लाल को खोया है।

राम मंदिर के लिए बधाई के पात्र है मोदी

उन्होंने कहा कि विश्व हिन्दू परिषद और मेरा जन्म 1964 में साथ-साथ हुआ। मुझे लगता है कि भगवान श्रीराम ने मुझे जन्म केवल जन्मभूमि के लिए लड़ने के लिए ही दिया है। राम मंदिर के लिए कांग्रेस और राजीव गांधी को श्रेय मिलना चाहिए? सवाल पर साध्वी ऋतंभरा ने कहा, ने कहा कि हर किसी को इसका श्रेय मिलना चाहिए. हर किसी की अपनी भूमिका रही है. जो इसके पक्षधर थे उन्हें भी, जो इसके विरोधी थे उन्हें भी. अगर किसी को श्रेय नहीं भी देंगे तो भगवान राम तो जानते ही हैं, किसके इरादे क्या थे और किसके कर्म क्या थे. वो देंगे पुरस्कार. उन्होंने यह भी कहा कि राम पर कोई भी दावा नहीं किया जा सकता. लेकिन नरेंद्र मोदी इसके असल हकदार है। जो आज हो रहा है ये तो कोई भी कर सकता था. लेकिन सबने कन्नी काटी। अयोध्या लगातार नेताओं की ओर से हीनता का सामना कर रहा था. किसी प्रधानमंत्री ने भी अयोध्या जाना स्वीकार नहीं किया. वैसे भी जिंदगी हमेशा दोराहे पर खड़ा करती है. जो रास्ता आप चुन लेते हो, वही आपका भाग्य बन जाता है. प्रधानमंत्री ने अयोध्या जाकर अपना भाग्य बना लिया. अब प्राण प्रतिष्ठा में भागीदारी करके निश्चित तौर पर भारतीयों के मन को छु लिया है. मोदी ने भारत के जन के मन की भावना को समझा और वे भूमिपूजन करने गए. वहां दंडवत प्रणाम भी किया. वो आनंद विभोर हो गया. उन्होंने अयोध्या को धन्य नहीं किया बल्कि स्वतः को धन्य किया.

खुद नहीं बनी विधायक-सांसद

साध्वी ऋतंभरा का जन्म लुधियाना के दोराहा में हुआ था। पहले उनका नाम निशा था। हरिद्वार के संत स्वामी परमानंद गिरी की शिष्या बनने के बाद उन्हें ऋतंभरा का नाम मिला। राम मंदिर आंदोलन में शामिल होने से साध्वी ऋतंभरा गंगा माता भारत माता यात्रा निकाल चुकी थीं। वह आरएसएस की महिला संगठन राष्ट्रीय सेविका समिति से जुड़ गईं। 1980 के दशक में उन्होंने विश्व हिंदू परिषद के कार्यक्रमों में शिरकत करना शुरू किया। राम मंदिर आंदोलन एक ऐसा पड़ाव था, जहां से वह हिंदू जागृति अभियान का कमान संभालने लगी। 1992 में बाबरी विध्वंस के बाद ऋतंभरा को भी लिब्राहन आयोग ने 68 आरोपियों की लिस्ट में शामिल किया। आयोग ने कहा कि साध्वी ने तीखे भाषणों के जरिये मस्जिद विध्वंस के माहौल बनाया था। हालांकि इसके बाद से वह अनाथ बच्चों के लिए बनाए गए वात्सल्य ग्राम और कथाओं की ओर लौट गईं। 2020 में लखनऊ की विशेष अदालत ने सभी आरोपियों को बरी कर दिया। साध्वी ऋतंभरा कभी सक्रिय राजनीति में नहीं आईं और अनाथ बच्चों की सेवा में चली गई। 60 वर्षीय ऋतंभरा के ओजस्वी भाषण के कई किस्से हैं। 90 के दशक में राम मंदिर आंदोलन के दौरान साध्वी ऋतंभरा के भाषण वाला कैसेट गांव-गली तक गूंजता रहा। कई चुनावों में उन्होंने बीजेपी नेताओं के लिए प्रचार भी किया। अपने भाषण में एक ओर जहां वह राम मंदिर, राष्ट्रीयता और हिंदुत्व के समर्थन में तर्क रखती थीं, वहीं हम दो हमारे दो, बंग्लादेशी को आने दो जैसे नारों से विरोधियों पर सीधा हमला भी करती थीं। उनकी भाषण के कायल उनके राजनीतिक विरोधी भी थे। 1995 की घटना है, बिहार में लालू यादव और जनता दल का जादू लोगों के सिर चढ़कर

बोल रहा था। विधानसभा चुनाव के प्रचार के दौरान साध्वी ऋतंभरा बीजेपी कैंडिडेट सुशील कुमार मोदी के पक्ष में जनसभा करने पटना सेंट्रल पहुंची। आयोजकों को चिंता थी कि जनता दल समर्थक सभा में हंगामा कर सकते हैं। सभा में विरोधियों की मौजूदगी से आयोजक चिंतित थे। साध्वी ऋतंभरा का आगमन हुआ तो विरोधियों ने व्यक्तिगत टीका-टिप्पणी शुरू कर दी। साध्वी ने अपने चिर परिचित अंदाज में बोलना शुरू किया। तुष्टिकरण के लिए कांग्रेस और जनता दल को खूब सुनाया। मगर यह ऋतंभरा की वाणी का जादू था कि सभा को व्यवधान करने आए विरोधी भी शांत होकर उनका भाषण सुनते रहे। सभा के समापन से पहले साध्वी ने जन समुदाय को ललकारते हुए कहा, अगर तुम्हारे राव (नरसिंह राव) के हाथ हैं या राम के हाथ हैं? अगर राम के हाथ है तो दोनों हाथ श्रीराम के लिए उठने चाहिए। इसके बाद वहां मौजूद जनसमुदाय ने जय श्री राम का जयघोष किया। हाथ उठाकर जयघोष करने वालों में विरोधी भी शामिल थे। सुशील कुमार मोदी दूसरी बार विधानसभा चुनाव बड़े अंतर से जीते।

जब झूठे आरोपों में जेल गयी

1995 में साध्वी ऋतंभरा अपने फायर ब्रांड भाषणों के लिए चर्चित हो रही थी। उस दौर में ही इंदौर की एक जनसभा में उन्होंने धर्म परिवर्तन कराने वाली ईसाई मिशिनरी पर विचार रखे। तब तत्कालीन सीएम दिग्विजय सिंह के आदेश पर पुलिस ने साध्वी को भड़काऊ भाषण देने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया। वह 11 दिनों तक जेल में रहीं। हाई कोर्ट से जमानत के बाद वह रिहा हुईं। 2022 में उनका नाम फिर चर्चा में आया, जब अमेरिका में न्यू जर्सी के चर्च ने उनकी यात्रा का विरोध किया। राम मंदिर आंदोलन के बाद ऋतंभरा ने वृंदावन में अनाथ बच्चों और बुजुर्गों के वात्सल्य ग्राम की स्थापना की। तीन दशक तक अनाथ बच्चों और बुजुर्गों को एक साथ लाकर परिवार के संकल्पना के साथ सेवा में जुटी रहीं। इस दौरान उन्होंने राजनीति बयानों और कार्यक्रम से दूरी बना ली। वात्सल्य ग्राम के बच्चे उन्हें दीदी मां के नाम से पुकारते हैं। वह रामकथा और श्रीमदभगवत को लेकर भी प्रवचन करती हैं। आज भी उनके लाखों अध्यात्मित फॉलोअर हैं।

वात्सल्य

ऋतंभरा बेटियों के लिए निरंतर सक्रिय रहती हैं। वात्सल्य ग्राम में उनको दीदी मां का प्यार देती हैं। उनका मानना है कि स्त्री अपने आप में सबला है। कई वर्षों से जिस तरह से देश में हालात रहे, स्त्री अपने स्वस्थ रूप को भूल गई। इसके लिए कई वर्षों से काम करती रही हूं। उनका कहना है कि बेटियां हर जगह अपनी भूमिका निभा रही हैं। अतीत के भारत में भी हमेशा रही। लक्ष्मीबाई ने घोड़े पर सवार होकर अपने अपनी दत्तक संतान को पीठ से बांध युद्ध किया। रानी लक्ष्मीबाई की तेजस्विता अब भी बनी रहे, इसके लिए उनका प्रयास जारी है।

जन-जन की आवाज बनी ऋतंभरा

उन्होंने कहा कि आज हम सिद्धि के द्वार पर खड़े हैं। श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य मंदिर में श्रीराम आ रहे हैं। विचार करो 500 साल तक लगातार अयोध्या में श्रीराम जन्म भूमि ने अपने पर पराभवी युग के प्रतीक को झेला। 500 साल मेरे पुरखों ने सिर पर पगड़ी नहीं बांधी और पैरों में जूती नहीं पहनी। महिलाओं ने चोटी नहीं बांधी और बहुत से संतों ने अन्न का त्याग किया। बहुत सारे कारसेवकों ने प्राणों का उत्सर्ग किया। उन्होंने कहा कि राम मंदिर बनेगा, धूमधाम से बनेगा, इस भाव का बीज जन-जन के मन में बोने का मंत्र अशोक सिंघल जी ने दिया था। पुत्रियों, सुनो उस वक्त तुम्हारा जन्म नहीं हुआ था, लेकिन तुम्हारे जैसी बहुत सारी पुत्रियां अयोध्या पहुंची थीं। वे कहती थीं- सौंगध राम की खाते हैं, हम मंदिर वहीं बनाएंगे... यह वह संकल्प था, जो विकल्प रहित था। इंदौर की धरती तो मेरी संघर्ष की धरती थी। उन्होंने कहा कि भगवान राम मित्र के लिए सर्वस्व का त्याग कर सकते हैं। उन्होंने स्वर्णिम लंका को सागर में पिघलने के लिए विवश किया था। क्या हम अन्न व वस्तु देकर अपना बना सकते हैं। वह तो भिखारियों को भी मिल जाता है। जिस राम जन्म भूमि की बात हम कर रहे वह कितने संघर्षों के साथ मिली है। जाने कितनी प्रतिकूलता थी, लेकिन मरने से डरने वाले को जीने का अधिकार नहीं है। जो समाज भय मुक्त और लालच पर विजय प्राप्त कर लेता है, वह समाज हर उपलब्धि प्राप्त करने के योग्य बन जाता है।

जनता सब समझती है

चुनावी दौर में राहुल गांधी के मंदिर और सनातन परंपराओं को स्वीकारने वाले विषयों पर भी तंज कसते हुए साध्वी ऋतंभरा ने कहा कि यह ड्रामा जनता पूरी तरह जानती है. जनता जनार्दन बहुत समझदार है और ऐसे विचारों को काफी बेहतर ढंग से समझती है. राजनेताओं को भी समझना चाहिए कि जो आपके हृदय में है वह बाहर भी आ जाता है और सनातन संस्कृति की गहराई को कभी नापा नहीं जा सकता. उन्होंने कहा था कि राम रहेंगे टाट में, भक्त रहेंगे ठाठ से, ऐसा नहीं होना चाहिए। नरेंद्र मोदी और योगी आदित्यनाथ की सरकार में राम मंदिर नहीं बनेगा तो फिर कब बनेगा?

रवि योग में मनेगी मकर संक्रांति

इस बार मकर संक्रांति का पर्व 15 जनवरी को मनाया जाएगा. इस दिन दान का विशेष महत्व है. जब सूर्य मकर राशि में गोचर करते हैं, तब यह पर्व मनाया जाता है. या यूं कहे इस दिन से ही सूर्य का मकर राशि में प्रवेश होता है, जिसे उत्तरायण कहा जाता है। उत्तरायण को शुभ माना जाता है, क्योंकि इस दिन से दिन बड़े और रातें छोटी होने लगती हैं, जिसकी वजह वो उनके ताप में वृद्दि होती है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार सूर्यदेव शनिदेव के पिता हैं। मकर संक्रांति के दिन सूर्य देव अपने पुत्र शनि के घर जाते हैं जहां के एक महीने तक रहते हैं। साथ ही खरमास का महीना भी खत्म होता है। शुभ और मांगलिक कार्य प्रारंभ होते हैं। इस दिन विशेष रूप से सूर्य देव की पूजा की जाती है. इस दिन विशेष रूप से तिल और गुड़ का सेवन किया जाता है. इसके साथ ही इस दिन काफी शुभ योग बन रहे हैं. जिसमें सबसे बड़ा योग है रवि योग. इस दिन सुबह 07.15 से लेकर सुबह 08.07 बजे तक रवि योग बन रहा है. इस योग में स्नान दान का विशेष महत्व है. साथ ही जो भी व्यक्ति इस योग में भगवान सूर्य की पूजा करेगा, उसके मान सम्मान में वृद्धि होगी. इस दिन सूर्यदेव से संबंधित सामग्री जैसे गुड़, तिल, तांबा, वस्त्र आदि का दान करना शुभ माना जाता है. दरअसल इस बार सूर्य देव 15 जनवरी को प्रातः 02:54 बजे धनु राशि से मकर में जाएंगे। इस वजह से त्योहार 15 जनवरी को मनाया जाएगा। संक्रान्ति का महा पुण्यकाल 15 जनवरी को 07:17 से 09:04 बजे तक है। खास यह है कि इस दान करने से पितृ प्रसन्न होते हैं और जीवन में सुख समृद्धि बढ़ती है। धार्मिक मान्यताओं के मुताबिक मकर संक्रांति के दिन गंगा स्नान करने से सात जन्मों के पाप धुल जाते हैं। इस धार्मिक आस्था को लेकर कथा भी प्रचलित है। इसी मान्यता को आधार बनाकर लोग मकर संक्रांति के दिन गंगा नदी या गंगा महासागर में स्नान करके दान पुण्य करते हैं

सुरेश गांधी

मकर संक्रांति पर्व महापर्व है। यह दिन ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश, आद्यशक्ति और सूर्य की आराधना एवं उपासना का है, जो तन-मन-आत्मा को शक्ति प्रदान करता है। इस दिन प्रयाग में पावन त्रिवेणी तट सहित हरिद्वार, नासिक, त्रयंबकेश्वर, गंगा सागर में लाखों-करोड़ों आस्थावान डूबकी लगाते हैं। इसके साथ ही शुरू हो जाता है धैर्य, अहिंसा व भक्ति का प्रतीक कल्पवास। पौष पूर्णिमा से माघी पूर्णिमा एवं मकर संक्रांति से कुंभ संक्रांति तक लाखों श्रद्धालु प्रभु दर्शन का भाव लिए मोक्ष की आस में कल्पवास करते है। ऐसा माना जाता है कि इसी दिन से ऋतु परिवर्तन भी होता है और सर्दियों से गर्मी की ओर मौसम परिवर्तन होता है। मकर संक्रांति के दिन से बसंत ऋतु शुरू होने लगती है। पौराणिक कथाओं के अनुसार इस मकर संक्रांति के दिन भगवान शिव ने भगवान विष्णु को आत्मज्ञान का दान दिया था। महाभारत की कथा के अनुसार भीष्म पितामह ने मकर संक्रांति के दिन ही अपनी देह का त्याग किया था इसलिए इसका महत्व और ज्यादा बढ़ जाता है। सनातन धर्म में मकर संक्रांति के पर्व का खास महत्व है. इस दिन लोग स्नान-दान, पूजा-पाठ करते हैं, जिससे विशेष लाभ प्राप्त होता है. इस विशेष दिन पर मकर संक्रांति का क्षण दोपहर 02:55 पर रहेगा. रवि योग सुबह 07:15 से सुबह 08:07 तक रहेगा. मान्यता है कि मकर संक्रांति के दिन वस्तुओं का दान करने से जीवन के सभी कष्ट, दुख-दर्द और परेशानियों से छुटकारा मिल जाता है. जीवन में खुशियां आती हैं.

शास्त्रों के अनुसार, इस दिन किया गया दान कभी भी समाप्त नहीं होता है. चास यह है कि इस बार लीप वर्ष का संयोग बन रहा है. यह वर्ष 365 दिनों के बजाय 366 दिनों का होगा. फरवरी 28 दिनों का होता है, लेकिन लीप वर्ष में फरवरी 29 दिनों का रहेगा. इस महीने सप्ताह के सात वारों में से छह वार चार-चार बार पड़ रहे हैं. केवल गुरुवार पांच बार पड़ेगा. प्रत्येक वर्ष के पहले महीने में मकर

संक्रांति पर्व 14 जनवरी को मनाया जाता है. लेकिन इस बार मकर संक्रांति का पर्व 15 जनवरी को मनाया जा रहा है। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार मकर संक्रांति पर सूर्य धनु राशि की यात्रा को विराम देते हुए मकर राशि में प्रवेश करते हैं। दरअसल सभी हिंदू व्रत और त्योहारों की तिथियों की गणना चंद्रमा पर आधारित पंचांग के अनुसार करते हैं, लेकिन मकर संक्रांति का पर्व सूर्य पर आधारित पंचांग के आधार पर करते हैं। पूरे एक वर्ष में कुल 12 संक्रान्तियां होती हैं। जिसमें चार संक्रांति मेष, कर्क, तुला और मकर संक्रांति बहुत महत्वपूर्ण मानी गई हैं। पौष मास में जब सूर्य धनु राशि से निकल मकर राशि में प्रवेश करते हैं तो मकर संक्रान्ति के रूप में जाना जाता है। सूर्य के मकर रेखा से उत्तरी कर्क रेखा की ओर जाने को उत्तरायण और कर्क रेखा से दक्षिणी मकर रेखा की ओर जाने को दक्षिणायण कहते हैं। ज्योतिष के अनुसार सूर्य के उत्तरायण होने के कारण मकर संक्रांति सूर्य पूजा का सबसे बड़ा पर्व माना गया है. सूर्य देवता छह महीने उत्तरायण और छह महीने दक्षिणायन रहते हैं. पुराणों के अनुसार देवताओं के दिवसों की गणना भी मकर संक्रांति से ही प्रारंभ होती है. सूर्य जब दक्षिणायन रहते हैं तो इस अवधि को देवताओं की रात्रि और सूर्य जब उत्तरायण रहते हैं तो उसे देवताओं का दिन माना जाता है।

हिंदू पंचांग के अनुसार, 1 वर्ष में दो अयन होते हैं अर्थात 1 साल में दो बार सूर्य की स्थिति में परिवर्तन होता है और इसी परिवर्तन को उत्तरायण एवं दक्षिणायन कहा जाता है. उत्तरायन देवताओं का अयन कहलाता है, जिसे पुण्य पर्व भी माना जाता है. इस पर्व से शुभ कार्यों की शुरूआत होती है, यहां तक कि उत्तरायण में मृत्यु होने पर मोक्ष प्राप्ति की संभावना रहती है. अयन का अर्थ होता है चलना, सूर्य पूरे वर्ष गतिमान रहते हैं और सूर्य की अवस्थाओं से ही ऋतुओं का निर्धारण होता है. अयन दो प्रकार के होते हैं. सूर्य के उत्तर दिशा में अयन अर्थात गमन को उत्तरायण कहा जाता है और दक्षिण दिशा में अयन को दक्षिणायन कहा जाता है. इस तरह एक वर्ष में दो अयन होते हैं और दोनों छह माह तक रहते हैं, जिन्हें उत्तरायण और दक्षिणायन कहा जाता है. सूर्य पूर्व दिशा से उदित होकर 6 महीने दक्षिण दिशा की ओर अस्त होते हैं तथा 6 महीने उत्तर दिशा की ओर से होकर पश्चिम दिशा में अस्त होते हैं. शास्त्रों के अनुसार जब सूर्य मकर राशि से मिथुन राशि तक भ्रमण करते हैं, तब तक के समय को उत्तरायन कहा जाता है. यह अवधि 6 माह की होती है, उसके बाद जब सूर्य कर्क राशि से धनु राशि में विचरण करते हैं, तब उस समय को दक्षिणायन कहते हैं. यह अवधि भी छह माह की होती है. हिंदू पंचांग के अनुसार, वर्ष में छह ऋतुएं होती हैं. जब सूर्य उत्तरायण में आते हैं, तब 3 ऋतु पड़ती है, शिशिर, वसंत और ग्रीष्म और जब सूर्य दक्षिणायन में होते हैं तो वर्षा, शरद और हेमंत ऋतु होती है. उत्तरायण का समय देवताओं का दिन तथा दक्षिणायन का समय देवताओं की रात्रि होती है. वैदिक काल में उत्तरायण को देवयान तथा दक्षिणायन को पितृयान कहा गया है. मकर संक्रांति के बाद माघ मास में उत्तरायण से परिवारों में सभी शुभ कार्य प्रारंभ हो जाते हैं. यूं तो सूर्य प्रत्येक माह में राशि परिवर्तन करते हैं, किंतु सूर्य का मकर राशि में जाना, ज्योतिष शास्त्र के अनुसार काफी महत्वपूर्ण माना जाता है. दरअसल, सूर्यदेव अपने पुत्र की राशि में प्रवेश कर रहे हैं. पुत्र की राशि में पिता का प्रवेश पुण्यवर्द्धक होने से साथ ही पापों का विनाशक भी करता है. सूर्य पिता हैं, जो कर्म के घर में जा रहे है. इस परिवर्तन के साथ ही पुण्य और मांगलिक कार्य फिर से शुरू हो जाते हैं.

दिन लंबे, रात छोटी होने लगते हैं

इस दिन से दिन लंबे होने लगते हैं और रातें छोटी हो जाती है। इसके अलावा पतंग उड़ाते समय व्यक्ति का शरीर सीधे सूर्य की किरणों के संपर्क में आता है, जिससे उसे सर्दी से जुड़ी कई शारीरिक समस्याओं से निजात मिलने के साथ विटामिन डी भी पर्याप्त मात्रा में मिलता। बता दें, विटामिन डी शरीर के लिए बेहद आवश्यक है जो शरीर के लिए जीवनदायिनी शक्ति की तरह काम करता है। मकर संक्रांति के दिन दान का विशेष महत्व है। इस दिन गरीबों को यथाशक्ति दान करना चाहिए। पवित्र नदियों में स्नान करें। इसके बाद खिचड़ी का दान देना विशेष फलदायी माना गया है। इसके अलावा गुड़-तिल, रेवड़ी, गजक आदि का प्रसाद बांटा जाता है। बता दें, सूर्य का किसी राशि विशेष पर भ्रमण करना संक्रांति कहलाता है। सूर्य हर माह में राशि का परिवर्तन करता है, इसलिए कुल मिलाकर साल में बारह संक्रांतियां होती हैं, लेकिन दो संक्रांतियां सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती हैं। एक मकर संक्रांति और दूसरी कर्क संक्रांति। सूर्य जब मकर राशि में जाता है तब मकर संक्रांति होती है। मकर संक्रांति से अग्नि तत्त्व की शुरूआत होती है।

इस समय सूर्य उत्तरायण होता है अतः इस समय किए गए जप और दान का फल अनंत गुना होता है। सूर्य और शनि का सम्बन्ध इस पर्व से होने के कारण यह काफी महत्वपूर्ण है।

औषधि का काम करती है धूप

कहते हैं इसी त्योहार पर सूर्य अपने पुत्र शनि से मिलने के लिए आते हैं। अगर कुंडली में सूर्य या शनि की स्थिति खराब हो तो इस पर्व पर विशेष तरह की पूजा से उसको ठीक कर सकते हैं। इस पर्व पर स्नान, ध्यान और दान विशेष फलदायी होता है। वैज्ञानिक तथ्यों के अनुसार, उत्तरायण में सूर्य की गर्मी शीत के प्रकोप व शीत के कारण होने वाले रोगों को समाप्त करने की क्षमता रखती है। ऐसे में घर की छतों पर जब लोग पतंग उड़ाते हैं तो सूरज की किरणें एक औषधि की तरह काम करती हैं। सर्दी के मौसम में व्यक्ति के शरीर में कफ की मात्रा बढ़ जाती है। साथ ही त्वचा में भी रुखापन आने लगता है। ऐसे में छत पर खड़े होकर पतंग उड़ाने से इन समस्याओं से राहत मिलती है।

खिचड़ी है खास महत्व

मान्यता है कि मकर संक्रांति के दिन गुड़, घी, नमक और तिल के अलावा काली उड़द की दाल और चावल का दान करना चाहिए। मकर संक्रांति के दिन उड़द की दाल की खिचड़ी खाई जाती है। कई लोग खिचड़ी के स्टॉल बांटकर पुण्य कमाते हैं। देश के कुछ इलाके ऐसे भी है, जहां मकर संक्रांति त्योहार को खिचड़ी के नाम से भी जाना जाता है। धार्मिक मान्यता है कि मकर संक्रांति पर खिचड़ी खाने से सूर्य देव और शनि देव दोनों की कृपा प्राप्त होती है। ऐसी मान्यता है कि मकर संक्रांति के दिन खिचड़ी बनाने की प्रथा बाबा गोरखनाथ के समय से ही शुरू हो गई थी। देश में जब खिलजी ने आक्रमण किया तो नाथ योगियों को युद्ध के दौरान भोजन तैयार करने का समय नहीं मिलता था और वे भूखे-प्यासे युद्ध के लिए निकल जाते थे। उस समय बाबा गोरखनाथ ने दाल, चावल और सब्जियां एक साथ पकाने की सलाह दी थी। यह खाना जल्दी तैयार हो जाता था और योगियों का पेट भी भर जाता था और साथ में काफी पौष्टिक भी होता था। तत्काल तैयार किए जाने वाले इस व्यंजन का नाम खिचड़ी बाबा गोरखनाथ ने रखा था। खिलजी से मुक्त होने के बाद योगियों ने जब मकर संक्रांति पर्व मनाया था तो उस दिन सभी को खिचड़ी का ही वितरण किया गया था। तभी से मकर संक्रांति पर खिचड़ी बनाने की प्रथा शुरू हो गई। गोरखपुर में स्थित बाबा गोरखनाथ मंदिर में मकर संक्रांति के अवसर पर खिचड़ी मेले का आयोजन हर साल होता है और प्रसाद के रूप में खिचड़ी ही बांटी जाती है। कहा जाता है कि मकर संक्रान्ति के दिन सूर्य देव अपने पुत्र शनि के घर में जाते हैं. ज्योतिष में उड़द की दाल को शनि से संबन्धित माना गया है. ऐसे में उड़द की दाल की खिचड़ी खाने से शनिदेव और सूर्यदेव दोनों की कृपा प्राप्त होती है. इसके अलावा चावल को चंद्रमा का कारक, नमक को शुक्र का, हल्दी को गुरू बृहस्पति का, हरी सब्जियों को बुध का कारक माना गया है. वहीं खिचड़ी की गर्मी से इसका संबन्ध मंगल से जुड़ता है. इस तरह मकर संक्रान्ति के दिन खिचड़ी खाने से कुंडली में करीब करीब सभी ग्रहों की स्थिति बेहतर होती है.

आर्यन जीवन पद्धति को शाश्वत सत्य मानकर स्मार्ट सिटी की जगह स्मार्ट विलेज विकसित होना चाहिए

सुरभि सिन्हा, पटना

कैलेंडर नव वर्ष (नये साल) के आगमन पर 31 दिसम्बर की रात से ही 01 जनवरी को नववर्ष (नया साल) के रूप में जश्न मनाया जाता है। प्रत्येक वर्ष लगभग सभी जगह पर 31 दिसम्बर की आधी रात को जश्न मनाया जाता है, केक काटे जाते हैं, केक काटने से पहले सभी बत्तियों को बुझा कर पूरी तरह अंधेरा किया जाता है और फिर, अचानक एकसाथ सभी बिजली की स्विच को ऑन कर रोशनी करते हुए सभी लोग चीखने लगते हैं ह्लल्ंस्त्रस्न८ ठी६ ि१ह्व। उसके बाद जहां शराबबंदी नही है वहाँ शैम्पेन और शराब की बोतलें खुलती है और न जाने कितने जीवों की हत्या कर बनाया गया भोजन परोसा जाता है। इस प्रकार नये साल (01 जनवरी) के आगमन का स्वागत किया जाता है।

देखा जाय तो नये साल का स्वागत हम लोग 31 दिसम्बर की आधी रात (12 बजे) को अंधेरा कर-के मनाते है; भले ही उसके बाद पटाखे या आतिशबाजी करें। लेकिन नये साल का प्रवेश से कुछ पल पहले अंधकार किया जाता है। शायद यही वजह है कि हमलोग कही न कही, अंधेरे में भटक गए हैं। हमें सही राह नहीं मिल रहा है। जबकि हमलोग प्रकाश को, ज्ञानपुंज कहते है और अंधकार को अज्ञान। लेकिन आज हम लोग अज्ञानता को ही जाने-अनजाने में गले लगा रहे हैं। आज हमलोग पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण आधुनिक युग के नाम पर करने में लगे हैं। अब देखा जाय तो उत्सव छोटा हो या बड़ा, हर उत्सव में केक काटने की एक परंपरा बनने लगा है। जबकि हिन्दू संस्कृति में केक क्या? कुछ भी काटकर खुशी मनाना वर्जित माना गया है। हमारी संस्कृति में प्रत्येक पर्व त्योहार किसी न किसी तार्किक तथ्यों से जोड़ा गया है। अब केक काटने को भी देखा जाय, तो, केक काटने वाले ने केक काटा और अपना हिस्सा अलग कर लिया। अब वो उसे खुद खाये या अपने किसी खास प्रिय को खिलाये। बाकी बचा खुचा जिसे खाना हो खाये, उससे उसको (काटने वाले का) कोई लेना देना नहीं रहता है। यही वजह है कि आज हम लोग एकाकी और सीमित होते जा रहे हैं।

देखा जाय तो हम लोग जन्मदिन पर या कोई अन्य उत्सव पर केक जरूर काटते हैं और केक काटने की प्रक्रिया क्या होता है? हम लोग पहले केक पर मोमबत्ती लगाते है और फिर उसे जलाते हैं, फिर उस मोमबत्ती को खुद फूंक कर बुझा देते हैं। तब केक को काटते है। जबकि यह संस्कृति हिन्दू संस्कृति के बिल्कुल विपरीत है। क्योंकि हिन्दू संस्कृति में यदि दिया जलाया जाए और वो दिया बुझ जाए तो इसे अपसगुन माना जाता है और किसी अनजानी अनहोनी होने की ओर इशारा समझा जाता है। लेकिन आज का हिन्दू समाज भी अब दिया जलाने में नहीं, बल्कि उसे बुझाने को खुशी का पर्याय मानने लगा है। हिन्दू संस्कृति में ज्योति और प्रकाश का एक खास महत्व होता है। क्योंकि खुशी में हिन्दू लोग 5 दीपक जलाते हैं और दुख में अंधेरा रखते हैं। हिन्दू ह्लसंस्कृतिह्व हमें सिखाता है और ह्लसंस्कारह्व हमें उस पर चलना। हिन्दू संस्कृति में जब भी शुभ कार्य होता है, तो दीपक जलाते हैं और अपने इष्ट देवता को विशेष कर मोतीचुर लड्डू अर्पित करते हैं। क्योंकि मोतीचुर लड्डू भी एकता का प्रतीक है। मोतीचूर लड्डू को परसादी के रूप में, लोगों के बीच बांटते है। यह शुभ और खुशी का प्रतीक है, क्योंकि मोतीचुर को बांध कर लड्डू का स्वरूप दिया जाता है। मोतीचुर लड्डू से यह सन्देश मिलता है कि हर शुभ क्षण को हम एक साथ मिलकर मनायें, इससे आनंद और खुशियाँ बढ़ जाती है। कहने का उद्देश्य यह है कि इसमें एकता और एकजुटता का संदेश छिपा हुआ है। अब यह प्रश्न उठता है कि हम लोग कब सुधरेंगे। सुधरने के लिए आवश्यक है की हम लोगों को संकल्प लेना होगा। भारतीय संस्कृति के अनुरूप शाकाहार अपनाते हुए गुरुकुल शिक्षा पद्धति को पुनः अंगीकृत करना होगा। आर्यन जीवन पद्धति को शाश्वत सत्य मानकर स्मार्ट सिटी की जगह स्मार्ट विलेज को विकसित करना होगा। देखा जाय तो स्मार्ट सिटी के फ्लैटों में गाय और बुजुर्गों के लिए कोई प्रावधान नहीं किया जा रहा है। जबकि भारतीय संस्कृति में गौ सेवा और बुजुर्गों के आशीर्वाद के अभाव में मोक्ष प्राप्ति असंभव है। इसलिए इस पर भी विचार किया जाना आवश्यक है।

प्रभु श्रीराम वनवासियों एवं वंचितों के अधिक करीब

यह एक एतिहासिक तथ्य है कि प्रभु श्री राम ने लंका पर चढ़ाई करने के उद्देश्य से अपनी सेना वनवासियों एवं वानरों की सहायता से ही बनाई थी। केवट, छबरी, आदि के उद्धार सम्बंधी कहानियां तो हम सब जानते हैं। परंतु, जब वे 14 वर्षों के वनवास पर थे तो इतने लम्बे अर्से तक वनवास करते करते वे स्वयं भी एक तरह से वनवासी बन गए थे। इन 14 वर्षों के दौरान, वनवासियों ने ही प्रभु श्री राम की सेवा सुषुर्शा की थी एवं प्रभु श्री राम भी इनके स्नेह, प्रेम एवं श्रद्धा से बहुत अभिभूत थे। इसी तरह की कई कहानियां इतिहास के गर्भ में छिपी हैं। यह भी एक कटु सत्य है एवं इतिहास इसका गवाह है कि हमारे ऋषि मुनि भी वनवासियों के बीच रहकर ही तपस्या करते रहे हैं। अतः भारत में ऋषि, मुनि, अवतार पुरुष, आदि वनवासियों, जनजातीय समाज के अधिक निकट रहते आए हैं। इस प्रकार, हमारी परम्पराएं, मान्यताएं एवं सोच एक ही है। जनजातीय समाज भी भारत का अभिन्न एवं अति महत्वपूर्ण अंग है। आज भी भारत में वनवासी मूल रूप में प्रभु श्री राम की प्रतिमूर्ति ही नजर आते हैं। दिल से एकदम सच्चे, धीर गम्भीर, भोले भाले होते हैं। यह प्रभु श्री राम की उन पर कृपा ही है कि वे आज भी सतयुग में कही गई बातों का पालन करते हैं। परंतु, कई बार ईसाई मशीनरियों एवं कुछ विकृत मानसिकता वाले लोगों द्वारा वनवासियों को उनके मूल स्वभाव से भटकाकर लोभी, लालची एवं रावण का वंशज बताया जाता है। रावण स्वयं तो वनवासी कभी रहे ही नहीं थे एवं वे श्री लंका के एक बुद्धिमान राजा थे। इस बात का वर्णन जैन रामायण में भी मिलता है। अब प्रशन्न यह उठता है कि जब रावण स्वयं एक ब्राह्मण था तो वह वंचित वर्ग का मसीहा या पूर्वज कैसे हो सकता है? जैन रामायण की तरह गोंडी रामायण भी रावण को पुलत्स वंशी ब्राह्मण मानती है, न कि आदिवासियों का पूर्वज, कुछ गोंड पुजारी रावण को अपना गुरु भाई भी मानते हैं, चूंकि पुलत्स ऋषि ने उनके पूर्वजों को भी दीक्षा दी थी। इस तरह के तथ्य भी इतिहास में मिलते हैं कि रावण अपने समय का एक बहुत बड़ा शिव भक्त एवं प्रकांड विद्वान था। रावण जब मृत्यु शैया पर लेटा था तब प्रभु श्री राम ने अपने छोटे भाई लक्ष्मण से कहा था कि रावण अब मृत्यु के निकट है एवं प्रकांड विद्वान है अतः उनसे उनके इस अंतिम समय में कुछ शिक्षा ले लो। तब लक्ष्मण रावण के सिर की तरफ खड़े होकर शिक्षा लेने पहुंचे थे तो लक्ष्मण को कहा गया था कि शिक्षा लेना है तो रावण के पैरों की तरफ आना होगा। तब लक्ष्मण, रावण के पैरों के पास आकर खड़े हुए तब जाकर रावण ने लक्ष्मण को अपने अंतिम समय में शिक्षा प्रदान की थी। अतः रावण अपने समय का एक प्रकांड पंडित था।

भारतीय संस्कृति पर पूर्व में भी इस प्रकार के हमले किए जाते रहे हैं। भारत में समाज को आपस में बांटने के कुत्सित प्रयास कोई नया नहीं हैं। एक बार तो रामायण एवं महाभारत आदि एतिहासिक ग्रंथों को भी अप्रामाणिक बनाने के कुत्सित प्रयास हो चुके हैं। वर्ष 2007 में तो केंद्र सरकार के संस्कृति मंत्रालय के मातहत भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण ने एक हलफनामा (शपथ पत्र) दायर किया था, जिसमें कहा गया था कि वाल्मीकीय रामायण और गोस्वामी तुलसीदासजी कृत श्रीरामचरितमानस प्राचीन भारतीय साहित्य के महत्त्वपूर्ण हिस्से हैं, लेकिन इनके पात्रों को एतिहासिक रूप से रिकार्ड नहीं माना जा सकता है, जो कि निर्विवाद रूप से इनके पात्रों का अस्तित्व सिद्ध करता हो या फिर घटनाओं का होना सिद्ध करता हो। ये बातें कितनी दुर्भाग्यपूर्ण हैं। यह कहना कि प्रभु श्री राम और रामायण के पात्र (राम, भरत, लक्ष्मण, हनुमान, विभीषण, सुग्रीव और रावण, आदि) एतिहासिक रूप से प्रामाणिक सिद्ध नहीं होते, एक प्रकार से भारतीय संस्कृति पर कुठाराघात ही था। हालांकि भारतीय जनमानस के आंदोलित होने पर उस समय की भारत सरकार को अपनी गलती का एहसास हुआ था और उसने अपने शपथ पत्र (हलफनामे) को न्यायालय से वापस मांग लिया था। विभिन्न देशों में वहां की स्थानीय भाषाओं में पाए जाने वाले ग्रंथों एवं

विदेशों तक में किए गए कई शोध पत्रों के माध्यम से भी यह सिद्ध होता है कि प्रभु श्री राम 14 वर्ष तक वनवासी बनकर ही वनों में निवास किए थे। अतः यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि प्रभु श्रीराम भी अपने वनवास के दौरान वनवासियों के बीच रहते हुए एक तरह से वनवासी ही बन गए थे। साथ ही, वनों में निवासरत समुदायों ने सहज ही उन्हें अपने से जुड़ा माना और प्रभु श्री राम उनके लिए देव तुल्य होकर उनमें एक तरह से रच बस गए थे। कई वनवासी एवं जनजाति समाजों ने तो अपनी रामायण ही रच डाली है। जिस प्रकार, गोंडी रामायण, जो रामायण को अपने दृष्टिकोण से देखती है, हजारों सालों से गोंडी व पंडवानी वनों में रहने वाले जनजाति समाजों की सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा रही है। गुजरात के आदिवासियों में डांगी रामायण तथा वहां के भीलों में भलोडी रामायण का प्रचलन है। साथ ही, हृदय स्पर्शी लोक गीतों पर आधारित लोक रामायण भी गुजरात में राम कथा की पावन परम्परा को दशार्ती है। इसके साथ ही, विदेशों में भी वहां की भाषाओं में लिखी गई रामायण बहुत प्रसिद्ध है। आज प्रभु श्री राम की कथा भारतीय सीमाओं को लांघकर विश्व पटल पर पहुंच गई है और निरंतर वहां अपनी उपयोगिता, महत्ता और गरिमा की दस्तक देती आ रही है। आज यह कथा विश्व की विभिन्न भाषाओं में स्थान, विचार, काल, परिस्थिति आदि में अंतर होने के बावजूद भी अनेक रूपों में, विधाओं में और प्रकारों में लिखी हुई मिलती है। यथा, थाईलेंड में प्रचलित रामायण का नाम रामकिचेन है। जिसका अर्थ है राम की कीर्ति। कम्बोडिया की रामायण रामकेर नाम से प्रसिद्ध है। लाओस में फालक फालाम और फोमचक्र नाम से दो रामायण प्रचलित हैं। मलेशिया यद्यपि मुस्लिम राष्ट्र है, परंतु वहां भी हिकायत सिरीरामा नामक रामायण प्रचलित है, जिसका तात्पर्य है श्री राम की कथा। इंडोनेशिया की रामायण का नाम ककविन रामायण है, जिसके रचनाकार महाकवि ककविन हैं। नेपाल में भानुभक्त रामायण और फिलीपीन में महरादिया लावना नामक रामायण प्रचलित है। इतना ही नहीं, प्रभु श्री राम को मिस्त्र (संयुक्त अरब गणराज्य) जैसे मुस्लिम राष्ट्र और रूस जैसे कम्युनिस्ट राष्ट्र में भी लोकनायक के रूप में स्वीकार किया गया है। इन सभी रामायण में भी प्रभु श्री राम के वनवास में बिताए गए 14 वर्षों के वनवास का विस्तार से वर्णन किया गया है। भारतीय साहित्य की विशिष्टताओं और गहनता से प्रभावित होकर तथा भारतीय धर्म की व्यापकता एवं व्यावहारिकता से प्रेरित होकर समय समय पर चीन, जापान आदि एशिया के विभिन्न देशों से ही नहीं, यूरोप में पुर्तगाल, स्पेन, इटली, फ्रान्स, ब्रिटेन आदि देशों से भी अनेक यात्री, धर्म प्रचारक, व्यापारी, साहित्यकार आदि यहां आते रहे हैं।

तारीख पर तारीख का खत्म होगा दौर

कांपेंगे अपराधियों की रुह

मुक्त होगी पुलिसिया गुंडागर्दी

तीनों विधेयकों के कानून बनने के बाद न सिर्फ भारत की न्याय व्यवस्था में सुधार होगा, बल्कि अपराधियों की रूह कांपने लगेगी। प्रताड़ना करने वालों को अब दंड मिलेगा। पुलिस गुंडागर्दी से मुक्ति और ब्रतानियां कानूनों की निशानियां खत्म होंगी। मतलब साफ है तीन आपराधिक संहिता विधेयक - भारतीय न्याय (द्वितीय) संहिता 2023, भारतीय नागरिक सुरक्षा (द्वितीय) संहिता 2023 और भारतीय साक्ष्य (द्वितीय) विधेयक 2023 पारित कर दिए हैं। ये महत्वपूर्ण विधेयक औपनिवेशिक काल के पुराने आपराधिक कानूनों का स्थान लेंगे। लोकसभा व राज्यसभा से इसका पारित होना ऐतिहासिक छड है। यह विधेयक औपनिवेशिक युग के कानून के अंत का प्रतीक है। यह परिवर्तनकारी विधेयक सुधार के प्रति भारत की प्रतिबद्धता का प्रमाण है। यह विधेयक संगठित अपराध व आतंकवाद जैसे अपराधों पर कड़ा प्रहार करते हैं। इन कानून के लागू होने के बाद देश में तारीख पर तारीख का दौर का अंत हो जाएगा। 3 साल में किसी भी पीड़ित को न्याय मिल सकेगा। दावा है कि अगर ये कानून एक बार लागू हो गए तो ये भारतीय दंड संहिता 1860, दंड प्रक्रिया संहिता 1973 और भारतीय साध्य अधिनियम 1872 की जगह ले लेंगे. गृहमंत्री अमित शाह ने इन कानूनों को बदलने के पीछे तर्क दिया है कि इनका मुख्य उद्देश्य अंग्रेजों के बनाए गए कानूनों को स्वदेशी बनाना है. एक अरसे से इन कानूनों पर बहस होती रही है क्योंकि ये कानून ब्रिटिश इंडिया के समय से चले आ रहे हैं. आपराधिक कानूनों से संबंधित विधेयक देश में पुलिस राज से मुक्ति और गुलामी की निशानियों को मिटाकर भारतीय परंपरा को स्थापित करने के लिए लाए गए हैं. इन विधेयकों से देश के लोगों को राहत पहुंचने वाली है. या यूं कहे तीनों कानूनों का मानवीकरण होगा। कहा जा सकता है मोदी सरकार मैकॉले की शिक्षा पद्धति को खत्म करने के बाद अब अंग्रेजों के समय के कानून को बदला गया है। ऐसे में बड़ा सवाल तो यही है क्या ब्रतानियां कानूनों की जगह नया कानून कारगर हो पायेगा, क्योंकि इसके लिए ब्रतानियां हुकूमत वाली पुलिसिया मानसिकता को भी बदलनी पड़ेगी। अगर ऐसा नहीं हो पाया तो तू डाल-डाल मै पात-पात कहावत को चरितार्थ करती पुलिसियां गुंडागर्दी यूं कही चलती रहेगी

सुरेश गांधी

एक सदी से भी अधिक पुराने हो चुके ब्रतानिया कानून की जगह तीन नए बिल प्रस्तुत किया जाना एक स्वागत योग्य कदम है। राजद्रोह की जगह देशद्रोह कानून देश की संप्रभुता, सुरक्षा को प्रभावित करेगा। या यूं कहे नए विधेयकों का उद्देश्य देश में आपराधिक न्याय प्रणाली को पुनर्जीवित करना है, जिसमें दंड के बजाय न्याय पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा. प्रस्तावित कानून पुलिस की जवाबदेही को मजबूत करने के लिए एक सख्त प्रणाली साबित होगी। 150 साल पुराना अंग्रेजों द्वारा बनाया गया कानून खत्म होगा। नाबालिग से रेप और मॉबलिंचिंग जैसे क्राइम में फांसी की सजा दी जाएगी। सशस्त्र विद्रोह करने और देश की संपत्ति को नुकसान पहुंचाने पर जेल होगी। बम धमाके करता है तो उसके खिलाफ कार्रवाई होगी। पहले रेप की धारा 375, 376 थी, अब जहां से अपराधों की

बात शुरू होती है उसमें धारा 63, 69 में रेप को रखा गया है। गैंगरेप को भी आगे रखा गया है। बच्चों के खिलाफ अपराध को भी आगे लाया गया है। मर्डर 302 था, अब 101 हुआ है। गैंगरेप के आरोपी को 20 साल तक की सजा या जिंदा रहने तक जेल। 18, 16 और 12 साल की उम्र की बच्चियों से रेप में अलग-अलग सजा मिलेगी। 18 से कम से रेप में आजीवन कारावास और मौत की सजा। गैंगरेप के मामले में 20 साल की सजा या जिंदा रहने तक की सजा। 18 साल से कम की बच्ची के साथ रेप में फिर फांसी की सजा का प्रावधान रखा है। सहमति से रेप में 15 साल की उम्र को बढ़ाकर 18 साल कर दिया गया है। अगर 18 साल की लड़की के साथ रेप करने पर नाबालिग रेप में आएगा।

किडनैपिंग 359, 369 था, अब 137 और 140 हुआ। ूमन ट्रैफिकिंग 370, 370ए था अब 143, 144 हुआ है। गैर इरादतन हत्या को कैटेगिरी में बांटा गया है। संगठित अपराध की भी पहली बार व्याख्या की गई है, इसमें साइबर क्राइम, लोगों की तस्करी, आर्थिक अपराधों का भी जिक्र है। इससे न्यायपालिका का काम काफी सरल होगा। गैर इरातन हत्या को दो हिस्सों में बांटा। अगर गाड़ी चलाते वक्त हादसा होता है, फिर आरोपी अगर घायल को पुलिस स्टेशन या अस्पताल ले जाता है तो उसे कम सजा दी जाएगी। हिट एंड रन केस में 10 साल की सजा मिलेगी। किसी के सर पर लाठी मारने वाले को सजा तो मिलेगी, इससे ब्रेन डेड की स्थिति में आरोपी को 10 साल की सजा मिलेगी। इसके अलावा कई बदलाव हैं। नए कानून में अब पुलिस की भी जवाबदेही तय होगी। पहले किसी की गिरफ्तारी होती थी, तो उसके परिवार के लोगों को जानकारी ही नहीं होती थी। अब कोई गिरफ्तार होगा तो पुलिस उसके परिवार को जानकारी देगी। किसी भी केस में 90 दिनों में क्या हुआ, इसकी जानकारी पुलिस पीड़ित को देगी। जांच और केस के विभिन्न चरणों की जानकारी पीड़ित और परिवार को भी देने के लिए कई पॉइंट जोड़े गए हैं। तीनों कानूनों के अहम प्रावधान- भारतीय न्याय संहिता की बात करूं तो इसमें कई मानव संबंधी अपराधों को पीछे रखा गया था। रेप के मामले, बच्चों के खिलाफ अपराधों को आगे रखा गया है।

भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता- देश में न्याय मिलने में गरीबों को मुश्किल होती है। लेकिन गरीबों के लिए संविधान में व्यवस्था की गई है। पुलिस की ओर से दंडित कार्रवाई- ब्तच्च में कोई समय निर्धारित नहीं है। पुलिस 10 साल बाद भी जांच कर सकती है। तीन दिन के भीतर रिपोर्ट दर्ज करनी होगी। 3 से 7 साल की सजा में 14 दिन के भीतर जांच करके थ्स् रजिस्टर करनी होगी। अब बिना किसी देर के रेप पीड़िता की रिपोर्ट को भी 7 दिन के भीतर पुलिस स्टेशन और कोर्ट में भेजना होगा। पहले 7 से 90 दिनों में चार्जशीट दाखिल करने का प्रावधान था। लेकिन लोग कहते थे, जांच चल रही है ऐसा बोलकर सालों केस लटकाए जाते थे। अब 7 से 90 दिनों का समय रहेगा, अब ये समय पूरा होने के बाद 90 दिनों का ही समय मिलेगा। 180 दिनों के बाद आप चार्जशीट लटकाकर नहीं रख सकते। अब आरोप तय होने के 30 दिन के भीतर ही आरोपी आरोप स्वीकार कर लेगा तो सजा कम हो जाएगी। उसके बाद सजा कम नहीं होगी। ट्रायल की प्रक्रिया में कागज रखने का प्रावधान नहीं था, अब इसे 30 दिन में पूरा करना होगा। ट्रायलिंग के दौरान अनुपस्थित रहने के मामले में भी प्रावधान किया गया है, कुछ लोगों को इससे आपत्ति हो सकती है। बेशक, गुलामी की सभी निशानियों को समाप्त करने की दिशा में उठाया गया कदम है. अब तक जो कानून है उसमे दंड दिए

जाने की अवधारणा है, जबकि नए कानून में देश के लोगों के लिए न्याय देने का प्रावधान किया गया है. जो अब तक का सबसे प्रभावी कदम है.

अब दंड नहीं न्याय होगा

संसद में पेश किए गए तीन नए कानून की आत्मा भारतीय नागरिकों को संविधान में दिए गए सभी अधिकारों की रक्षा करना, इनका उद्देश्य दंड देना नहीं बल्कि न्याय देना होगा. भारतीय आत्मा के साथ बनाए गए इन तीन कानूनों से हमारे क्रिमिनल जस्टिस सिस्टम में बहुत बड़ा परिवर्तन आएगा. देखा जाएं तो एक तरफ राजद्रोह जैसे कानूनों को निरस्त किया गया है, दूसरी ओर धोखा देकर महिला का शोषण करने और मॉब लिंचिग जैसे जघन्य अपराधों के लिए दंड का प्रावधान और संगठित अपराधों और आतंकवाद पर नकेल कसने का काम भी किया है. कानून में दस्तावेजों की परिभाषा का विस्तार कर इलेक्ट्रॉनिक या डिजिटल रिकॉर्ड्स, ई-मेल, सर्वर लॉग्स, कम्प्यूटर, स्मार्ट फोन, लैपटॉप्स, एसएमएस, वेबसाइट, लोकेशनल साक्ष्य, डिवाइस पर उपलब्ध मेल, मैसेजेस को कानूनी वैधता दी गई है. एफआइआर से केस डायरी, केस डायरी से चार्जशीट और चार्जशीट से जजमेंट तक की सारी प्रक्रिया को डिजिटलाइज करने का प्रावधान इस कानून में किया गया है. सर्च और जब्ती के वक्त वीडियोग्राफी को कंपल्सरी कर दिया गया है जो केस का हिस्सा होगी और इससे निर्दोष नागरिकों को फंसाया नहीं जा सकेगा, पुलिस द्वारा ऐसी रिकॉर्डिंग के बिना कोई भी चार्जशीट वैध नहीं होगी. 7 साल या इससे ज्यादा सजा वाले अपराधों के क्राइम सीन पर फॉरेंसिक टीम की विजिट को कंपल्सरी किया जा रहा है. इसके माध्यम से पुलिस के पास एक वैज्ञानिक साक्ष्य होगा जिसके बाद कोर्ट में दोषियों के बरी होने की संभावना बहुत कम हो जाएगी. मोदी सरकार नागरिकों की सुविधा सुनिश्चित करने के लिए आजादी के 75 सालों के बाद पहली बार जीरो एफआईआर को शुरू करने जा रही है, अपराध कहीं भी हुआ हो उसे अपने थाना क्षेत्र के बाहर भी रजिस्टर किया जा सकेगा. पहली बार ई-एफआईआर का प्रावधान जोड़ा जा रहा है, हर जिले और पुलिस थाने में एक ऐसा पुलिस अधिकारी नामित किया जाएगा जो गिरफ्तार किए गए व्यक्ति के परिवार को उसकी गिरफ्तारी के बारे में ऑनलाइन और व्यक्तिगत रूप से सूचना करेगा. यौन हिंसा के मामले में पीड़ित का बयान कंपल्सरी कर दिया गया है और यौन उत्पीड़न के मामले में बयान की वीडियो रिकॉर्डिंग भी अब कंपल्सरी कर दी गई है.

40 फीसदी केस समाप्त हो जाएंगे

पुलिस को 90 दिनों में शिकायत का स्टेटस और उसके बाद हर 15 दिनों में फरियादी को स्टेटस देना कंपल्सरी होगा. पीड़ित को सुने बिना कोई भी सरकार 7 साल या उससे अधिक के कारावास का केस वापस नहीं ले सकेगी, इससे नागरिकों के अधिकारों की रक्षा होगी. छोटे मामलों में समरी ट्रायल का दायरा भी बढ़ा दिया गया है. अब 3 साल तक की सजा वाले अपराध समरी ट्रायल में शामिल हो जाएंगे. इस अकेले प्रावधान से ही सेशन्स कोर्ट्स में 40 प्रतिशत से अधिक केस समाप्त हो जाएंगे. आरोप पत्र दाखिल करने के लिए 90 दिनों की समयसीमा तय कर दी गई है और परिस्थिति देखकर अदालत आगे 90 दिनों की परमीशन और दे सकेंगी. इस तरह 180 दिनों के अंदर जांच समाप्त कर ट्रायल के लिए भेज देना होगा. कोर्ट अब आरोपित व्यक्ति को आरोप तय करने का नोटिस 60 दिनों में देने के लिए बाध्य होंगे, बहस पूरी होने के 30 दिनों के अंदर माननीय न्यायाधीश को फैसला देना होगा. इससे सालों तक निर्णय पेंडिंग नहीं रहेगा और फैसला 7 दिनों के अंदर ऑनलाइन उपलब्ध कराना होगा. सिविल सर्वेंट या पुलिस अधिकारी के विरूद्ध ट्रायल के लिए सरकार को 120 दिनों के अंदर अनुमति पर फैसला करना होगा वरना इसे डीम्ड परमीशन माना जाएगा और ट्रायल शुरू कर दिया जाएगा. घोषित अपराधियों की संपत्ति की कुर्की का भी प्रावधान लेकर आए हैं, अंतरराज्यीय गिरोह और संगठित अपराधो के विरूद्ध अलग प्रकार की कठोर सजा

का नया प्रावधान भी इस कानून में जोड़ा जा रहा है. शादी, रोजगार और पदोन्नति के झूठे वादे और गलत पहचान के आधार पर यौन संबंध बनाने को पहली बार अपराध की श्रेणी में लाया गया है, गैंग रेप के सभी मामलों में 20 साल की सजा या आजीवन कारावास का प्रावधान किया गया है.

मॉब लिचिंग पर नकेल कसेगा

18 साल से कम आयु की बच्चियों के साथ अपराध के मामले में मृत्यु दंड का भी प्रावधान रखा गया है, मॉब लिंचिग के लिए 7 साल, आजीवन कारावास और मृत्यु दंड के तीनों प्रावधान रखे गए हैं. मोबाइल फोन या महिलाओं की चेन की स्नेचिंग के लिए कोई प्रावधान नहीं था, लेकिन अब इसके लिए भी प्रावधान रखा गया है. हमेशा के लिए अपंगता आने या ब्रेन डेड होने की स्थिति में 10 साल या आजीवन कारावास की सजा का प्रावधान किया गया है बच्चों के साथ अपराध करने वाले व्यक्ति के लिए सजा को 7 साल से बढ़ाकर 10 साल कर दिया गया है. अनेक अपराधों में जुमार्ने की राशि को भी बढ़ाने का प्रावधान किया गया है. सजा माफी को राजनीतिक फायदे के लिए उपयोग करने के कई मामले देखे जाते थे, अब मृत्यु दंड को आजीवन कारावास, आजीवन कारावास को कम से कम 7 साल की सजा और 7 साल के कारावास को कम से कम 3 साल तक की सजा में ही बदला जा सकेगा और किसी भी गुनहगार को छोड़ा नहीं जाएगा. मोदी सरकार राजद्रोह को पूरी तरह से समाप्त करने जा रही है क्योंकि भारत में लोकतंत्र है और सबको बोलने का अधिकार है. पहले आतंकवाद की कोई व्याख्या नहीं थी, अब सशस्त्र विद्रोह, विध्वंसक गतिविधियां, अलगाववाद, भारत की एकता, संप्रभुता और अखंडता को चुनौती देने जैसे अपराधों की पहली बार इस कानून में व्याख्या की गई है. अनुपस्थिति में ट्रायल के बारे में एक ऐतिहासिक फैसला किया है, सेशन्स कोर्ट के जज द्वारा भगोड़ा घोषित किए गए व्यक्ति की अनुपस्थिति में ट्रायल होगा और उसे सजा भी सुनाई जाएगी, चाहे वो दुनिया में कहीं भी छिपा हो, उसे सजा के खिलाफ अपील करने के लिए भारतीय कानून और अदालत की शरण में आना होगा.

अधिकतम 3 वर्षों में न्याय मिल सकेगा

कानून में कुल 313 बदलाव किए गए हैं जो हमारे क्रिमिनल जस्टिस सिस्टम में एक आमूलचूल परिवर्तन लाएंगे और किसी को भी अधिकतम 3 वर्षों में न्याय मिल सकेगा. इस कानून में महिलाओं और बच्चो का विशेष ध्यान रखा गया है, अपराधियों को सजा मिले ये सुनिश्चित किया गया है और पुलिस अपने अधिकारों का दुरुपयोग न कर सके, ऐसे प्रावधान भी किए गए हैं.फिरहाल, भीड़ की हिंसा के खिलाफ नए कानून की आवश्यकता थी, जो पूरा हो गया। इसकी आवश्यकता इसलिए अधिक है, क्योंकि भीड़ की हिंसा के मामले बढ़ते जा रहे हैं। बीते कुछ समय से तो आए दिन ऐसे समाचार सामने आ रहे हैं, जिनमें लोगों का उग्र समूह किसी संदिग्ध अथवा निर्दोष-निहत्थे व्यक्ति से अपने हिसाब से निपट रहा होता है। इस तरह की घटनाओं में लोगों की जान तक जा रही है। चूंकि भीड़ की हिंसा के मामले खुद न्याय करने की मनोवृत्ति के परिचायक हैं, इसलिए केवल कानून बनाना ही पर्याप्त नहीं। आम जनता को इसके लिए सचेत करने की भी जरूरत है कि कोई भी किसी को दंड देने का काम अपने हाथ में नहीं ले सकता और जो कोई भी ऐसा करेगा, वह कठोर दंड का भागीदार बनेगा। बेहतर यह होगा कि हाल में भीड़ की हिंसा के जो भी मामले सामने आए हैं, उनमें दोषी लोगों को दंडित करने का काम शीघ्रता से किया जाए। स्पष्ट है कि इसके लिए पुलिस के साथ-साथ न्याय प्रक्रिया को भी तत्परता का परिचय देना होगा। यह इसलिए आवश्यक है, क्योंकि महिलाओं के खिलाफ अपराध के मामले में कानून तो कड़े कर दिए गए, लेकिन दोषी लोगों को आनन-फानन दंडित करने का सिलसिला कायम नहीं किया जा सका। केंद्र और राज्य सरकारों को यह सुनिश्चित करना होगा कि भीड़ की हिंसा के मामले में ऐसा न होने पाए।

नए कानून में होंगी इतनी धाराएं

भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता जो सीआरपीसी को रिप्लेस करेगी, उसमें अब 533 धाराएं रहेंगी. जबकि अब तक इसमें 478 धाराएं थी. 160 धाराओं को बदल दिया गया है. 9 नई धाराएं जोड़ी गई हैं जबकि 9 धाराओं को निरस्त किया गया है. इसी तरह भारतीय न्याय संहिता, जो आइपीसी को रिप्लेस करेगी, में पहले की 511 धाराओं के स्थान पर अब 356 धाराएं होंगी. 175 धाराओं में बदलाव

किया गया है. 8 नई धाराएं जोड़ी गई हैं और 22 धाराओं को निरस्त किया गया है. इसी तरह भारतीय साक्ष्य विधेयक, में पहले की 167 के स्थान पर अब 170 धाराएं होंगी. 23 धाराओं में बदलाव किया गया है. 1 नई धारा जोड़ी गई है और 5 धाराएं निरस्त की गई हैं.

आरोपी की गैरमौजूदगी में भी ट्रायल होगा

देश में कई केस लटके हुए हैं, बॉम्बे ब्लास्ट जैसे केसों के आरोपी पाकिस्तान जैसे देशों में छिपे हैं। अब उनके यहां आने की जरूरत नहीं है। अगर वे 90 दिनों के भीतर कोर्ट के सामने पेश नहीं होते हैं तो उसकी गैरमौजूदगी में ट्रायल होगा, फांसी भी होगी, जिससे आरोपियों को उस देश से वापस लाने की प्रोसेस आसान होगी। अब लंबे समय तक किसी को जेल में नहीं रख सकते, अगर उसने सजा का एक तिहाई समय जेल में गुजार लिया है तो उसे रिहा किया जा सकता है।

आधी सजा काटने पर मिल सकती है रिहाई

गंभीर मामलों में आधी सजा काटने के बाद रिहाई मिल सकती है। जजमेंट सालों तक नहीं लटकाया जा सकता। मुकदमा समाप्त होने के बाद जज को 43 दिन में फैसला देना होगा। निर्णय देने के 7 दिन के भीतर सजा सुनानी होगी। पहले सालों तक दया याचिकाएं दाखिल की जाती थीं। दया की याचिका दोषी की कर सकता है पहले कोई एनजीओ या कोई संस्थान ऐसी याचिकाएं दाखिल करता था। सुप्रीम कोर्ट से याचिका खारिज होने के बाद 30 दिन के भीतर ही दया याचिका दाखिल की जा सकेगी।

तीनों कानूनों का मानवीकरण होगा

नए कानून व्यक्ति की स्वतंत्रता, मानव के अधिकार और सबके साथ समान व्यवहार के तीन सिद्धांतों के आधार पर बनाए जा रहे हैं। आजादी के बाद पहली बार अपराध न्याय प्रणाली से जुड़े तीनों कानूनों का मानवीकरण होगा। नए कानूनों में महिलाओं और बच्चों को प्रभावित करने वाले कानूनों को प्राथमिकता दी गई है। उसके बाद मानव अधिकारों से जुड़े कानूनों और देश की सुरक्षा से संबंधित कानूनों को प्राथमिकता दी गई है। अब आरोपी को याचिका दायर करने के लिए सात दिन मिलेंगे। न्यायाधीश को उन सात दिनों में सुनवाई करनी होगी। मामले का ट्रायल शुरू करने के लिए अधिकतम 120 दिन का समय मिलेगा। पहले प्ली बार्गेनिंग के लिए कोई समय सीमा नहीं थी। अब अगर कोई अपराध के 30 दिनों के भीतर अपना अपराध स्वीकार कर लेता है तो सजा कम होगी। ट्रायल के दौरान दस्तावेज पेश करने का कोई प्रावधान नहीं था। हमने इसे अनिवार्य कर दिया है। 30 दिनों के भीतर सभी दस्तावेज प्रस्तुत किए जाएंगे। इसमें कोई देरी नहीं की जाएगी।

रामायण में वर्णित श्रीराम जी का वनवास मार्ग...

कुमुद रंजन सिंह, नालंदा

1. तमसा नदी

अयोध्या से 20 किमी दूर है तमसा नदी। यहां पर उन्होंने नाव से नदी पार की।

2. श्रृंगवेरपुर तीर्थ - प्रयागराज से 20-22 डट दूर वे श्रृंगवेरपुर पहुंचे, जो निषादराज गुह का राज्य था। यहीं पर गंगा के तट पर उन्होंने केवट से गंगा पार करने को कहा था। श्रृंगवेरपुर को वर्तमान में सिंगरौर कहा जाता है।

3. कुरई गांव - सिंगरौर में गंगा पार कर श्रीराम कुरई में रुके थे।

4. प्रयाग - कुरई से आगे चलकर श्रीराम अपने भाई लक्ष्मण और पत्नी सहित प्रयाग पहुंचे थे। कुछ महीने पहले तक प्रयाग को इलाहाबाद कहा जाता था।

5. चित्रकूणट - प्रभु श्रीराम ने प्रयाग संगम के समीप यमुना नदी को पार किया और फिर पहुंच गए चित्रकूट। चित्रकूट वह स्थान है, जहां राम को मनाने के लिए भरत अपनी सेना के साथ पहुंचते हैं। तब जब दशरथ का देहांत हो जाता है। भारत यहां से राम की चरण पादुका ले जाकर उनकी चरण पादुका रखकर राज्य करते हैं।

6. सतना - चित्रकूट के पास ही सतना (मध्यप्रदेश) स्थित अत्रि ऋषि का आश्रम था। हालांकि अनुसूइया पति महर्षि अत्रि चित्रकूट के तपोवन में रहा करते थे, लेकिन सतना में 'रामवन' नामक स्थान पर भी श्रीराम रुके थे, जहां ऋषि अत्रि का एक ओर आश्रम था।

7. दंडकारण्य - चित्रकूट से निकलकर श्रीराम घने वन में पहुंच गए। असल में यहीं था उनका वनवास। इस वन को उस काल में दंडकारण्य कहा जाता था। मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र के कुछ क्षेत्रों को मिलाकर दंडकाराण्य था। दंडकारण्य में छत्तीसगढ़, ओडिशा एवं आंध्रप्रदेश राज्यों के अधिकतर हिस्से शामिल हैं। दरअसल, उड़ीसा की महानदी के इस पास से गोदावरी तक दंडकारण्य का क्षेत्र फैला हुआ था। इसी दंडकारण्य का ही हिस्सा है आंध्रप्रदेश का एक शहर भद्राचलम। गोदावरी नदी के तट पर बसा यह शहर सीता-रामचंद्र मंदिर के लिए प्रसिद्ध है। यह मंदिर भद्रगिरि पर्वत पर है। कहा जाता है कि श्रीराम ने अपने वनवास के दौरान कुछ दिन इस भद्रगिरि पर्वत पर ही बिताए थे। स्थानीय मान्यता के मुताबिक दंडकारण्य के आकाश में ही रावण और जटायु का युद्ध हुआ था और जटायु के कुछ अंग दंडकारण्य में आ गिरे थे। ऐसा माना जाता है कि दुनियाभर में सिर्फ यहीं पर जटायु का एकमात्र मंदिर है।

8. पंचवटी नासिक - दण्डकारण्य में मुनियों के आश्रमों में रहने के बाद श्रीराम अगस्त्य मुनि के आश्रम गए। यह आश्रम नासिक के पंचवटी क्षे त्र में है जो गोदावरी नदी के किनारे बसा है। यहीं पर लक्ष्मण ने शूर्पणखा की नाक काटी थी। राम-लक्ष्मण ने खर व दूषण के साथ युद्ध किया था। गिद्धराज जटायु से श्रीराम की मैत्री भी यहीं हुई थी। वाल्मीकि

रामायण, अरण्यकांड में पंचवटी का मनोहर वर्णन मिलता है।

9. सर्वतीर्थ - नासिक क्षेत्र में शूर्पणखा, मारीच और खर व दूषण के वध के बाद ही रावण ने सीता का हरण किया और जटायु का भी वध किया था जिसकी स्मृति नासिक से 56 किमी दूर ताकेड गांव में 'सर्वतीर्थ' नामक स्थान पर आज भी संरक्षित है। जटायु की मृत्यु सर्वतीर्थ नाम के स्थान पर हुई, जो नासिक जिले के इगतपुरी तहसील के ताकेड गांव में मौजूद है। इस स्थान को सर्वतीर्थ इसलिए कहा गया, क्योंकि यहीं पर मरणासन्न जटायु ने सीता माता के बारे में बताया। रामजी ने यहां जटायु का अंतिम संस्कार करके पिता और जटायु का श्राद्ध-तर्पण किया था। इसी तीर्थ पर लक्ष्मण रेखा थी।

10. पर्णशाला- पर्णशाला आंध्रप्रदेश में खम्माम जिले के भद्राचलम में स्थित है। रामालय से लगभग 1 घंटे की दूरी पर स्थित पर्णशाला को 'पनशाला' या 'पनसाला' भी कहते हैं। पर्णशाला गोदावरी नदी के तट पर स्थित है। मान्यता है कि यही वह स्थान है, जहां से सीताजी का हरण हुआ था। हालांकि कुछ मानते हैं कि इस स्थान पर रावण ने अपना विमान उतारा था। इस स्थल से ही रावण ने सीता को पुष्पक विमान में बिठाया था यानी सीताजी ने धरती यहां छोड़ी थी। इसी से वास्तविक हरण का स्थल यह माना जाता है। यहां पर राम-सीता का प्राचीन मंदिर है।

11. तुंगभद्रा- सर्वतीर्थ और पर्णशाला के बाद श्रीराम-लक्ष्मण सीता की खोज में तुंगभद्रा तथा कावेरी नदियों के क्षेत्र में पहुंच गए। तुंगभद्रा एवं कावेरी नदी क्षेत्रों के अनेक स्थलों पर वे सीता की खोज में गए।

12. शबरी का आश्रम - तुंगभद्रा और कावेरी नदी को पार करते हुए राम और लक्ष मण चले सीता की खोज में। जटायु और कबंध से मिलने के पश चात वे ऋष्यमूक पर्वत पहुंचे। रास्ते में वे पम्पा नदी के पास शबरी आश्रम भी गए, जो आजकल केरल में स्थित है। शबरी जाति से भीलनी थीं और उनका नाम था श्रमणा। 'पम्पा' तुंगभद्रा नदी का पुराना नाम है। इसी नदी के किनारे पर हम्पी बसा हुआ है। पौराणिक ग्रंथ 'रामायण' में हम्पी का उल्लेख वानर राज्य किष्किंधा की राजधानी के तौर पर किया गया है। केरल का प्रसिद्ध 'सबरिमलय मंदिर' तीर्थ इसी नदी के तट पर स्थित है।

13. ऋष्यमूक पर्वत- मलय पर्वत और चंदन वनों को पार करते हुए वे ऋष्यमूक पर्वत की ओर बढ़े। यहां उन्होंने हनुमान और सुग्रीव से भेंट की, सीता के आभूषणों को देखा और श्रीराम ने बाली का वध किया। ऋष्यमूक पर्वत वाल्मीकि रामायण में वर्णित वानरों की राजधानी किष्किंधा के निकट स्थित था। ऋष्यमूक पर्वत तथा किष्किंधा नगर कर्नाटक के हम्पी, जिला बेल्लारी में स्थित है। पास की पहाड़ी को 'मतंग पर्वत' माना जाता है। इसी पर्वत पर मतंग ऋषि का आश्रम था जो हनुमानजी के गुरु थे।

14. कोडीकरई - हनुमान और सुग्रीव से मिलने के बाद श्रीराम ने वानर सेना का गठन किया और लंका की ओर चल पड़े। तमिलनाडु की एक लंबी तटरेखा है, जो लगभग 1,000 किमी तक विस् तारित है। कोडीकरई समुद्र तट वेलांकनी के दक्षिण में स्थित है, जो पूर्व में बंगाल की खाड़ी और दक्षिण में पाल क स् ट्रेट से घिरा हुआ है। यहां श्रीराम की सेना ने पड़ाव डाला और श्रीराम ने अपनी सेना को कोडीकरई में एकत्रित कर विचार विमर्ष किया। लेकिन राम की सेना ने उस स्थान के सर्वेक्षण के बाद जाना कि यहां से समुद्र को पार नहीं किया जा सकता और यह स्थान पुल बनाने के लिए उचित भी नहीं है, तब श्रीराम की सेना ने रामेश्वरम की ओर कूच किया।

15. रामेश वरम- रामेश वरम समुद्र तट एक शांत समुद्र तट है और यहां का छिछला पानी तैरने और सन बेदिंग के लिए आदर्श है। रामेश वरम प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थ केंद्र है। महाकाव्य रामायण के अनुसार भगवान श्रीराम ने लंका पर चढ़ाई करने के पहले यहां भगवान शिव की पूजा की थी। रामेश्वरम का शिवलिंग श्रीराम द्वारा स्थापित शिवलिंग है।

16. धनुषकोडी - वाल्मीकि के अनुसार तीन दिन की खोजबीन के बाद श्रीराम ने रामेश्वरम के आगे समुद्र में वह स्थान ढूंढ़ निकाला, जहां से आसानी से श्रीलंका पहुंचा जा सकता हो। उन्होंने नल और नील की मदद से उक्त स्थान से लंका तक का पुनर्निर्माण करने का फैसला लिया। धनुषकोडी भारत के तमिलनाडु राज्य के पूर्वी तट पर रामेश्वरम द्वीप के दक्षिणी किनारे पर स्थित एक गांव है। धनुषकोडी पंबन के दक्षिण-पूर्व में स्थित है। धनुषकोडी श्रीलंका में तलैमन्नार से करीब 18 मील पश्चिम में है।

इसका नाम धनुषकोडी इसलिए है कि यहां से श्रीलंका तक वानर सेना के माध्यम से नल और नील ने जो पुल (रामसेतु) बनाया था उसका आकार मार्ग धनुष के समान ही है। इन पूरे इलाकों को मन्नार समुद्री क्षेत्र के अंतर्गत माना जाता है। धनुषकोडी ही भारत और श्रीलंका के बीच एकमात्र स्थलीय सीमा है, जहां समुद्र नदी की गहराई जितना है जिसमें कहीं-कहीं भूमि नजर आती है।

17. नुवारा एलिया' पर्वत श्रृंखला - वाल्मीकिय-रामायण अनुसार श्रीलंका के मध्य में रावण का महल था। 'नुवारा एलिया' पहाड़ियों से लगभग 90 किलोमीटर दूर बांद्रवेला की तरफ मध्य लंका की ऊंची पहाड़ियों के बीचोबीच सुरंगों तथा गुफाओं के भंवरजाल मिलते हैं। यहां ऐसे कई पुरातात्विक अवशेष मिलते हैं जिनकी कार्बन डेटिंग से इनका काल निकाला गया है।

श्रीलंका में नुआरा एलिया पहाड़ियों के आसपास स्थित रावण फॉल, रावण गुफाएं, अशोक वाटिका, खंडहर हो चुके विभीषण के महल आदि की पुरातात्विक जांच से इनके रामायण काल के होने की पुष्टि होती है। आजकल भी इन स्थानों की भौगोलिक विशेषताएं, जीव, वनस्पति तथा स्मारक आदि बिलकुल वैसे ही हैं जैसे कि रामायण में वर्णित किए गए है।

रामेश्वरम : जहां श्रीराम को मिला था रावण पर विजय का आशीर्वाद

उत्तर में आकाश की सीमाओ को चुनौती देता हिमालय की गोद में विराजमान है सबसे प्राचीनतम ज्योतिर्लिंग केदारनाथ, तो दक्षिण में धर्म की गहराइयों को मापता युगो की कथा सुनाता हिंद महासागर के तट पर स्थित है ज्योतिर्लिंग रामेश्वरम्। कहते है लंका पर चढ़ाई से पहले श्रीराम ने रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग की स्थापना की थी. यह 12 ज्योतिर्लिंगों एवं मूल चारों धामों में से एक है। तमिलनाडु के रामेश्वरम में स्थित यह द्वादश ज्योतिर्लिंग भारत के प्रसिद्ध मंदिरों में से भी एक है। इस मंदिर में दो शिवलिंग हैं। एक शिवलिंग माता सीता ने बनाया था और दूसरा हनुमान जी द्वारा स्थापित हैं। मंदिर परिसर में ही एक प्राकृतिक झरना है, जिसे थीर्थम कहा जाता है। मान्यता है कि इस झरने के पानी में डुबकी लगाने मात्र से सभी दुख कष्ट दूर हो जाते हैं और पापों से मुक्ति मिल जाती है। उत्तराखंड के गंगोत्री से गंगाजल लेकर श्री रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग पर अर्पित करने का विशेष महत्त्व है। आध्यात्म रामायण में श्रीराम ने घोषणा की है कि जो मनुष्य रामेश्वर शिव का दर्शनकर सेतुबंध को प्रणाम करेगा, वह ब्रह्महत्यादि पापों से मुक्त होगा -प्रणमेत सेतुबंधं यो दृष्ट्वा रामेश्वरम् शिवम्। ब्राह्महत्यादि पापेभ्यो मुच्यतेमनुग्रहात्।। रामेश्वरम् की यात्रा करने वालों को हर जगह राम-कहानी की गूंज सुनाई देती है। रामेश्वरम् के विशाल टापू का चप्पा-चप्पा भूमि राम की कहानी से जुड़ी हुई है। किसी जगह पर राम ने सीता जी की प्यास बुझाने के लिए धनुष की नोंक से कुआं खोदा था, तो कहीं पर उन्होनें सेनानायकों से सलाह की थी। कहीं पर सीताजी ने अग्नि-प्रवेश किया था तो किसी अन्य स्थान पर श्रीराम ने जटाओं से मुक्ति पायी थी। ऐसी सैकड़ों कहानियां प्रचलित है। यहां राम-सेतु के निर्माण में लगे ऐसे पत्थर भी मिलते हैं, जो पानी पर तैरते हैं। मान्यता अनुसार नल-नील नामक दो वानरों ने उनको मिले वरदान के कारण जिस पाषाण शिला को छूआ, वो पानी पर तैरने लगी और सेतु के काम आयी

सुरेश गांधी

प्राचीन काल से ही भारत में तीर्थों की धार्मिक महत्ता रही है। इसी महत्व को बनाए रखने एवं विशाल भारतवर्ष को एकता के सूत्र में पिरोने के लिए परम पवित्र चार धामों की स्थापना चार दिशाओं में की गई है। उत्तर दिशा में हिमालय की गोद में बद्रीनाथ, पश्चिम में द्वारकापुरी, पूर्व में जगन्नाथपुरी तथा सुदूर दक्षिणी छोर पर स्थित है रामेश्वरम धाम। भौगोलिक दृष्टि से चार धाम एक परिपूर्ण वर्ग का निर्माण करते हैं, जिसमें बद्रीनाथ और रामेश्वरम एक देशांतर पर पड़ते हैं एवं द्वारका और जगन्नाथपुरी एक ही अक्षांश पर पड़ते हैं। रामेश्वरम धाम हिन्दुओं के सभी पवित्र तीर्थों में से एक है तथा प्रकृति की सुंदरता के साथ-साथ ही यह तमिलनाडु के रामनाथपुरम जिले में स्थित एक विशालकाय और भव्य मंदिर है। इसके अलावा यहां स्थापित शिवलिंग, द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक माना जाता है। भारत के उत्तर मे काशी की जो मान्यता है, वही दक्षिण में रामेश्वरम की है। रामेश्वरम मंदिर ज्योतिर्लिंग रामायण और राम की श्रीलंका से विजयी वापसी के साथ निकटता से जुड़ा हुआ है। रामेश्वर का मतलब संस्कृत में राम के भगवान शिव। मंदिर के गर्भ गृह में दो शिवलिंग है। कहते हैं पहला शिवलिंग रेत से बना है, जिसे सीता जी ने अपने हाथों से स्थापित किया था। इसे मुख्य देवता रामलिंग अर्थात रामनाथस्वामी के रूप में भी माना जाता है। दूसरा शिवलिंग हनुमान जी ने स्थापित की है। कहा जाता है इस शिवलिंग को हनुमान जी ने कैलाश पर्वत से लाये थे। स्थापना के दौरान श्रीराम जी ने कहा था, सबसे पहले दुसरे शिवलिंग की पूजा की जाएगी, क्योकि इसे हनुमान ने द्वारा लाया गया हैं। आज भी इस प्रथा का पालन किया जाता है।

पुराणों में रामेश्वरम का नाम गंधमादन बताया गया है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार इस मंदिर में जो शिवलिंग है उसके पीछे मान्यता यह है कि जब मयार्दा पुरुषोत्तम श्रीराम सीताजी को रावण से छुड़ाने के लिए लंका जा रहे थे, तब उन्हें रास्ते में प्यास लगी। जब वे पानी पीने लगे तभी उनको याद आया कि उन्होंने भगवान शंकर के दर्शन नहीं किए हैं, ऐसे में वे कैसे जल ग्रहण कर सकते हैं। तब श्रीराम ने विजय प्राप्ति के लिए बालू का शिवलिंग स्थापित करके शिव पूजन किया था, क्योंकि भगवान राम जानते थे कि रावण भी शिव का परम भक्त है और युद्ध में हरा पाना कठिन कार्य है इसलिए भगवान राम ने लक्ष्मण सहित शिवजी की आराधना की और भगवान शिव प्रसन्न होकर माता पार्वती के साथ प्रकट हुए एवं श्रीराम को विजयी होने का आशीर्वाद दिया। भगवान राम ने शिवजी से लोक कल्याण के लिए उसी स्थान पर शिवलिंग के रूप में सदा के लिए निवास करने को कहा जिसे भगवान शिव ने स्वीकार कर लिया। रामेश्वरम चेन्नई से लगभग 425 मील दक्षिण-पूर्व में है। यह हिन्द महासागर और बंगाल की खाड़ी से चारों ओर से घिरा हुआ एक सुन्दर शंख के आकार का एक द्वीप है। काफी समय पूर्व यह द्वीप भारत की भूमि से जुड़ा हुआ

था, परन्तु बाद में सागर की लहरों ने भारत और द्वीप के भूमि रास्ते को काट डाला, जिससे वह चारों ओर पानी से घिरकर टापू बन गया। रामेश्वरम मंदिर जाने के लिए कंक्रीट के 145 खम्भों पर टिका करीब सौ साल पुराना पुल है। रामेश्वरम जाने वाले लोग इस पुल से होकर गुजरते हैं। समुद्र के बीच से निकलती ट्रेन का दृश्य बहुत ही रोमांचक होता है। इस पुल के अलावा सड़क मार्ग से जाने के लिए एक और पुल भी बनाया गया है। यहां दर्शन के लिए देश-विदेश से लाखों श्रद्धालु आते हैं। द्रविड़ शैली में बना यह मंदिर निर्माण कला और शिल्प कला की सुंदरता का प्रतीक है। रामेश्वरम मंदिर का गलियारा विश्व का सबसे बड़ा गलियारा है।

श्रीराम से है जुड़ा शिवलिंग का इतिहास

मान्यताओं के अनुसार, भगवान राम ने लंका विजय की कामना से लंका जाने से पहले भगवान शिव की पूजा करना चाहते थे. तब उन्होंने इस जगह पर महादेव के शिवलिंग की स्थापना कर इसकी पूजा अर्चना की थी. भगवान राम के नाम से ही इस जगह का नाम रामेश्वरम द्वीप और मंदिर का नाम रामेश्वरम पड़ा. पुराणों के अनुसार, रावण एक ब्राह्मण था और ब्राह्मण को मारने के दोष को खत्म करने के लिए भगवान राम भगवान शिव की पूजा करना चाहते थे, लेकिन तब इस द्वीप पर कोई मंदिर नहीं था, इसलिए हनुमान जी को कैलाश पर्वत से भगवान शिव के शिवलिंग लाने के लिए कहा गया. जब हनुमान जी समय पर शिवलिंग लेकर नहीं पहुंच पाए, तब माता सीता ने समुद्र की रेत को मुट्ठी में उठाकर शिवलिंग का निर्माण किया और इसी शिवलिंग की भगवान राम ने पूजा की. हनुमान जी के द्वारा लाए गए शिवलिंग को भी यहीं पर स्थापित कर दिया गया. यहां भगवान राम ने नल एवं नील नामक दो बलशाली वानरों की सहायता से लंका पर चढ़ाई करने से पूर्व एक पत्थरों के सेतु का निर्माण करवाया था, जिसे रामसेतु कहा गया। यह वही रामसेतु है, जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एडेम्स ब्रिज के नाम से जाना जाता है। नल और नील को एक ऋषि का श्राप था कि तुम दोनों जिस वस्तु को भी पानी में फेकोगे वह नहीं डूबेगी। यही श्राप सेतु बनाते समय भगवान राम के काम आया, इसलिए वह दोनों योद्धा पत्थरों को जल में डालते गए और एक विशाल सेतु का निर्माण हो गया। जिस पर चढ़कर वानर सेना ने लंका पहुंच विजय पाई। बाद में श्री राम ने विभीषण के अनुरोध पर धनुषकोटि नामक स्थान पर यह सेतु तोड़ दिया था। आज भी इस 30 मील (48 कि.मी.) लम्बे सेतु के अवशेष सागर में दिखाई देते हैं। रामेश्वरम मंदिर में ये पत्थर आज भी भक्तों के दर्शन के लिए रखे गए हैं।

रामेश्वरम मंदिर

यह मंदिर लगभग 1000 फुट लंबा और 650 फुट चैड़ा है. इस मंदिर में 40 फुट ऊंचे दो पत्थर इतनी बराबरी के साथ लगाए गए हैं कि इनको देखकर आश्चर्य होना स्वभाविक है. मान्यताओं के अनुसार, रामेश्वर मंदिर निर्माण में लगाए हुए पत्थरों को श्रीलंका से नावों के जरिए लाया गया था. रामेश्वरम मंदिर का गलियारा विश्व का सबसे लंबा गलियारा है. यह उत्तर से दक्षिण में 197 मीटर और पूर्व पश्चिम में 133 मीटर लंबा है. इस गलियारे के परकोटे की चैड़ाई 6 मीटर और ऊंचाई 9 मीटर है. मंदिर में प्रवेश द्वार 38.4 मीटर ऊंचा है. यह मंदिर लगभग 6 हेक्टेयर में बना हुआ है. रामेश्वरम में प्रचलित किवदंतियों की मानें तो इस मंदिर के अंदर सभी कुएं भगवान राम ने अपने बाणों से बनाए थे. ऐसा माना जाता है कि इनमें कई तीर्थ स्थलों का जल मिलाया गया था.शिव पुराण में कहा गया है कि रामेश्वरम में दर्शन मात्र से ब्रह्म हत्या जैसे पाप दूर हो जाते हैं। जो व्यक्ति यहां स्थित भगवान शिव के ज्योतिर्लिंग पर पूरी श्रद्धा से गंगाजल चढ़ाता है, उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। मंदिर में विशालाक्षी जी के गर्भ-गृह के निकट ही नौ ज्योतिर्लिंग हैं, जो लंकाधिपति विभीषण द्वारा स्थापित बताए जाते हैं। रामनाथस्वामी मंदिर के इष्टदेव की एक उपाधि है। यह मंदिर शिल्प, स्थापत्य व आस्था के लिहाज से भी देश के सबसे महान मंदिरों एवं पर्यटन

स्थलो में से एक है। इस मंदिर में भगवान शिव की मूर्ति पूजा नहीं होती है। चूंकि राम व शिव दोनों से मंदिर जुड़ा है, इसलिए उन अनूठे मंदिरों में से एक जो शैव व वैष्णव, दोनों के लिए समान रूप से श्रद्धा का प्रतीक है। हर साल लाखों की संख्या में भक्त इस मंदिर में दर्शन करने आते है। ब्रह्मोत्सव के उत्सव के दौरान रामनाथस्वामी मंदिर घूमने जाना सबसे बेहतरीन होता है। क्योंकि इस समय त्यौहार का समय होता है और कई देशों से पर्यटक मंदिर को देखने के लिए पहुंचते हैं। यह समय वर्ष के जून और जुलाई महीने में पड़ता है।

मणि दर्शन

कहते है सागर में स्नान कर ज्योतिर्लिंग पर गंगाजल चढ़ाने का बहुत महत्व है। सुबह 4 बजे से 6 बजे के बीच मणि दर्शन कराया जाता है। मणि दर्शन में स्फटिक के शिवलिंग के दर्शन कराए जाते हैं जो एक दिव्य ज्योति के रूप में दिखाई देते हैं। बड़ी संख्या में श्रद्धालु, बाबा भोले के मणि दर्शन कर अपने जीवन को धन्य समझते हैं।

24 कुंओं की महिमा

श्री रामेश्वरम में 24 कुंए हैं, जिन्हें तीर्थ कहकर सम्बोधित किया जाता है। इनमें से अब 22 ही शेष हैं। हर एक कुंए का अलग-अलग नाम भी हैं । ऐसी मान्यता है कि इन कुंओं के जल से स्नान करने पर व्यक्ति को उसके सभी पापों से मुक्ति मिलती है। यहां का जल मीठा होने से श्रद्धालु इसे बड़े चाव और भक्ति से पीते भी हैं। कुओं के बारे में माना जाता है कि ये कुंए भगवान श्री राम ने अपने अमोघ बाणों के द्वारा तैयार किये थे । उन्होंने अनेक तीर्थों का जल मंगाकर उन कुंओं में छोड़ा था जिसके कारण उन कुंओं को आज भी तीर्थ कहा जाता है।

अद्भुत है कलाकृतियां

मौजूदा मंदिर तीन सौ साल पहले बना था और यह द्रविड़ शिल्प का उत्कृष्ट नमूना है। इसके गर्भगृह के चारों तरफ तीन गलियारे हैं। आखिरी गलियारे को भारत का सबसे बड़ा मंदिर गलियारा माना जाता है। इसमें विभिन्न आकृतियों से सजे 1212 स्तंभ हैं। जहां आज मंदिर हैं, वहीं पर राम ने लंका युद्ध में विजय प्राप्त करने के बाद शिव की आराधना में यज्ञ किया था। इस मंदिर में जो सबसे सुंदर कलाकारी देखने को मिलता है वह है मंदिर के दीवारों पर खोद कर बनाई गई पत्थरों की मूर्तियां और डिजाइन। दीवारों पर की गई नक्काशी देखने में बहुत ही सुंदर दिखती है और इतिहास के महान कला को दशार्ती है। मंदिर का क्षेत्र लगभग 15 एकड का है। इन कलाकृतियों की खूबी यह है कि वर्षों पुरानी होने के बावजूद ये आजतक अपनी चमक-दमक बरकरार रखे हुए हैं। विदेशी सैलानियों के लिए तो ये कलाकृतियां अद्भुत, अकल्पनीय एवं अविश्वसनीय हैं। इसका प्रवेश-द्वार चालीस फीट ऊंचा है। प्राकार में और मंदिर के अंदर सैकड़ों विशाल खंभे हैं, जो देखने में एक-जैसे लगते है परंतु पास से देखने पर पता चलता है हर खंभे पर बेल-बूटे की अलग-अलग कारीगरी है।

रामेश्वरम शंखरुपी द्वीप है

रामेश्वरम एक सुंदर शंख के आकार का द्वीप है। कहते हैं कि काफी पहले यह सकल जंबूद्वीप भूमि से जुड़ा हुआ था परंतु बाद में सागर की लहरों और सुनामी के कारण मुख्य भारत भूमि से यह कटकर अलग द्वीप बन गया। रामनाथ की मूर्ति के चारों और परिक्रमा करने के लिए तीन प्राकार बने हुए है। इनमें तीसरा प्राकार सौ साल पहले पूरा हुआ। इस प्राकार की लंबाई चार सौ फुट से अधिक है। दोनों ओर पांच फुट ऊंचा और करीब आठ फुट चैड़ा चबूतरा बना हुआ है। चबूतरों के एक ओर पत्थर के बड़े-बड़े खंभों की लम्बी कतारें खड़ी हैं। प्राकार के एक सिरे पर खड़े होकर देखने पर ऐसा लगता है मानों सैकड़ों तोरण-द्वार स्वागत करने के लिए बनाए गये हैं। इन खंभों की अद्भुत कारीगरी देखकर विदेशी भी दंग रह जाते हैं। अगर हम अलंकरण के विषय में बात करें तो मंदिर में पल्लव, त्रावणकोर, रामनतपुरम, मैसूर और पुदुक्कोट्टई राज्यों का अलग-अलग रंग देखने को मिलता है।

विशेषताएं

पुराणों में रामेश्वरम् का नाम गंधमादन है। रामेश्वरम का मुख्य मंदिर 120 फुट ऊंचा है। रामेश्वरम् से थोड़ी ही दूर पर जटा तीर्थ नामक कुंड है। किंवदंती के अनुसार श्री राम जी ने लंका युद्ध के पश्चात अपने केशों का प्रक्षालन किया था। श्रीराम ने यहां नवग्रह स्थापन किया था। सेतुबंध यहीं से प्रारंभ हुआ, अतः यह मूल सेतु है। यहीं देवी ने महिषासुर का वध किया था। रामेश्वरम से लगभग तीस किलोमीटर की दूरी पर धनुष्कोटि नाम स्थान है। यहां अरब सागर और हिंद महासागर का संगम होने के कारण श्राद्ध तीर्थ मानकर पितृकर्म करने का विधान है।

पौराणिक मान्यताएं

रामायण के अनुसार, राम जो भगवान विष्णु के सातवें अवतार थे, ने यहां भगवान शिव की प्रार्थना की थी और उनसे अपने द्वारा की गयी ब्राह्मण हत्या, जो रावण से युद्ध के दौरान हुई थी के पाप से दोषमुक्त करने के लिए वरदान मांगा। राम शिव जी की उपासना करने के लिए विश्व का सबसे बड़ा शिवलिंग चाहते थे। तो उन्होंने अपनी वानर सेना के सेनापति हनुमान जी को आज्ञा दी की वे हिमालय से शिवलिंग ले कर आये। क्योकि हनुमान जी को शिवलिंग लाने में अधिक समय लग रहा था, राम जी की पत्नी सीता जी ने समुद्र के किनारे पड़ी रेत से छोटे से शिवलिंग का निर्माण किया जिसे रामलिंग कहा गया और मंदिर के गर्भ गृह में रखा गया है। जब भगवान अंजनेय वापस लौटे तो उन्हें यह देखकर बहुत दुख लगा। उनके दुख को देखकर भगवान श्रीराम ने उस लिंग का नाम रखा वैश्वलिंगम रखा। इसी कारण रामनाथस्वामी मंदिर को वैष्णववाद और शैववाद दोनों से जोड़ा गया है। इतिहासकारों का मानना है रामेश्वरम का रामनाथस्वामी मंदिर 12वीं शताब्दी का है। श्रीलंका के राजा पराक्रम बाहू ने मूर्ति के चारों ओर एक मजबूत संरचना का निर्माण करने का प्रयास किया जो सेतुपथी नामक एक शासक के द्वारा पूर्ण किया गया जो रामनाथपुरम के निवासी थी।

गन्धमादन पर्वत

रामेश्वरम् शहर से करीब डेढ़ मील उत्तर-पूर्व में गंधमादन पर्वत नाम की एक छोटी-सी पहाड़ी है। हनुमानजी ने इसी पर्वत से समुद्र को लांघने के लिए छलांग मारी थी। बाद में राम ने लंका पर चढ़ाई करने के लिए यहीं पर विशाल सेना संगठित की थी। इस पर्वत पर एक सुंदर मंदिर बना हुआ है, जहां श्रीराम के चरण-चिन्हों की पूजा की जाती है। इसे पादुका मंदिर कहते हैं। रामनाथ के मंदिर के चारों ओर दूर तक कोई पहाड़ नहीं है, जहां से पत्थर आसानी से लाये जा सकें। गंधमादन पर्वत तो नाममात्र का है। यह वास्तव में एक टीला है और उसमें से एक विशाल मंदिर के लिए जरूरी पत्थर नहीं निकल सकते। रामेश्वरम् के मंदिर में जो कई लाख टन के पत्थर लगे हैं, वे सब बहुत दूर-दूर से नावों में लादकर लाये गए हैं। रामनाथ जी के मंदिर के भीतरी भाग में एक तरह का चिकना काला पत्थर लगा है। कहते हैं, ये सब पत्थर लंका से लाये गए थे। रामेश्वरम् के समुद्र में तरह-तरह की कोड़ियां, शंख और सीपें मिलती है। कहीं-कहीं सफेद रंग का बड़ियास मूंगा भी मिलता है।

भागलपुर ज़िले में चली विकसित भारत संकल्प यात्रा रथ

केन्द्रीय योजनाओं के बारे में लोगों को दी गयी जानकारी

ड्रोन से खेतों में कीटनाशकों के छिड़काव की नई तकनीक का डेमो दिखाया गया

चिकित्सा शिविर लगा लोगों का नि:शुल्क इलाज और मुफ्त दवा का हुआ वितरण

केंद्र सरकार द्वारा चलाई जा रही जन कल्याणकारी योजनाओं को घर-घर तक पहुँचाने और उनका लाभ आम जनता तक सुनिश्चित किये जाने की महत्वपूर्ण कार्यक्रम विकसित भारत संकल्प यात्रा रथह्ल रविवार (07जनवरी, 2024) को भागलपुर ज़िले के इस्माइलपुर के काँटीधार कमलाकुंड,छट्टू सिंह टोला, गोराडीह के चकदरिया गांव उस्तु और कहलगाँव के प्रष्ठडीह ग्राम पंचायत में चली। विकसित भारत संकल्प यात्रा रथह्ल पहुँचते ही भारी संख्या में आम लोग और ग्रामीण, रथ को देखने और जानकारी लेने पहुंचे।

कार्यक्रम में डिस्प्ले वैन के माध्यम से प्रधानमंत्री का विकसित भारत के संकल्प का वीडियो संदेश चलाया गया। जिसे आम जनों द्वारा देखा गया। साथ ही साथ कार्यक्रम में उपस्थित आम जनता से अधिक से अधिक संख्या में योजनाओं का लाभ लेने की अपील की गई। विकसित भारत संकल्प यात्रा रथह्ल के माध्यम से केंद्र सरकार द्वारा जन कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी वीडियो के माधयम से दी गई, साथ ही, प्रचार सामग्रियों का निःशुल्क वितरण ग्रामीणों और अन्य लोगों के बीच किया गया।

मौके पर रथ के साथ आये अधिकारियों ने सभी ग्रामीणों और अन्य लोगों को भारत को 2047 तक आत्मनिर्भर और विकसित राष्ट्र बनाने, गुलामी की मानसिकता को जड़ से उखाड़ फेंकने, देश की समृद्ध विरासत पर गर्व करेंने, भारत की एकता को सुदृढ़ करेंने, देश की रक्षा करने वालो को सम्मान करने तथा नागरिक होने का कर्तव्य निभाने को लेकर शपथ दिलाई। इस अवसर सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय,नाबार्ड, स्वास्थ्य विभाग, ग्रामीण बैंक सहित अन्य विभाग के अधिकारी मौजूद रहे।

कार्यक्रम स्थल पर आयुष्मान भारत, उज्ज्वला योजना, पीएम किसान योजना, मोटा अनाज तथा अन्य सरकारी योजनाओं की जानकारी चलचित्र और सम्बंधित अधिकारियों द्वारा दी गई, इस अवसर पर भारत सरकार की योजनाओं के लाभार्थी भी कार्यक्रम स्थल पर आये, उन्होंने सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं की सार्वजानिक तौर पर प्रशांस करते हुए अपनी बातें भी रखी। मौके पर चिकित्सा शिविर लगा कर लोगों का निःशुल्क इलाज और मुफ्त दवा का वितरण किया गया। जबकि मोटा अनाज पर विशेष

जानकारी ग्रामीणों एवं लोगों को दी गई और अधिक से अधिक मोटा अनाज उपजाने तथा प्रयोग में लाने का आह्वान किया गया। साथ ही ड्रोन से खेतों में कीटनाशकों के छिड़काव की नई तकनीक का डेमो दिखाया गया। विकसित भारत संकल्प यात्रा रथह्ल का उद्देश्य है इसके मध्यम से केंद्र सरकार की कल्याणकारी योजनाओं के बारे में ग्रामीणों को जानकारी देना। 'विकसित भारत संकल्प यात्रा', भारत सरकार की अब तक की सबसे व्यापक पहुंच वाली पहल है।

2024 में और बढ़ेगी योगी आदित्यनाथ की लोकप्रियता

तीखे तेवर, सीधी बात या यू कहें बिना लाग लपेट के जनहित के लिए एक के बाद एक ताबड़तोड़ लिए जा रहे फैसलें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की लोकप्रियता में चार चांद लगा रहे हैं। बात चाहे मुख्तार-अतीक जैसे दुर्दांत माफियायों के खिलाफ दिन-रात चलाएं गए बुलडोजर अभियान की हो या कुंभ से लेकर श्रीराम मंदिर निर्माण सहित यूपी के मूलभुत व आधारभूत विकास की हो या फिल्म इंडस्ट्री लगाने की हो, सबकुछ जनता के मुताबिक हो रहे हैं। लेकिन ज्योतिष विदों का मानना है कि की नए साल मे कुंडली बना रहे हैं कई योग उनके पक्ष में है। मतलब साफ हे तमाम संघर्षो के बावजूद योगी आदित्यनाथ की प्रतिष्ठा और सम्मान में निरंतर वृद्धि होगी। या यूं कहे 2017 से 2023 के मुकाबले 2024 में योगी की लोकप्रियता और बढ़ेगी। ऐसे में बड़ा सवाल तो यही है क्या योगी आदित्यनाथ के यूपी मॉडल में बीजेपी को दिखता है भविष्य? योगी आदित्यनाथ की महाराथ सबसे बड़ी इसी में है कि ये जाति समीकरणों को चकनाचूर करते हुए 80- 20 कर देते हैं.

सुरेश गांधी

बेशक, बात चाहे निकाय चुनाव हो या मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ व राजस्थान में ताबड़तोड़ की गयी चुनावी रैलियों की हो माफियाओं के खिलाफ बुलडोजर संस्कृति हो या पूरे यूपी में समानभाव से किए जा रहे विकास कार्य हो, सबकुछ जनता के मुताबिक हो रहा है। मतलब साफ है अभी भी योगी मैजिक खत्म नहीं हुआ है. उनके करिश्मे की बदौलत बीजेपी 2024 में भी कमल लिखाने में सफल होने वाली है। योगी की मानें तो पार्टी 2024 के लोकसभा चुनाव में यूपी की सभी 80 सीटें जीतेगी। देखा जाएं तोयूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ का रुतबा, देश के सबसे लोकप्रिय मुख्यमंत्रियों में पहली पसंद है। कानून व्यवस्था को लेकर किए गए फैसलों की वजह से उन्हें लोगों ने ज्यादा पसंद किया है. कानून व्यवस्था के साथ हिन्दुत्व का एजेंडे को लेकर उन्होंने नया मॉडल बनाया है.

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अपराधियों के प्रति जीरो टॉलरेंस और मजबूत कानून व्यवस्था को लेकर जाने जाते हैं. अपराधियों और माफियाओं के खिलाफ बुलडोजर तो उनकी पहचान बन चुका है. सीएम योगी का यही स्टाइल अब लोगों को खूब पसंद आ रहा है. उनका लोकप्रियता का जलवा ये है कि वो देश के सबसे लोकप्रिय मुख्यमंत्री

बन गए हैं। तमाम सर्वे रिपोर्टों ने भी माना है कि सीएम योगी देश के सबसे लोकप्रिय मुख्यमंत्री की सूची में टॉप पर रहे हैं. इसकी बड़ी वजह योगी के कानून व्यवस्था को लेकर किए गए फैसले है। उन्होंने कानून व्यवस्था को लेकर सख्त रुख और हिन्दुत्व का एजेंडा साथ लेकर चलने के साथ एक नया मॉडल तैयार किया है. जो लोगों को पसंद आ रहा है. लोगों का मानना है कि जहां वो अपराधियों पर लगाम कसने के लिए बुलडोजर का इस्तेमाल करने से भी पीछे नहीं हटते हैं तो वहीं दूसरी तरफ यूपी में निवेश बढ़ाने के लिए भी उनके द्वारा जो प्रयास किए जा रहे हैं। ट्विटर पर उनके फॉलोवर्स की संख्या 3.5 करोड़ पार हो चुकी है। हाल ही में माइक्रोब्लॉगिंग साइट ट्विटर पर सीएम योगी के आधिकारिक ट्विटर हैंडल माय योगी आदित्यनाथ ने 25 मिलियन यानी 2.5 करोड़ फॉलोवर्स के आंकड़े को पार कर लिया है. उनकी लोकप्रियता में तेजी से इजाफा हो रहा है. सोशल मीडिया पर उन्होंने लोकप्रियता का नया कीर्तिमान स्थापित किया है. माइक्रोब्लॉगिंग साइट ट्विटर पर सीएम योगी के आधिकारिक ट्विटर हैंडल माय योगी आदित्यनाथ ने 25 मिलियन यानी 2.5 करोड़ फॉलोवर्स के आंकड़े को पार कर लिया. यह वो आंकड़ा है, जहां यूपी ही नहीं देश के बड़े-बड़े नेता और सेलेब्रिटी अब तक नहीं पहुंच सके हैं. ट्विटर पर इस संख्या को पार करने वाले वह पहले सीएम भी हैं. सीएम योगी ने यह आंकड़ा 8 वर्षो के अंतराल में प्राप्त किया है. उन्होंने सितंबर 2015 में ट्विटर पर अपने आधिकारिक हैंडल की शुरूआत की थी. चाहे वो गोकशी रोकने का ऑर्डिनेंस हो, या एनकाउंटर और बुलडोजर चलना हो. जब सीएए को लेकर विरोध हुआ था तब उस पर जबरदस्त क्रैक डाउन हुआ. यह अलग बात है कि कुछ लोग आरोप लगाते हैं कि वो खास लोगों पर कार्रवाई करते हैं लेकिन वो उनके एजेंडे का हिस्सा है. योगी आदित्यनाथ के यूपी मॉडल में एक और खास बात है जो बीजेपी शासित किसी और राज्य में दिखाई नहीं देती. आलोचक उन्हें एक खास जाति का समर्थक बताते हैं लेकिन ये आरोप का उनके राजनीतिक ग्राफ पर असर होता नहीं दिखता. इसकी वजह है, उनका भगवा परिधान. वो पीठाधीश्वर हैं गोरक्षनाथ पीठ के. वो भले ही सवर्ण हैं लेकिन उस पीठ की फॉलोइंग पिछड़ों में काफी है. दूसरे भगवा वेश की वजह से पिछड़े नेतृत्व की बात डाइल्यूट हो जाती है. फिर यूपी में अब मुलायम सिंह यादव और कल्याण सिंह के कद का कोई पिछड़ा नेता भी नहीं है. मायावती का दलितों में आधार घट रहा है. यूपी में रामजन्मभूमि आंदोलन के दौरान से ही ओबीसी और पिछड़ों का एक बड़ा वर्ग बीजेपी के साथ जुड़ा हुआ है. बीजेपी उन्हें पद भी देती है,

बता दें, उस वक्त योगी सांसद थे. 2017 में यूपी की सत्ता संभालने के बाद उन्होंने प्रदेश में विकास और सुशासन के साथ ही कानून व्यवस्था में सुधार की लकीर खींच कर दिखाया, उसके बाद उनकी लोकप्रियता में गुणात्मक वृद्धि देखी गई. ट्विटर पर 2.5 करोड़ फॉलोवर्स का आंकड़ा छूने के साथ ही सीएम योगी उस क्लब का हिस्सा बन गए, जिसमें पीएम मोदी और अमित शाह जैसे दिग्गज नेता भी शामिल हैं.सीएम योगी ऑफलाइन के साथ ही ऑनलाइन भी लोगों से संवाद करते रहते हैं. वह ट्विटर समेत फेसबुक, इंस्टाग्राम और स्वदेशी सोशल मीडिया एप कू पर काफी सक्रिय हैं. सीएम योगी आदित्यनाथ सोशल मीडिया एक्स पर देश के दूसरे सबसे चर्चित राजनेता है। सोशल मीडिया हैशटैग ट्रैकिंग टूल ट्वीट बाइंडर की ताजा रैंकिंग जारी की है। लोकप्रियता के मामले में सीएम योगी राजनेताओं ही नहीं अन्य बड़ी हस्तियों से भी कहीं आगे हैं। पाकिस्तान से लेकर ऑस्ट्रेलिया, इजरायल, अमेरिका तक उनकी चर्चा है। ट्वीट बाइंडर की ओर से जारी ताजा रैंकिंग के अनुसार अक्टूबर 2023 में पीएम मोदी के बाद सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर जिस राजनेता के अकाउंट की सर्वाधिक चर्चा हुई है वो सीएम योगी आदित्यनाथ हैं। ट्वीट बाइंडर की इस रैंकिंग को भारत में एक्स यूजर्स द्वारा 1 अक्टूबर से 31 अक्टूबर तक पोस्ट की संख्या के आधार पर तैयार की है। उल्लेखनीय है कि ट्वीट बाइंडर एक हैशटैग एनालिटिक्स और फॉलोअर ट्रैकिंग टूल है। यह ट्विटर हैशटैग एनालिटिक्स और ट्विटर मॉनिटरिंग के लिए डिजाइन किया गया है। लोकप्रियता के मामले में सीएम योगी कांग्रेस के सांसद राहुल गांधी से कहीं आगे हैं।

देश-विदेशों में भी योगी की धूम

अपनी लोक कल्याणकारी नीतियों, अपराध और अपराधियों के प्रति जीरो टॉलरेंस की शैली के चलते प्रदेश ही नहीं बल्कि देश और देश की सीमाओं को लांघते हुए वैश्विक पटल पर सीएम योगी की पहुंच बढ़ती जा रही है। पड़ोसी देश पाकिस्तान से लेकर ऑस्ट्रेलिया, इजरायल, अमेरिका और इंग्लैंड तक सीएम योगी के नाम की धूम है। देश के पांच राज्यों में चल रहे विधान सभा चुनाव प्रचार में योगी आदित्यनाथ प्रधानमंत्री मोदी के बाद सर्वाधिक

डिमांडिंग शख्सियत हैं।

योगी की साख

भाजपा को साल 2017 के यूपी विधानसभा चुनाव में बहुमत मिला. करीब 15 साल बाद बीजेपी ने सत्ता में वापसी की थी. सरकार का मुखिया कौन होगा यानी मुख्यमंत्री कौन बनेगा, इस सवाल के जवाब में कई नाम सामने थे. लेकिन, फाइनल मुहर लगी योगी आदित्यनाथ के नाम पर. बहुत से लोगों के लिए ये फैसला एक सरप्राइज था. तब बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे अमित शाह ने भी कुछ साल पहले इसका जिक्र किया था, जब योगी जी को मुख्यमंत्री बनाया तो किसी को कल्पना नहीं थी कि योगी जी मुख्यमंत्री बनेंगे. ढेर सारे लोगों के फोन आए कि योगी जी ने कभी म्युनसपिलिटी भी नहीं चलाई. वास्तविकता थी. नहीं चलाई थी. योगी जी कभी किसी सरकार में मंत्री नहीं रहे. अमित शाह के मुताबिक उस वक्त उनसे और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को कुछ अलग सलाह दी गई थी, योगी जी संन्यासी हैं, पीठाधीश हैं और इतने बड़े प्रदेश का आप उनको मुख्यमंत्री बना रहे हो. लेकिन, सात साल बाद स्थिति पूरी तरह बदल गई है. अब योगी आदित्यनाथ में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का उत्तराधिकारी तलाशने वालों की संख्या बढ़ती नजर आ रही है. ऐसे लोगों में सिर्फ. योगी आदित्यनाथ के उत्साही समर्थक नहीं हैं. बीजेपी के कई कार्यकर्ता और राजनीतिक विश्लेषक भी दावा करते हैं कि योगी का कद पार्टी में अपने समकालीन नेताओं से काफी ऊंचा हो गया है. योगी जी का स्टेटस सेकेंड अमंग इक्वल्स यानी पार्टी में दूसरे नंबर का हो गया है. उन्होंने सबको पीछे छोड़ दिया है.

पूरे देश में योगी मॉडल की मांग

मुख्यमंत्री की कुर्सी संभालने के पहले योगी आदित्यनाथ पांच बार लोकसभा के सांसद चुने जा चुके थे लेकिन तब उनका प्रभाव क्षेत्र सीमित था. मुख्यमंत्री बनने के बाद योगी आदित्यनाथ के कामकाज ने जिस यूपी मॉडल को खड़ा किया, उसकी चर्चा अब उसी तरह होती है जैसे साल 2014 के पहले बीजेपी शासित राज्यों के मुख्यमंत्री और पार्टी के कार्यकर्ता नरेंद्र मोदी के गुजरात मॉडल का जिक्र करते थे. मध्य प्रदेश और कर्नाटक (जब बीजेपी की सरकार थी) भी यूपी मॉडल का काफी जिक्र करते रहे हैं.

पार्टी को चुनाव दर चुनाव मिलने वाली कामयाबी की वजह से हर तरफ योगी आदित्यनाथ के यूपी मॉडल की बात हो रही है. देखा जाएं तो किसी भी व्यक्ति का मूल्यांकन रिजल्ट से होता है. योगी आदित्यनाथ के साथ भी यही बात है. वो 2017 में सत्ता में आए. साल 2019 के लोकसभा चुनाव में अच्छा रिजल्ट दिया. तब सपा, बसपा और आरएलडी का गठबंधन था. उस गठबंधन के मुकाबले 64 सीट जीतना (सहयोगियों के साथ) बड़ी उपलब्धि थी. तब लोगों को लग रहा था कि बीजेपी का सफाया हो जाएगा. लेकिन 2022 की प्रचंड जीत के साथ दूसरी बार पूर्ण बहुमत की सरकार बनाकर योगी ने साबित कर दिया कि यूपी का विकास वे ही कर सकते है। निकाय चुनाव में बीजेपी ने सारे बड़े शहरों में क्लीन स्वीप किया. ये रिपोर्ट कार्ड है उनकी लोकप्रियता बताने के लिए काफी है। आज की तारीख में प्रदेश में योगी आदित्यनाथ दूसरे सभी नेताओं से आगे हैं. जहां तक यूपी का सवाल है यहां नरेंद्र मोदी से भी ज्यादा योगी आदित्यनाथ का असर है. नरेंद्र मोदी (2024 में) जहां फिर से पहुंचना चाहते हैं, उसके लिए यूपी जरूरी है और योगी भी. इसमें कोई शक नहीं है कि योगी आदित्यनाथ ने अपने आपको जिस तरह से आगे बढ़ाया है, वो काबिले तारीफ है.

2024 की चुनौती

विपक्ष को हाशिए पर धकेलने वाले योगी आदित्यनाथ की अगली परीक्षा साल 2024 में लोकसभा के आम चुनाव के दौरान होगी. तब नरेंद्र मोदी और बीजेपी के साथ विपक्षी दलों के लिए बहुत कुछ दांव पर होगा। लेकिन सच यह है कि योगी आदित्यनाथ ने सपोर्ट बेस सॉलिड बना लिया है. विपक्ष बिल्कुल कमजोर है. अखिलेश यादव सॉफ्ट हिंदुत्व प्ले करने लगे हैं. ये भी योगी के हक में जाता है, जब आप दूसरे की पिच पर खेलेंगे तो कैसे जीतेंगे. मतलब साफ है यूपी में कोई बड़ी चुनौती बीजेपी के सामने नहीं है. 2019 का आपको ध्यान है, तब सपा बसपा और आरएलडी का गठबंधन था लेकिन बीजेपी बहुत आगे रही. हालांकि, उन्हें ये नहीं लगता कि योगी आदित्यनाथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए कोई चुनौती बन सकते हैं.

राज्यपाल ने कश्मीर के युवा प्रतिभागियों के साथ मुलाकात की

कश्मीर और बिहार सहित विभिन्न राज्यों की अलग-अलग संस्कृति हैं परंतु वे सभी भारतीय संस्कृति की ही इंद्रधनुषी छटायें है। हम सभी भारतमाता की संतान होने के कारण आपस में भाई-भाई हैं और सारी विभिन्नताओं के बावजूद हम एक हैं। हमें इस भाव को सुदृढ़ करना है। - यह बातें माननीय राज्यपाल

श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने राजभवन के दरबार हॉल में कश्मीरी युवा विनिमय कार्यक्रम, 2023-24 के अंतर्गत कश्मीर घाटी के छः जिलों यथा-अनंतनाग, कुपवाड़ा, बारामूला, बडगाम, श्रीनगर एवं पुलवामा से आए युवा प्रतिभागियों के साथ भेंटवार्ता के दौरान कही।

उन्होंने कहा कि कश्मीर के प्रति सभी भारतीयों का विशेष आकर्षण है। यह वहाँ की सिर्फ प्राकृतिक सुंदरता और खूबसूरत वादियों को लेकर ही नहीं, बल्कि कश्मीरी लोगों के प्रेमपूर्ण व्यवहार और उनकी आत्मीयता के कारण है। जब कश्मीर में कोई अप्रिय घटना होती है तब कन्याकुमारी सहित भारत के अन्य सभी क्षेत्रों के लोगों को पीड़ा होती है। इसी प्रकार कश्मीर के लोग भी भारत के अन्य जगहों पर होनेवाली अप्रिय घटनाओं से दुःखी होते हैं। ऐसा हमारी एक-दूसरे के प्रति आत्मीयता के कारण होता है। कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है। हम सब भारतवासी एक हैं और इसी एकता में भारत की श्रेष्ठता है।

राज्यपाल ने कहा कि बिहार की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत काफी समृद्ध है। इस राज्य का संबंध भगवान बुद्ध, महावीर, चाणक्य, चन्द्रगुप्त मौर्य और सम्राट अशोक जैसे महापुरूषों से रहा है। यहाँ माता सीता, गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज और भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद का जन्म हुआ था। कश्मीर की संस्कृति भी काफी समृद्ध है। सभी राज्यों की संस्कृति भारत की ही संस्कृति है। उन्होंने कहा कि बिहार के लोग काफी अच्छे हैं और अन्य राज्यों के लोगों से प्रेम करते हैं। उन्होंने कश्मीरी युवाओं से कहा कि वे बिहार की अच्छाईयों के बारे में कश्मीर एवं अन्य राज्यों के लोगों को बताएँ। इस अवसर पर राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री रॉबर्ट एल॰ चोंग्थू, नेहरू युवा केन्द्र के राज्य निदेशक श्री अंशुमान प्रसाद दास एवं अन्य पदाधिकारीगण, कश्मीर के युवा प्रतिभागीगण, राज्यपाल सचिवालय के पदाधिकारीगण एवं कर्मीगण तथा अन्य लोग उपस्थित थे।

जब खून से सनी थी अयोध्या की सड़के...

2 नवंबर 1990 को विनय कटियार के नेतृत्व में दिगंबर अखाड़े की तरफ से हनुमानगढ़ी की ओर जो कारसेवक बढ़ रहे थे, उनमें 22 साल के रामकुमार कोठारी और 20 साल के शरद कोठारी भी शामिल थे। सुरक्षा बलों ने फायरिंग शुरू की तो दोनों पीछे हटकर एक घर में जा छिपे। सीआरपीएफ के एक इंस्पेक्टर ने शरद को घर से बाहर निकाल सड़क पर बिठाया और सिर को गोली से उड़ा दिया। छोटे भाई के साथ ऐसा होते देख रामकुमार भी कूद पड़े। इंस्पेक्टर की गोली रामकुमार के गले को भी पार कर गई। उस दिन मृतकों की संख्या 45 बतायी गयी, लेकिन हकीकत इसके उलट थी, पूरी सरजू खूनों से लाल हो गयी थी। ट्रकों में भरकर शव फेंके जा रहे थे। हालांकि आधिकारिक तौर पर बाद में मृतकों की संख्या 17 बताई गई। लेकिन घटना के चश्मदीदों ने कभी भी इस संख्या को सही नहीं माना। और इस घटना के बाद मुलायम सिंह यादव को मुल्ला मुलायम का खिताब जरुर मिल गया। 30 अक्टूबर 1990 के दिन भी कारसेवकों पर गोलियां बरसाई गई थी। आधिकारिक आंकड़े 30 अक्टूबर को 5 रामभक्तों के बलिदान की पुष्टि करते हैं। 30 अक्टूबर और 2 नवंबर 1990 को अयोध्या जय सियाराम और हर-हर महादेव के जयकारे से गूंजायमान था। 22 जनवरी 2024 यह सुनिश्चित करेगा कि अयोध्या में बस राम का नाम हो। 2024 के इस 22 जनवरी का महत्व हिंदू होकर ही जाना जा सकता है

सुरेश गांधी

आज हम रामजन्मभूमि पर भव्य राम मंदिर को आकार लेते देख रहे हैं, प्राण-प्रतिष्ठा की तिथि भी तय हो गया है। लेकिन यह यात्रा उतनी भी सहज नहीं रही है जितनी आज दिखती है। यह संघर्ष 1528 से ही शुरू हो गया था जब इस्लामी आक्रांता बाबर के सेनापति मीर बाकी ने अयोध्या में भगवान राम के जन्मस्थान पर मस्जिद का निर्माण करवाया। 9 नवम्बर 2019 को सुप्रीम कोर्ट ने बताया कि पूरी जमीन रामलला की है, मंदिर वहीं बनेगा। लेकिन इस मोड़ तक पहुंचने के क्रम में न जाने कितने रामभक्तों ने खुद को बलिदान कर

लिया। कितनी बार अयोध्या की गलियों के रामभक्तों के रक्त से लाल कर दिया गया। ऐसी ही एक तारीख 2 नवंबर 1990 की है। 2 नवंबर 1990 को तत्कालीन आईजी एसएमपी सिन्हा ने अपने मातहतों से कहा कि लखनऊ से साफ निर्देश है कि भीड़ किसी भी कीमत पर सड़कों पर नहीं बैठेगी। सुबह के नौ बजे थे। कार्तिक पूर्णिमा पर सरयू में स्नान कर साधु और रामभक्त कारसेवा के लिए रामजन्मभूमि की ओर बढ़ रहे थे। पुलिस ने घेरा बनाकर रोक दिया। वे जहां थे, वहीं सत्याग्रह पर बैठ गए। रामधुनी में रम गए। फिर आईजी ने ऑर्डर दिया और सुरक्षा बल एक्शन में आ गए। आँसू गैस के गोले दागे गए। लाठियाँ बरसाई गईं। लेकिन रामधुन की आवाज बुलंद रही।

रामभक्त न उत्तेजित हुए, न डरे और न घबराए। अचानक बिना चेतावनी के उन पर फायरिंग शुरू कर दी गई। गलियों में रामभक्तों को दौड़ा-दौड़ा कर निशाना बनाया गया। राजस्थान के श्रीगंगानगर का एक कारसेवक, जिसका नाम पता नहीं चल पाया है, गोली लगते ही गिर पड़ा और उसने अपने खून से सड़क पर लिखा सीताराम। पता नहीं यह उसका नाम था या भगवान का स्मरण। मगर सड़क पर गिरने के बाद भी सीआरपीएफ की टुकड़ी ने उसकी खोपड़ी पर सात गोलियां मारी।ह्व पुलिस और सुरक्षा बल न खुद घायलों को उठा रहे थे और न किसी दूसरे को उनकी मदद करने दे रहे थे। फायरिंग का लिखित आदेश नहीं था। फायरिंग के बाद जिला मजिस्ट्रेट से ऑर्डर पर साइन कराया गया। किसी भी रामभक्त के पैर में गोली नहीं मारी गई। सबके सिर और सीने में गोली लगी। तुलसी चैराहा खून से रंग गया। दिगंबर अखाड़े के बाहर कोठारी बंधुओं को खींचकर गोली मारी गई। राम अचल गुप्ता का अखंड रामधुन बंद नहीं हो रहा था, उन्हें पीछे से गोली मारी गई। रामनंदी दिगंबर अखाड़े में घुसकर साधुओं पर फायरिंग की गई। कोतवाली के सामने वाले मंदिर के पुजारी को गोली मारकर मौत के घाट उतार दिया गया। रामबाग के ऊपर से एक साधु आँसू गैस से परेशान लोगों के लिए बाल्टी से पानी फेंक रहे थे। उन्हें गोली मारी गई और वह छत से नीचे आ गिरे। फायरिंग के बाद सड़कों और गलियों में पड़े रामभक्तों के शव बोरियों में भरकर ले जाए गए।

अवध नगरी अयोध्या मूलरूप से मंदिरों का शहर रहा है. इसे भगवान श्रीराम के पूर्वज विवस्वान (सूर्य) पुत्र वैवस्वत मनु द्वारा बसाया गया था. इसलिए अयोध्या नगरी में सूर्यवंशी राजाओं का राज महाभारत काल तक रहा. अयोध्या नगरी के दशरथ महल में ही प्रभु श्रीराम का जन्म हुआ. धन्य-धान्य और रत्न-आभूषणों से भरी इस नगरी की अतुलनीय छटा और खूबसूरत इमारतों का वर्णन वाल्मीकि रामायण में भी मिलता है. इसलिए तो महर्षि वाल्मीकि ने रामायण में अयोध्या नगरी की शोभा की तुलना करते हुए इसे दूसरा इंद्रलोक कहा. लेकिन भगवान श्रीराम के जल समाधि लेने के बाद अयोध्या कुछ समय के लिए उजाड़ हो गई थी. कहा जाता है कि, रामजी के पुत्र कुश ने फिर से अयोध्या का पुनर्निर्माण कराया और इसके बाद सूर्यवंश की अगली 44 पीढ़ियों तक इसका अस्तित्व चरम पर रहा. इसके बाद महाभारत काल में हुए युद्ध के बाद भी अयोध्या फिर से उजाड़ हो गई. पौराणिक कथा-कहानियों के अनुसार प्राचीन काल में भगवान श्री राम के जल समाधि लेने के बाद और महाभारत युद्ध के बाद अयोध्या के उजाड़ होने और फिर से बसने का वर्णन मिलता है. लेकिन श्रीराम जन्म भूमि अयोध्या और यहां बने श्रीराम मंदिर को एक नहीं बल्कि कई बार आक्रमणों का सामना करना पड़ा. अयोध्या को नष्ट करने के लिए मुगलों द्वारा कई अभियान भी चलाए गए, मंदिर में बाबरी ढांचा खड़ा किया, भव्य मंदिर तोड़ मस्जिद बनवाए गए. लेकिन प्रभु श्रीराम की जन्मभूमि कभी नष्ट न हो सकी. वैसे तो अयोध्या नगरी का इतिहास त्रेतायुग से भी पुराना है.

करीब 500 साल के लंबे इंतजार और कड़ी लड़ाई के बाद आखिरकार 22 जनवरी 2024 को श्रीराम जन्म भूमि अयोध्या में भव्य राम मंदिर का अभिषेक समारोह आयोजित किया जाएगा. यह सनातन प्रेमियों के लिए भक्ति, खुशी और उत्साह का पल होगा. यह अवसर एक त्योहार के समान होगा. 22 जनवरी को राम मंदिर के अभिषेक व प्राण प्रतिष्ठा के बाद 24 जनवरी 2024 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा मंदिर का उद्घाटन किया जाएगा. फिर सभी भक्तगण मंदिर में रामलला के दर्शन कर पाएंगे.सनातन परिवार या जरूरी अधिकार रामलला के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम को भव्य बनाने के लिए तैयारियां शुरू हो चुकी हैं. बता दें कि अयोध्या में 2.7 एकड़ में राम मंदिर बन रहा है. इसकी ऊंचाई लगभग 162 फीट की होगी. इस पूरे मंदिर परिसर में भगवान राम के मंदिर के साथ ही और भी 6 मंदिर बनाए जा रहे हैं. मंदिर के मुख्य द्वार को सिंह द्वार के नाम से जाना जाएगा. प्रप्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के बाद जब आम जनता के लिए मंदिर को खोला जाएगा तो हर दिन डेढ़ लाख श्रद्धालुओं के आने की उम्मीद की जा रही हैं. साथ ही अयोध्या को भी रामायण के प्रतीक के रूप में सजाया जा रहा है. ऐसे में रामायण काल की सबसे बड़ी साक्षी राम की पैड़ी को सुंदर तरीके सजाया जा रहा है ताकि भक्त इस जगह के बारे में ऐतिहासिक दृष्टिकोण से जान सकें.

कोलकाता के कोठारी बंधु कारसेवा करने पहुंचे थे अयोध्या

कोलकाता के बड़ा बाजार के रहने वाले रामकुमार कोठारी (23 साल) और शरद कोठारी सगे भाई थे. दोनों भाई राष्ट्रीय स्वयंसेवक से जुड़े थे और नियमित तौर पर शाखा जाया करते थे. 1990 के अयोध्या राम मंदिर आंदोलन में दोनों भाइयों ने कार सेवा में शामिल होने का फैसला किया. उन दिनों अयोध्या में राममंदिर आंदोलन अपने चरम पर था. देश के कोने-कोने से लोग विश्व हिंदू परिषद के आव्हान पर अयोध्या में राममंदिर निर्माण के लिए हो रही कारसेवा में हिस्सा ले रहे थे. राम और शरद कोठारी ने 22 अक्टूबर की रात कोलकाता से ट्रेन पकड़ी. लेकिन अयोध्या जाने से लोगों को रोकने के

लिए पुलिस प्रशासन ने ट्रेन और बस सेवाएं रोक दी थीं. अयोध्या आकर राम और शरद कोठारी रुक गए. आगे का रास्ता तय करने के लिए उन्होंने टैक्सी पकड़ी. वो आजमगढ़ के फूलपुर कस्बे तक आ गए थे. यहां से आगे का रास्ता बंद था तो दोनों भाई पैदल ही अयोध्या की ओर निकल गए. उन्होंने 200 किमी का सफर पैदल ही तय किया. 25 अक्टूबर को फूलपुर से चले राम और शरद कोठारी 30 अक्टूबर की सुबह अयोध्या पहुंचे. राम और शरद कोठारी 30 अक्टूबर को अयोध्या के विवादित परिसर में पहुंचने वाले पहले लोगों में से थे. अयोध्या में कर्फ्यू लगा था. यूपी पीएसी के करीब 30 हजार जवान अयोध्या में तैनात थे. लेकिन कारसेवकों का जत्था अशोक सिंघल, उमा भारती और विनय कटियार जैसे नेताओं की अगुआई में विवादित परिसर की ओर बढ़ता चला जा रहा था. 30 अक्टूबर तक अयोध्या में लाखों कारसेवक इकट्ठा हो चुके थे.कारसेवकों के जत्थे ने विवादित परिसर के पास की पुलिस बैरिकेडिंग तोड़ दी थी. करीब 5 हजार कारसेवक विवादित परिसर में घुस गए. इसी बीच शरद कोठारी पुलिस को चकमा देता हुआ बाबरी मस्जिद की गुबंद पर चढ़ गया. उसके पीछे-पीछे रामकुमार कोठारी भी गुबंद पर पहुंच गया. दोनों भाइयों ने बाबरी मस्जिद की गुबंद पर भगवा लहरा दिया. इसके बाद भी दोनों भाई अयोध्या में हो रही कारसेवा में लगे रहे. 30 अक्टूबर को बाबरी मस्जिद की गुबंद पर भगवा लहराने के बाद 2 नवंबर को दोनों भाई विनय कटियार के नेतृत्व में हनुमानगढ़ी जा रहे थे. इसी बीच पुलिस ने फायरिंग कर दी. दोनों भाई पुलिस की फायरिंग से बचने के लिए लाल कोठी वाली गली के एक घर में छिप गए. थोड़ी देर बाद जब वो घर से बाहर आए तो पुलिस की गोली का शिकार हो गए. दोनों ने वहीं दम तोड़ दिया. राम कुमार और शरद कोठारी की बहन की पूर्णिमा कोठारी की दिसंबर के दूसरे हफ्ते में शादी होनी थी. रामकुमार और शरद कोठारी ने अपने पिता हीरालाल कोठारी से कारसेवा में जाने की इजाजत मांगी तो उन्होंने मना कर दिया. बहुत कहने पर हीरालाल ने उन्हें अयोध्या से तुरंत लौट आने की बात पर जाने की रजामंदी दी. हीरालाल ने अपने दोनों बेटों को अपना हालचाल पोस्टकार्ड के जरिए लिखते रहने को कहा था. दोनों भाई अपनी बहन को खत लिखा करते थे. दोनों की मौत की खबर जब कोलकाता पहुंची तो पूरे परिवार में सन्नाटा पसर गया. पुलिस ने दोनों के शव परिवार को सौंपने से मना कर दिया था. हीरालाल में इतनी भी हिम्मत नहीं बची थी कि वो अपने बेटों का शव देख पाएं. राम कुमार और शरद के बड़े भाई ने सरयू के घाट पर 4 नवंबर को दोनों भाइयों का अंतिम संस्कार किए. अंतिम संस्कार में लोगों का हुजूम उमड़ पड़ा था. इस बीच कोठारी बंधुओं की मौत के एक महीने बाद दिसंबर के पहले हफ्ते में परिवार को एक चिट्ठी मिली. दोनों भाइयों ने अपनी बहन को लिखा था कि तुम चिंता मत करना. तुम्हारी शादी से पहले हम घर वापस लौट आएंगे. कोठारी बंधुओं की याद में कुछ दक्षिणपंथी संगठनों ने 2 नवंबर को शौर्य दिवस मनाना शुरू किया. 2015 में कोठारी बंधुओं की बहन पूर्णिमा कोठारी ने अपनी भाइयों की 25वीं पुण्यतिथि पर एक कार्यक्रम करना चाहती थीं. लेकिन अखिलेश सरकार ने इसकी इजाजत नहीं दी.

आंदोलन के गुमनाम नायक

1980 के दशक और 1990 के दशक के आरंभ में अयोध्या में रामजन्म भूमि आंदोलन के कई गुमनाम नायक रहे हैं. विवादित स्थल पर 1949 में भगवान राम की मूर्ति रखने वाले योद्धा साधु और 1984 में धार्मिक एवं आध्यात्मिक नेताओं को एकजुट करने वाले मृदुभाषी संन्यासी से लेकर, आंदोलन की जमीन तैयार करने वाले बलिदानियों की लंबी फेहरिस्त हैं, जिन्हें मंदिर आंदोलन में उनके योगदान के लिए याद किया जाता है.

बैरागी अभिराम दास

बिहार के दरभंगा निवासी बैरागी अभिराम दास रामानंदी संप्रदाय के संन्यासी थे। उनका नाम 22-23 दिसंबर 1949 की दरम्यानी रात रामजन्मस्थान पर विवादित ढांचे के भीतर भगवान राम की प्रतिमा के प्रकटीकरण के संबंध में सामने आया था. इस संबंध में तत्कालीन प्रशासन द्वारा दायर प्राथमिकी में उन्हें मुख्य अभियुक्त बनाया गया था. अयोध्या में वह योद्धा साधु के नाम से जाने जाते थे. उनका 1981 में देहांत हो गया.

देवराहा बाबा

देवराहा बाबा देवरिया में सरयू नदी के किनारे निवास करते थे. उनके शिष्यों में भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद तथा इंदिरा गांधी, राजीव गांधी और अटल बिहारी वाजपेयी जैसे नेता शामिल रहे थे.उन्होंने जनवरी 1984 में प्रयागराज के कुंभ में आयोजित धर्म संसद की अध्यक्षता की थी, जिसमें विभिन्न हिंदू संप्रदायों के धार्मिक एवं आध्यात्मिक नेताओं ने मिलकर 9 नवंबर 1989 को अयोध्या में राम मंदिर की नींव रखने का फैसला किया था. कहा जाता है कि जब राजीव गांधी आधारशिला रखे जाने के बारे में उनकी सलाह और उनका आशीर्वाद लेने गए तो देवराहा बाबा ने उनसे कहा था, बच्चा, हो जाने दो.

मोरोपंत पिंगले

नागपुर के मॉरिस कॉलेज के ग्रेजुएट और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के प्रचारक पिंगले एक अदृश्य रणनीतिकार थे, जिन्होंने सभी प्रमुख यात्राओं और तमाम देशव्यापी अभियानों को आरंभ करने में अहम भूमिका निभाई थी, जिनमें शिला पूजन कार्यक्रम भी शामिल था जिसके तहत तीन लाख से भी अधिक ईंटें अयोध्या पहुंचाई गई थीं.पिंगले हमेशा पर्दे के पीछे काम करना पसंद करते थे और वह 1980 के दशक में मंदिर आंदोलन के एक शीर्ष रणनीतिकार थे.

महंत अवैद्यनाथ

अवैद्यनाथ 1980 के दशक के मध्य में राम मंदिर आंदोलन का नेतृत्व करने के लिए गठित रामजन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति के प्रथम प्रमुख थे. वह एक अन्य प्रमुख संस्था रामजन्मभूमि न्यास समिति के भी अध्यक्ष थे, जिसने इस आंदोलन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. वह गोरक्षापीठ के महंत दिग्विजयनाथ के शिष्य थे और 1940 में संन्यासी के रूप में महंत अवैद्यनाथ का नाम धारण किया. वह 1969 में गोरक्षापीठ के प्रमुख बने. महंत अवैद्यनाथ हिंदू महासभा के भी सदस्य थे. वह गोरखपुर से पांच बार विधायक और चार बार लोकसभा सांसद निर्वाचित हुए थे. बाबरी मस्जिद विध्वंस मामले में उन्हें भी आरोपी बनाया गया था.

स्वामी वामदेव

गोरक्षा के लिए बेहद समर्पित मृदुभाषी संन्यासी वामदेव ने 1984 में जयपुर में आयोजित एक अखिल भारतीय सम्मेलन के जरिए तमाम हिंदू धार्मिक और आध्यात्मिक नेताओं को एक मंच पर लाने में अहम भूमिका निभाई थी. तब 400 से भी अधिक हिंदू धार्मिक नेताओं ने 15 दिनों तक विचार मंथन कर आंदोलन का भावी रोडमैप तैयार किया था. स्वामी वामदेव ने 1990 में अयोध्या में कार सेवकों का आगे बढ़कर नेतृत्व किया था, जब मुलायम सिंह यादव सरकार के आदेश पर पुलिस द्वारा की गई गोलीबारी में उनमें से कइयों की मौत हो गई थी. वृद्धावस्था के बावजूद वह 6 दिसंबर 1992 को अयोध्या में मौजूद थे, जब बाबरी मस्जिद को ढहाया गया था.

श्रीशचंद्र दीक्षित

दीक्षित 1980 के दशक में रामजन्मभूमि आंदोलन के अग्रणी नेताओं में से थे. वह 1982 से 1984 तक यूपी के पुलिस महानिदेशक रहे थे. सेवानिवृति के बाद वह विश्व हिंदू परिषद (वीएचपी) से उसके उपाध्यक्ष के रूप में जुड़ गए. उन्होंने अयोध्या में कारसेवकों के आंदोलन की रणनीति बनाने और वीएचपी के विभिन्न जनांदोलनों के कार्यक्रम को अंतिम रूप देने में प्रमुख भूमिका निभाई थी. उन्हें 1990 में अयोध्या में कारसेवा के दौरान रामजन्मभूमि आंदोलन में भाग लेने के लिए गिरफ्तार किया गया था. वह 1991 में भाजपा टिकट पर वाराणसी चुनाव क्षेत्र से सांसद चुने गए थे. वाराणसी सीट का प्रतिनिधित्व अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी करते हैं.

विष्णु हरि डालमिया

डालमिया 1992 से 2005 तक वीएचपी का अध्यक्ष रहे थे. प्रचार से दूर रहने वाले डालमिया रामजन्मभूमि आंदोलन के प्रमुख नेताओं में से थे. जब 1985 में श्रीराम जन्मभूमि न्यास का गठन हुआ तो उन्हें संगठन का कोषाध्यक्ष बनाया गया था. बाबरी मस्जिद के विध्वंस के बाद उन्हें भी गिरफ्तार किया गया था.

राम रमापति बैंक : जहां होती है श्रीराम के बाल स्वरूप की पूजा

धर्म एवं आस्था की नगरी काशी में आस्था का एक ऐसा बैंक है, जिसे राम रमापती बैंक के नाम से जाना जाता है। इस बैंक में श्रद्धालु न सिर्फ राम नाम की पूंजी जमा करते हैं, बल्कि उनके बालस्वरुप की पूजा अर्चना भी करते है। कहते है जिस किसी ने भी सच्चे मन से राम रमापती बैंक में लाल स्याही से राम-राम लिखकर जमा कर दी तो उसके न सिर्फ सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती है, बल्कि इसके कमाए गए ब्याज से जन्म-मृत्यु के बंधन से मुक्ति भी पा जाते हैं। बैंक राम-राम लिखे कागज के पन्नों को गुणों की जमा राशि मानता है। खास बात यह है कि 1926 से लगातार चल रहे इस राम रमापति बैंक में अन्य बैंकों की तर्ज पर यहां खाता खुलवाने और संकल्प के बाद ऋण भी मिलता है. इस बैंक में भारतीय ही नहीं सात समुंदर पार के भी आस्थावानों का खाता है और 19 अरब से ज्यादा राम नाम पूंजी जमा है। अपने तरह के अनूठे श्रीराम रमापति बैंक में प्रतिवर्ष मयार्दा पुरुषोत्तम भगवान राम के जन्मोत्सव पर रामनाम जमा करने वाले भक्तों को भीड़ उमड़ती है

सुरेश गांधी

देखा जाएं तो बनारस इतिहास से भी पुरातन है, परंपरा और पौराणिक कथाओं से भी प्राचीन है और इन सभी को एकत्र करें तो उस संग्रह से भी दोगुना प्राचीन है। जबकि महत्वपूर्ण राजनीतिक और सांस्कृतिक केंद्र अयोध्या को माना गया है. वैदिक काल में इसका वर्णन किताबों में पढ़ने को मिलता है. कहते है काशी को भगवान भोलेनाथ ने न सिर्फ अपने हाथों बसाया, बल्कि इसे अपने त्रिशूल पर टेक रखा है, जहां प्रलय भी कुछ नहीं बिगाड़ सकती। जबकि अयोध्या भगवान राम से जाना जाता है. इसलिए इसे भगवान राम की नगरी कहा जाता है. क्योंकि अयोध्या भगवान राम का जन्मभूमि है। रामलला की मूर्ति की पूजा और रामायण के घटनाक्रमों के चलते यह स्थान हिन्दू धर्म के लिए अत्यंत पवित्र माना जाता है. फिलहाल भगवान राम के भव्य मंदिर 22 जनवरी को होने वालों प्राण को लेकर सुर्खियों में है तो ऐसे में भला काशी कैसे अछूता रह सकता है। इसकी बड़ी वजह है अयोध्या अगर मुगल साम्राज्य के आक्रांताओं से आहत रही तो काशी भी कराह उठा था। यह संयोग ही है मुगल आक्रांताओं की क्रूरता बया करती बाबरी मस्जिद नेस्तनाबूद हो भव्य राम मंदिर बनने को है तो काशी का ज्ञानवापी मस्जिद भी न्यायिक प्रक्रिया के तहत जल्द ही शहीद होने वाली है। मतलब साफ है काशी और अयोध्या का नाता महत्वपूर्ण सांस्कृतिक केंद्र होने के नाते सदियों पुराना है। उसकी झलक आज भी किसी ने किसी रुप में दिखती है।

खास यह है कि रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के पहले एकबार फिर काशी और अयोध्या का अटूट नाता और मजबूत होता दिखाई देने लगा है। प्राण प्रतिष्ठा के लिए काशी के कर्मकांडी विद्वानों और ज्योतिषियों को तो जिम्मेदारियां मिली ही है, यहां के घड़े, दीपक और अन्य पूजन सामाग्रिया भी अयोध्या भेजी जा रही है। ऐसे में अगर प्राण प्रतिष्ठा से पहले काशी में विराजमान रामरुपी राम रमापति बैंक की चर्चा ना हो तो उनकी प्रतिष्ठा के साथ अन्याय ही होगा। राम रमापति बैंक एक ऐसा अनोखा बैंक है, जहां 19 अरब राम नाम की पूंजी जमा है. इस बैंक को न सरकार और न ही कारोबारी घराना चला रहा है, बल्कि भगवान राम के भक्त ही सालों साल से बिना किसी व्यवधान के चला रहे है। खास यह है कि राम भक्त हनुमान को इस बैंक का सेक्रेटरी बनाया गया है. राम रमापति बैंक मुद्राओं में लेनदेन नहीं करता, लेकिन लोन भी देता है और लोगों के खाते भी खोलता है। यह अनोखा बैंक उत्तर प्रदेश के वाराणसी के दशाश्वमेध घाट पर स्थित एक आध्यात्मिक बैंक है। इस बैंक की स्थापना 1926 में स्वर्गीय दास चन्नूलाल द्वारा की गई थी। वर्तमान में प्रबंधक दास बासुदेव प्रसाद हैं, जो अपने पोते के साथ बैंक में अपनी सेवा दे रहे हैं। यह बैंक एक ऐसा बैंक है जो किसी भी प्रकार के मौद्रिक लेनदेन को स्वीकार नहीं करता है। इसके बजाय, इस बैंक में खाताधारक एक खास तरह की है।

राम रमापति बैंक खाता

राम रमापति बैंक अन्य बैंकों के विपरीत किसी भी प्रकार के मौद्रिक लेनदेन स्वीकार नहीं करता है। इस बैंक में खाता खोलने के लिए एक कलम और सफेद कागज सहित भगवान राम के प्रति सच्ची श्रद्धा होनी चाहिए। इस बैंक में सदस्य बनने की एकमात्र शर्त भगवान राम में दृढ़ विश्वास होना है और जाति, लिंग, धर्म या राष्ट्रीयता के बावजूद कोई भी सदस्य बन सकता है।

केवल एक रुपये या चार रुपये डाक द्वारा भुगतान करके कोई भी बैंक का सदस्य बन सकता है। राम रमापति बैंक में आध्यात्मिक खाता खोलने के लिए, भगवान राम की उपस्थिति में खाता खोला जाता है और भगवान से उनकी इच्छा पूरी करने का अनुरोध किया जाता है। अनुरोध के बदले में, बैंक कागज की शीटें देता है।

बैंक देता है ऋण

शिव की नगरी में स्थापित इस राम रमापति बैंक में भक्त पुण्य जमा करके राम नाम का कर्ज लेते हैं। बनारस में दशाश्वमेध के पास त्रिपुरा भैरवी घाट पर 95 साल से संचालित होने वाले राम रमापति बैंक में मन के भाव को राम नाम की भक्ति में डुबोकर कागज पर लिखा जाता है और जमा कर दिया जाता है। राम रमापति बैंक ऋण प्रदान करता है, जिसे कागज पर भगवान राम का नाम लिखकर चुकाया जाता है। बैंक तीन प्रकार के ऋण प्रदान करता है: जाप ऋण, मंत्र ऋण और राम नाम ऋण। राम नाम ऋण सबसे लोकप्रिय है और उधारकताओं को इसे आठ महीने और दस दिनों के भीतर भगवान राम के नाम को 1,25,000 बार कागज पर लिखकर और बैंक के पास जमा के रूप में रखकर चुकाना होता है। बैंक कोई मौद्रिक जमा नहीं मांगता है। लोगों का राम रमापति बैंक से लोन लेने के दो उद्देश्य होते है, पहला आध्यात्मिक आवश्यकता को पूरा करना और दूसरा, राम भक्ति को बढ़ावा देना। बैंक हर दिन दोपहर 12 बजे से शाम 4 बजे तक खुला रहता है। बैंक के ट्रस्टी मानते हैं कि भगवान राम बैंक चलाते हैं, और वे माध्यम हैं। बैंक का उद्देश्य अधिक से अधिक लोगों में धार्मिक विवेक जगाना है। बैंक अपने खाताधारकों को भगवान राम का नाम लिखने के लिए मुफ्त में कागज के बंडल और एक पेन भी प्रदान करता है।

बैक की जमापूंजी

राम रमापति बैंक में देश-विदेश के लाखों भक्तों के हाथों से लिखे 19 अरब 39 करोड़ 59 लाख 25 हजार श्री रामनाम तथा 1.25 करोड़ श्री शिवनाम जमा हैं। लगभग तीन सालों में इस बैंक के अस्तित्व के 100 वर्ष पूरे हो जाएंगे। लगभग अपने 100 वर्ष के कार्य खंड में इस बैंक में 1.50 लाख से अधिक लोगों ने अपना खाता खोला है। इस बैंक में खाता खोलने के लिए कुछ शर्तों का पालन करना होता है जैसे, भक्त केवल सुबह 4 बजे से 7 बजे तक ही भगवान राम का नाम लिख सकते है और नाम ठीक 1.25 लाख बार लिखा जाना चाहिए। यह कार्य आठ महीने और दस दिनों के भीतर पूरा होना चाहिए। इस पूरी प्रक्रिया के दौरान भक्तों को मांसाहारी भोजन और प्याज और लहसुन युक्त भोजन खाने से मना किया जाता है।

बालस्वरुप में श्रीराम

अयोध्या की तरह काशी में भी प्रभु श्रीराम बाल रूप में विराजमान है। इसलिए इन्हें रामलला कहते है. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार जो भी भक्त यहां सच्चे मन से आता है और 8 महीने 10 दिन तक हर रोज 500 राम नाम का लेखन करता है उसकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होते है. बैंक के संचालन से जुड़े सुमित मल्होत्रा ने बताया कि इस दौरान उन्हें लेखन सामग्री भी यही से दी जाती है. खास बात यह भी है कि इस दौरान भक्तों को पूरे तरीके से सात्विक रहना होता है और इस राम नाम के लेखन के बाद उन्हें वापस यहां जमा करना होता है. इससे भक्तों की मनोकामना पूरी होती है. राम नवमी पर भक्त यहां भगवान के नाम की परिक्रमा करके पुण्य लाभ कमाते हैं। बैंक में उपभोक्ताओं को कर्ज के रूप में सवा लाख जय श्रीराम नाम का कर्ज दिया जाता है। इसे रामभक्त को नियमानुसार भरना पड़ता है। जो लोग यहां आते हैं उनकी राशि व नाम से एक शुभ मुहूर्त निकाला जाता है। इसके बाद फॉर्म भराया जाता है। इसके लिए एक नियम की पुस्तक उन्हें फॉर्म भरने के पहले दी जाती है। रामरमापति बैंक में जमा रामनाम संग्रह रामनवमी पर दस दिन के लिए दर्शनार्थ भक्तों को सुलभ होता है। प्रभु के बालरूप की झांकी दर्शन के साथ ही परिक्रमा की जाती है। प्रसाद रूप में प्रभु को समर्पित कपड़े, खिलौने व रोली वितरित की जाती है।

पाप-ताप से मुक्ति का जतन

अवघड़ दानी भगवान शंकर की नगरी काशी के बारे में मान्यता है कि यहां समूचा ब्राह्मांड बसता है। त्रैलोक्य से न्यारी काशी के कण-कण में भोलेनाथ विद्यमान हैं। यहीं बाबा विश्वनाथ के पूज्य मयार्दा पुरुषोत्तम श्री राम के बाल स्वरूप का विग्रह भी विद्यमान है।

मां पार्वती स्वरूपा आदि शक्ति के नवदुर्गा और नवगौरियों के विग्रह भी विद्यमान हैं। यहां आदि देव बाबा विश्वनाथ हैं तो उनकी जटा से निकलीं मां गंगा भी हैं। वह भी उत्तर वाहिनी गंगा। काशी ही है जहां गंगा उत्तर वाहिनी हैं। अर्द्ध चंद्राकार काशी के घाट यहीं मिलते हैं। यहां श्रीकृष्ण जन्माष्टमी भी मनाई जाती है। उसके लिए गोपाल मंदिर भी है। फिर प्रभु श्री राम जो खुद शंकर के पूज्य हैं उनका जन्म और उनकी आराधना भला कैसे न हो। मंदिर के दास कृष्णचंद्र बताते हैं कि कैलाशवासी स्वामीनाथ के शिष्य महात्मा सत्तरामदास नेराम भक्तों को पाप-ताप शमन, चिंता निवृत्ति व अक्षय सुख प्राप्ति के लिए संवत 1983 में अनूठे रामरमापति बैंक की स्थापना की थी। दास छन्नूलाल को इसका दायित्व प्रदान कर प्रथम मैनेजर का कार्यभार दिया गया।

शिवस्वरूप में विराजमान हैं भगवान राम के वंशज

मोक्षदायिनी काशी में भगवान राम के वंशज भी गंगा के तट पर शिवस्वरूप में विराजमान हैं। सतयुग से लेकर त्रेता और द्वापर युग तक काशी में उन्होंने तपस्या की और शिवलिंग स्थापित किए। आज वह तीर्थ के रूप में काशी में हैं। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का समारोह जैसे-जैसे नजदीक आ रहा है, काशी में राम से जुड़े स्थान भी सामने आ रहे हैं। बीएचयू के प्रोफेसर और केंद्रीय ब्राह्मण महासभा की 77 दिनों की खोज में भगवान राम के वंशजों के तीर्थ मिले हैं। भगवान राम के वंशजों की काशी में खोज के लिए काशी खंड समेत 125 से अधिक पुस्तकों का अध्ययन किया गया। महाराजा हरिश्चंद्र से लेकर भगवान राम द्वारा स्थापित शिवलिंग उनके नाम से ही स्थापित हैं। रामघाट पर सत्यवादी राज हरिश्चंद्र तीर्थ व विग्रह हैं और यहां पर स्नान व पूजन करने वाला कभी भी सत्य के मार्ग से नहीं हटता है। काशीखंड के अध्याय 84 में भी भगवान राम के वंशजों के तीर्थ के बारे में वर्णन मिलता है। हरिश्चंद्र तीर्थ पर सत्कर्म करने वाले का लोक और परलोक दोनों सुधर जाता है। संकटा माता मंदिर के सामने राजा दिलीप भी शिवलिंग के स्वरूप में विराजमान हैं। मान्यता है कि इनके दर्शन मात्र से ही मनुष्य के पापों का नाश हो जाता है। चंद्रेश्वर के मंदिर चंद्रेश्वर के निकट राजा सगर का सगरतीर्थ है। यहां पर स्नान करने से मनुष्य कभी दुख के सागर में नहीं डूबता। चंद्रेश्वर के निकट मणिकर्णिका ब्रह्मनाल के बीच दक्षिण में राजा भगीरथ का भागीरथी तीर्थ है। जो मनुष्य वहां पर स्नान करता है, वह ब्रह्म हत्या से भी छूट जाता है। मणिकर्णिका पर स्वर्गद्वार के पास ही भागीरथीश्वर लिंग के दर्शन करने से ब्रह्महत्या का पाप भी कट जाता है। रावण को मारने के बाद भगवान राम ने काशी में मीरघाट धर्मकूप में रघुनाथेश्वर लिंग काशी में स्थापित किया। इसके स्पर्श मात्र से ब्रह्मघाती मनुष्य भी शुद्ध हो जाता है। राजा मांधाता ने दशाश्वमेध क्षेत्र के मानमंदिर में चक्रवर्ती का पद प्राप्त किया था। उन्होंने काशी में मांधातृ तीर्थ स्थापित किया। उनकी तपस्या से ही प्रसन्न होकर भगवान केदारेश्वर काशी में प्रकट हुए। राजा मांधाता के पुत्र राजा मुचुकुंदेश्वर द्वारा स्थापित शिवलिंग मुचुकेंद्रश्वर लिंग बड़ादेव पर हैं। बड़ादेव मंदिर के आगे अगस्तेश्वर के दक्षिण में विभीषण द्वारा स्थापित लिंग है। सोनारपुरा पांडेय हवेली गली में केदारेश्वर से दक्षिणापथ में चन्द्रवंशीय और सूर्यवंशीय राजाओं द्वारा स्थापित सहस्त्रों लिंग विद्यमान हैं।

ब्रह्माजी की 67वीं पीढ़ी में हुआ राम का जन्म

वाल्मीकि रामायण के अनुसार ब्रह्माजी से मरीचि हुए और मरीचि के पुत्र कश्यप हुए। इसके बाद कश्यप के पुत्र विवस्वान हुए और विवस्वान से सूर्यवंश का आरंभ माना जाता है। विवस्वान से पुत्र वैवस्वत मनु हुए। भगवान राम का जन्म वैवस्वत मनु के दूसरे पुत्र इक्ष्वाकु के कुल में हुआ था। इक्ष्वाकु से सूर्यवंश में वृद्धि होती चली गई। राजा सगर के प्रपौत्र दिलीप और दिलीप से प्रतापी भगीरथ का जन्म हुआ। भगीरथ के पुत्र ककुत्स्थ हुए और ककुत्स्थ के पुत्र रघु का जन्म हुआ। रघु से रघुवंश की शुरूआत हुई। भगवान राम का जन्म ब्रह्माजी की 67 पीढ़ियों में हुआ।

काशी में श्रीराम ने रेत से स्थापित किया शिवलिंग

काशी में रामेश्वर, काशी पंचक्रोशी के तृतीय पड़ाव स्थल पर बसा हुआ है। किसी जमाने में करौंदा वृक्ष की बहुतायतता के कारण इसे करौना गांव के नाम से जाना जाता था किन्तु भगवान श्रीराम द्वारा पंचक्रोशी यात्रा में आने पर वरुणा नदी के एक मुठ्ठी रेत से रामेश्वरम की ही भांति शिव की प्रतिमा स्थापना और भगवान शिव एवम् श्रीराम के आरम्भिक मिलन का केंद्र होने से अब इसे रामेश्वर महादेव (रामेश्वर तीर्थ धाम) के नाम से भी जाना जाता है। यहां लोटा भंटा मेला के दौरान दूर दूर से आकर लोक कल्पवास कर बाटी, चोखा और दाल चावल बनाकर भगवान शिव को इसका भोग भी लगाते हैं और प्रसाद एक दूसरे को बांटकर पुण्य की कामना करते हैं।

सदियों के संघर्ष और दशकों के आंदोलन का प्रतिफल है राम मंदिर

बात 1885 की है जब पहली बार फैजाबाद की एक अदालत में महंत रघुबीर दास के विवादित ढ़ाचे के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराने के साथ इस आंदोलन के बीज पड़े थे। लेकिन इस आंदोलन की असली शुरूआत 1949 में उस वक्त हुई थी जब विवादित ढांचे के भीतर भगवान राम की मूर्तियां मिली थीं और यहीं से आंदोलन की असल नींव पड़ी थी. इसके बाद सरकार ने विवादित स्थल पर ताला जड़ दिया था और सभी के प्रवेश पर रोक लगा दी थी. इसके बाद हिंदू और मुस्लिम पक्षों ने अदालत में मुकदमा दर्ज करा दिया, जिसका पटाक्षेप 9 नवंबर 2019 को सुप्रीम कोर्ट के आदेश के साथ हुआ. इस बीच राम जन्मभूमि आंदोलन से जुड़े हजारों-लाखों लोगों की मुहिम और सैकड़ों लोगों की कुर्बानियों को सार्थक बनाते हुए भव्य राम मंदिर में 22 जनवरी को प्राण प्रतिष्ठा होगी। इस पूरे आंदोलन के दौरान अप्रैल 1984 में हुई विश्व हिंदू परिषद की धर्म संसद अहम पड़ाव थी. इसी धर्म संसद में अशोक सिंघल की मौजूदगी में राम मंदिर को लेकर निर्णायक आंदोलन छेड़ने का फैसला हुआ था. उन्हीं की अगुवाई में मंदिर निर्माण के पक्ष में न सिर्फ माहौल बना, बल्कि आक्रामक भूमिका निभाते हुए 1989 में अयोध्या में विवादित स्थल के पास राम मंदिर निर्माण की आधारशिला रखी। अपनी फायरब्रांड छवि के कराण सिंघल राम भक्तों और हिंदुओ के बीच काफी लोकप्रिय हुए. हालांकि, 2015 में उनका भी निधन हो गया और अपनी आंखों से वो मंदिर बनते नहीं देख सके, लेकिन उनका सपना जरूर अब साकार हो रहा है

सुरेश गांधी

फिरहाल, भव्य राम मंदिर में अभिषेक के लिए बस अब कुछ ही दिन ही इंतजार है. लेकिन हमें नहीं भूलना चाहिए कि इस सुखद पल के लिए हजारों-लाखों ने कुर्बानियां दी है। इसके लिए हिंदू संगठनों से लेकर, छात्र और कोठारी बंधुओं समेत आम जनमानस ने अपने प्राणों की आहुति दी है। बीजेपी ने राजनीतिक स्तर पर और विश्व हिंदू परिषद ने सामाजिक-सांस्कृतिक स्तर पर इस आंदोलन की जिम्मेदारी निभायी। परिणाम यह हुआ कि 1989 में जब इलाहाबाद हाई कोर्ट ने विवादित स्थल का ताला खोलने का आदेश दिया, तो वीएचपी ने उसके पास ही राम मंदिर की आधारशिला रख डाली. खास यह है कि इस आंदोलन के इतिहास में दो सबसे बड़ी तारीखें आई 1990 और 1992। 1990 में बीजेपी नेता लालकृष्ण आडवाणी ने राम मंदिर के पक्ष में जन समर्थन के लिए रथ यात्रा निकाली, जिसे 30 अक्टूबर को अयोध्या पहुंचना था. इसके लिए देशभर से लाखों कार सेवक अयोध्या के लिए निकल चुके थे. लेकिन बिहार में लालू द्वारा आडवाणी की गिरफ्तारी के साथ रथ रोक दी, लेकिन कारसेवक अयोध्या पहुंचने लगे थे. हालांकि मुलायम सिंह यादव के नेतृत्व वाली यूपी सरकार ने अयोध्या में घुसने पर रोक लगा दी थी. शहर में कर्फ्यू था और भारी संख्या में पीएसी की तैनाती थी. फिर भी अशोक सिंघल, विनय कटियार और उमा भारती जैसे नेताओं के नेतृत्व में देश के अलग-अलग हिस्सों से जुटे हजारों कार सेवक न सिर्फ अयोध्या में घुसे बल्कि विवादित ढांचे की ओर भी बढ़ गए. इसी बीच विवादित ढांचे के ऊपर कार सेवकों ने भगवा झंडा लहरा दिया और परिणामस्वरूप वहां अफरा-तफरी हो गई. पीएसी ने कार सेवकों को खदेड़ने के लिए गोलीबारी की जिसमें कईयों की मौत हो गई.

6 दिसंबर 1992 को मंदिर निर्माण के लिए

कार सेवा का आह्वान किया गया था, जिसके बाद लाखों कार सेवक बीजेपी, वीएचपी और बजरंग दल नेताओं के नेतृत्व में पहुंचे थे और देखते ही देखते वहां विवादित ढ़ांचा गिरा दिया गया था. इस पूरे आंदोलन में कई मशहूर तो कई अनजान चेहरों ने अपना योगदान दिया, लेकिन कुछ नाम ऐसे हैं, जो हमेशा लोगों को याद रहेंगे- महंत रामचंद्र परमहंस भूमि विवाद और मंदिर आंदोलन से जुड़ने वाले शुरूआती लोगों में से थे. वो 22-23 दिसंबर 1949 की रात थी जब अचानक विवादित ढांचे के अंदर से भगवान राम की मूर्तियां मिली थीं, तो उसने सबको चैंका दिया था. असल में इन मूर्तियों को रखने वाले रामचंद्र परमहंस ही थे. उन्होंने ही अपने कुछ साथियों के साथ मिलकर ये मूर्तियां रखी थीं. इसके बाद विवाद हुआ था और मुस्लिम पक्ष ने कोर्ट में मुकदमा दायर कर दिया था. दूसरी तरफ परमहंस ने भी इसको लेकर मुकदमा दायर किया और इस तरह वो इस मामले के सबसे पहले वादियों में शामिल हुए. 1984 में हुई धर्म संसद से लेकर इसके बाद जारी आंदोलन में उन्होंने अहम भूमिका निभाई. हालांकि, एक रोचक पहलू ये है कि इस विवाद के प्रमुख मुस्लिम पक्षकार हाशिम अंसारी और रामचंद्र परमहंस के बीच काफी अच्छे संबंध थे. दोनों को कई बार अदालती कार्यवाही के दौरान साथ देखा गया. हालांकि, मंदिर निर्माण का सपना संजोए रामचंद्र परमहंस का 2003 में निधन हो गया. लेकिन उनके मशाल को अशोक सिंघल जैसे हस्तियां जलाएं रखी। 1981 में वीएचपी से जुड़ने वाले अशोक सिंघल के नेतृत्व में गोरखनाथ पीठ के प्रमुख मंहत अवैद्यनाथ व देवराहा बाबा की मौजूदगी में 1984 में विशाल धर्म संसद का आयोजन किया गया. इसी धर्म संसद में श्री राम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति का गठन कर राम मंदिर निर्माण को लेकर निर्णायक आंदोलन शुरू करने का संकल्प लिया गया था. 9 नवंबर 1989 को राम मंदिर के शिलान्यास की तारीख तय हुई थी। कहा जाता है कि देवराहा बाबा के आदेश के बाद तत्कालीन पीएम राजीव गांधी ने तमाम विरोध के बावजूद 1986 विवादित स्थल का ताला खुलवाया। इसके अलावा 1989 में अयोध्या में विवादित स्थल के पास राम मंदिर निर्माण की आधारशिला रखने में भी सिंघल का अहम योगदान था. अपनी फायरब्रांड छवि के कारण सिंघल और महंत अवैधनाथ राम भक्तों और हिंदुओ के बीच काफी लोकप्रिय हुए. उन्होंने ही सबसे पहले 1990 में हरिद्वार के संत सम्मेलन में 30 अक्टूबर को मंदिर निर्माण शुरू करने की तारीख तय की थी. हालांकि, तब यह काम पूरा नहीं हो सका था, जिसके बाद 1992 में एक बार फिर 6 दिसंबर को मंदिर निर्माण के लिए कार सेवा शुरू करने का आह्वान भी उन्होंने ही किया था. 6 दिसंबर 1992 को जिस दिन विवादित ढांचा ढहाया गया था, उस दिन अशोक सिंघल, आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी, उमा भारती, साध्वी ऋतंबरा और विनय कटियार आदि भी वहीं थे. पार्टी, वीएचपी और बजरंग दल के अन्य नेताओं के साथ वहां मौजूद आडवाणी आंदोलन का नेतृत्व कर रहे थे और मंच से भाषण दे रहे थे. देखते ही देखते कार सेवकों ने विवादित ढांचा गिरा दिया. इस मामले में आडवाणी पर साजिश का मुकदमा दर्ज किया गया, जो आज भी जारी है. इस बीच 12 सितंबर 2014 को महंत अवैधनाथ और 2015 में अशोक सिंघल, महंत रामचंद्रदास परमहंस, संघ प्रमुख रहे केसी सुदर्शन, देवराहा बाबा, महंत अवैद्यनाथ का निधन हो गया और अपनी आंखों से वो मंदिर बनते नहीं देख सके, लेकिन उनका सपना जरूर अब साकार हो रहा है. महंत अवैधनाथ के निधन के बाद योगी आदित्यनाथ ने गोरखनाथ पीठ में उनकी गद्दी संभाली थी.

कोठारी बंधु

सिर्फ 22 और 20 साल के भाई राम और शरद कोठारी बंगाल के रहने वाले थे. 30 अक्टूबर 1990 को अयोध्या में मंदिर निर्माण की तारीख के एलान और आडवाणी के रथ के पहुंचने की तारीख को देखते हुए दोनों भाई अयोध्या के लिए निकल पड़े थे. दोनों बजरंग दल से जुड़े थे. 22 अक्टूबर को दोनों भाईयों ने बनारस अयोध्या के लिए पैदल यात्रा शुरू की थी. अयोध्या में जारी कर्फ्यू के बीच दोनों भाई सबसे पहले पहुंचने वालों में से थे. 30 अक्टूबर को जब वीएचपी और बजरंग दल के नेता विवादित ढांचे की ओर बढ़ रहे थे, उसी बीच दोनों भाई ढांचे के ऊपर गुम्बद में चढ़ गए और वहां भगवा झंडा फहरा दिया. इसने वहां मौजूद लोगों को चैंका दिया. हालांकि, कुछ ही देर में वहां सुरक्षाबलों ने भीड़ को रोकने के लिए गोलीबारी कर दी और इसमें दोनों भाईयों की भी मौत हो गई.

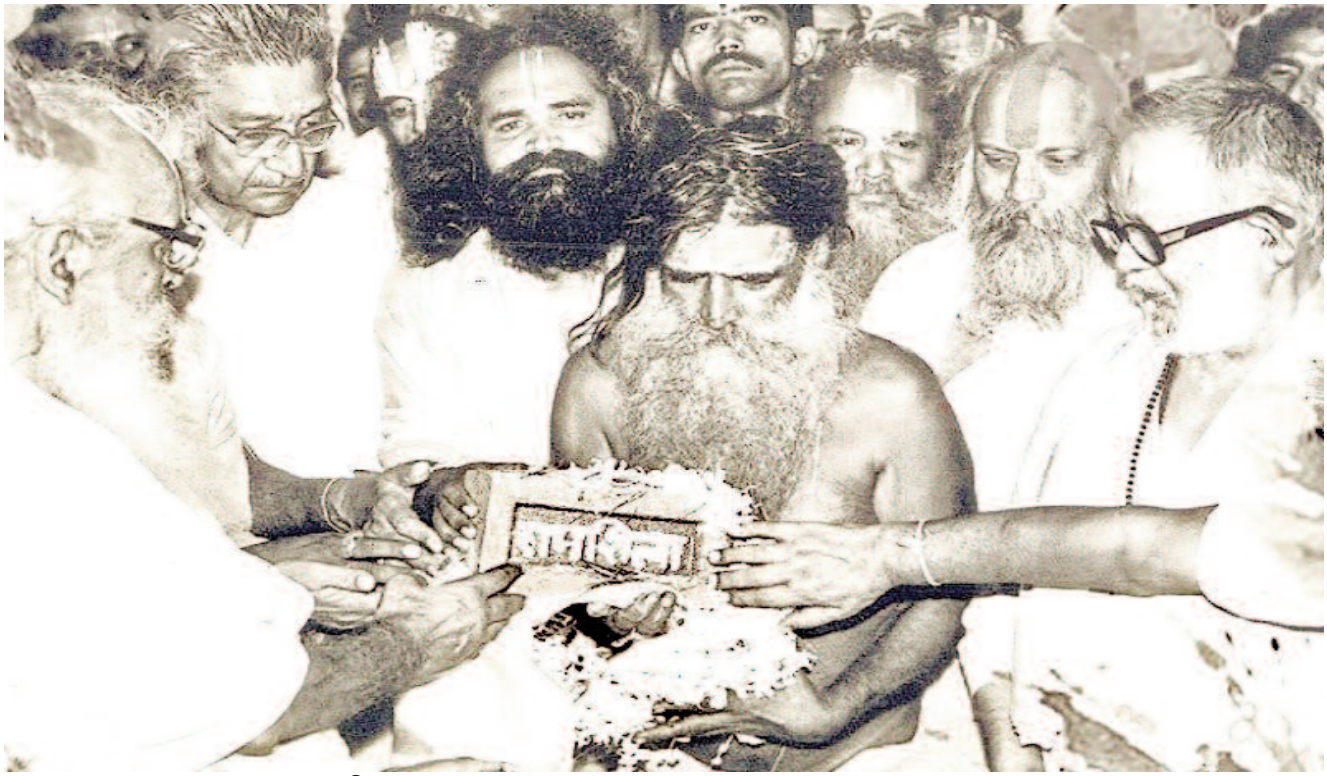

कल्याण सिंह

विवादास्पद ढांचा विध्वंस के दौरान यूपी के सीएम रहे कल्याण सिंह की छवि हिंदू हृदय सम्राट की बनी। सीएम नहीं रहते हुए भी उन्होंने मंदिर आंदोलन में लगातार अहम भूमिका निभाई। वर्ष 1992 में सुप्रीम कोर्ट को विवादित ढांचे की सुरक्षा का हलफनामा दिया। विवादित ढांचा टूटने के बाद उनकी सरकार बर्खास्त कर दी गई। कल्याण बाद में भी यूपी के सीएम बने। फिर उनका भाजपा से आना जाना लगा रहा। मोदी सरकार के पहले कार्यकाल में राज्यपाल बनाए गए। फिलहाल सक्रिय राजनीति से दूर हैं।

श्रीराम जन्मभूमि को 500 सालों तक का इंतजार

मीरबाकी के मस्जिद बनाने के 330 साल बाद 1858 में परिसर में हवन, पूजन करने को लेकर एक एफआईआर हुई। वहीं 1885 में पहली बार मामला अदालत में पहुंचा। 134 साल तक चली कानूनी लड़ाई 9 नवंबर 2019 को सर्वोच्च न्यायालय के फैसले से खत्म हुई। बता दें, श्री राम के जन्म और एक आदर्श राजा, मयार्दा पुरुषोत्तम एवं सृष्टि के नायक भगवान के रूप में उनकी प्रतिष्ठा के समय अयोध्या और उनकी जन्मभूमि की गरिमा का सहज अनुमान किया जा सकता है। श्री राम के स्वधाम गमन के बाद उनके पुत्र कुश ने यशस्वी पिता की स्मृति में उनकी जन्मभूमि पर विशाल मंदिर का निर्माण कराया। तभी से यह मंदिर श्री राम के प्रति आस्था, आदर और अहोभाव का परिचायक बनी है। युगों के सफर में राम मंदिर की गौरव-गरिमा शिखर का स्पर्श करती रही। समय के साथ अगर आस्था के इस महानतम स्मारक की आभा मंद पड़ी, तो उसे नई चमक और नया गौरव भी प्रदान किया जाता रहा। त्रेता युग में श्री राम के सूर्यवंशीय वंशजों के समय राम जन्मभूमि पर बने भव्य-दिव्य मंदिर का रखरखाव पूरी जिम्मेदारी से होता रहा। वृहदबल के रूप में अयोध्या के अंतिम सूर्यवंशी शासक का उल्लेख मिलता है, जिन्होंने महाभारत के युद्ध में कौरव सेना की ओर से युद्ध में भाग लिया और अभिमन्यु के हाथों मारे गए। उनके अवसान के बाद से अयोध्या के साथ राम मंदिर की भी चमक मंद पड़ने का संकेत मिलता है। साथ ही यह तथ्य भी प्रतिपादित होता है कि महाभारत युद्ध के बाद श्री कृष्ण अयोध्या आए और उन्होंने अपने पूर्ववर्ती श्री राम के मंदिर का जीर्णोद्धार कराया। दो हजार वर्ष पूर्व भारतीय लोक कथाओं के नायक महाराज विक्रमादित्य के जिस समय अयोध्या आगमन का उल्लेख मिलता है, उस समय अयोध्या अपनी पहचान से वंचित हो चुकी थी। विक्रमादित्य ने न केवल अनेक त्रेता युगीन स्थलों के साथ उससे भी पूर्व के पौराणिक स्थलों सहित पूरी अयोध्या का जीर्णोद्धार कराया, बल्कि राम जन्मभूमि पर भव्य दिव्य मंदिर का निर्माण कराया। इस मंदिर की भव्यता के बारे में आज भी अनेक किंवदंतिया प्रचलित हैं। विक्रमादित्य द्वारा निर्मित होने के एक हजार वर्ष बाद जैसे राम जन्मभूमि को नजर लग गई। राम भक्तों की यह विरासत लंबे समय तक त्रासदी का सामना करती रही। पहले सालार मसूद गाजी ने अयोध्या सहित राम जन्मभूमि को क्षतिग्रस्त किया और सन 1528 में मुगल आक्रांता बाबर के आदेश पर उसके सेनापति मीर बाकी ने तोप से राम मंदिर को गिरवा दिया। इसके बाद करीब 500 वर्षों तक राम जन्म भूमि के सम्मान की प्रतिष्ठा के लिए सतत संघर्ष चलता रहा। 9 नवंबर 2019 को रामलला के पक्ष में आए सुप्रीम कोर्ट के फैसले से फलीभूत हुआ। तब उत्कर्ष का नया चरण शुरू हुआ और 5 अगस्त 2020 को जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राम मंदिर के लिए भूमि पूजन किया, तो यह सफर हजार वर्ष तक सलामत रहने वाले भव्य मंदिर के संकल्प से गुजरा और 22 जलवरी को यह संकल्प भव्य-दिव्य मंदिर के अनुरूप दिखेगा।

मीरबाकी

बात 1526 की है जब मुगल शासक बाबर भारत आया। दो साल बाद बाबर के सूबेदार मीरबाकी ने अयोध्या में एक मस्जिद बनवाई। यह मस्जिद उसी जगह बनी जहां भगवान राम का जन्म हुआ था। बाबर के सम्मान में मीर बाकी ने इस मस्जिद का नाम बाबरी मस्जिद दिया। ये वो दौर था जब मुगल शासन पूरे देश में फैल रहा था। मुगलों और नवाबों के शासन के दौरान 1528 से 1853 तक इस मामले में हिंदू बहुत मुखर नहीं हो पाए। 19वीं सदी में मुगलों और नवाबों का शासन कमजोर पड़ने लगा। अंग्रेज हुकूमत प्रभावी हो चुकी थी। इस दौर में ही हिंदुओं ने यह मामला उठाया और कहा कि भगवान राम के जन्मस्थान मंदिर को तोड़कर मस्जिद बना ली गई। इसके बाद से रामलला के जन्मस्थल को वापस पाने की लड़ाई शुरू हुई। 1858 में हुई घटना के 27 साल बाद 1885 में राम जन्मभूमि के लिए लड़ाई अदालत पहुंची। जब, निमोर्ही अखाड़े के मंहत रघुबर दास ने फैजाबाद के न्यायालय में स्वामित्व को लेकर दीवानी मुकदमा दायर किया। दास ने बाबरी ढांचे के बाहरी आंगन में स्थित राम चबूतरे पर बने अस्थायी मंदिर को पक्का बनाने और छत डालने की मांग की। जज ने फैसला सुनाया कि वहां हिंदुओं को पूजा-अर्चना का अधिकार है, लेकिन वे जिलाधिकारी के फैसले के खिलाफ मंदिर को पक्का बनाने और छत डालने की अनुमति नहीं दे सकते।

मानव अधिकार रक्षक ने पूरा किया तीन वर्ष - मनाया स्थापना दिवस

जितेन्द्र कुमार सिन्हा, पटना

मानव अधिकार रक्षक ने संस्था के उद्देश्य के साथ अपना तीन वर्ष पूरा किया। तीन वर्ष पूरा होने पर मानव अधिकार रक्षक ने पटना के इंडियन मेडिकल एशोसिएशन हॉल में स्थापना दिवस का आयोजन किया। आयोजन में शिरकत करने वालों में मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय जनता पार्टी के प्रवक्ता उषा विद्यार्थी, पटना के जानेमाने गाइनेकोलॉजिस्ट डॉ० अंजली सिन्हा, डीएसपी (कानून एवं व्यवस्था,रेल) भावना वर्मा, वार्ड संख्या -32 के वार्ड पार्षद पिंकी यादव, संस्था की संस्थापिका रीता सिन्हा, राष्ट्रीय अध्यक्ष अरविंद कुमार, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रितु कुमारी, बिहार प्रदेश अध्यक्ष चेतन थिरानी, बिहार प्रदेश मीडिया प्रभारी जितेन्द्र कुमार सिन्हा प्रमुख थे।

उक्त अवसर पर मुख्य अतिथि भारतीय जनता पार्टी के प्रवक्ता उषा विद्यार्थी ने कहा कि मानव अधिकार रक्षक ने समाज में उत्थान के लिए लगातार काम कर रही है, इनके कार्यों की प्रशंसा स्थानीय लोग कर रहे है। यह एक प्रसंसनीय कार्य है। वहीं गाइनेकोलॉजिस्ट डॉ० अंजली सिन्हा ने महिलाओं में गाइनेकोलॉजी के संबंध में होने वाली बीमारियों और उसके उपचार पर प्रकाश डाली। वार्ड संख्या -32 के वार्ड पार्षद पिंकी यादव ने मानव अधिकार रक्षक से जुड़े रहने की चर्चा करते हुए कहा कि मेरे पास कुछ लोग सहायता के लिए आते है तो उसे मानव अधिकार रक्षक के पदाधिकारियों के पास भेज देते है और उसका परिणाम सकारात्मक मिलती है। डीएसपी (कानून एवं व्यवस्था,रेल) भावना वर्मा ने कहा कि मुझे मालूम ही नहीं था की मानव अधिकार रक्षक समाज में इतना अच्छा कामकर रहा है और स्लम बस्ती के बच्चों को शिक्षित करने के लिए निःशुल्क शिक्षा, स्वास्थ्य लाभ के लिए निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच, निःशुल्क भोजन दे रही है। यह बहुत ही उत्कृष्ट कार्य है।

स्थापना दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मानव अधिकार रक्षक के संस्थापिका रीता सिन्हा ने कहा कि मानव अधिकार रक्षक की स्थापना वर्ष 2020 में की गई है। यह संस्था एक गतिशील, समाज के प्रति समर्पित संस्था है। इस संस्था में मानवाधिकार कार्यकर्ता और सामाजिक कार्यकर्ता सक्रीय रूप से कार्य कर रहे है। यह संस्था पूरी तरह से, न्याय के उद्देश्य के लिए, समर्पण के साथ काम कर रही हैं। सभी के लिए, सभी लोगों के बीच विचारों, लोकाचार के आदान-प्रदान द्वारा वंचितों को, आर्थिक उत्थान, शिक्षा, शांति, सद्भाव, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एकता के लिए काम कर रही है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष अरविन्द कुमार ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बताया कि मानव अधिकार रक्षक ने अपनी 3 वर्षों की अवधि में घरेलू हिंसा आदि से संबंधित लगभग 100 से अधिक मामले का निष्पादन कराया हैं। वर्तमान में भारतीय मानव अधिकार रक्षक संस्थान से लगभग 1000 से अधिक सदस्य बन चुके है और सभी सदस्य सक्रीय रूप से संगठन के प्रति समर्पित होकर कार्य कर रहे है। बिहार के 38 जिलों में से 14 जिलों में मानव अधिकार रक्षक के सदस्य सक्रीय रूप से काम कर रहे हैं।

उन्होंने बताया कि मानव अधिकार रक्षक का उद्देश्य है कि मानव अधिकार के हनन को लेकर आवाज उठाना, पारिवारिक विवादो को सुलझाने की कोशिश करना, प्रशासनिक अधिकारियों के साथ

मिलकर जनता के दिलों में कानून व्यवस्था के ऊपर भरोसा बनाए रखने की कोशिश करना, सभी विभागों के पदाधिकारियों को उनके ईमानदारी के साथ किए गए कार्यों के लिए प्रोत्साहन देना, समाज के समग्र विकास एवं कल्याण हेतु कार्य करना है।

अरविन्द कुमार ने संस्था के उद्देश्य की ओर प्रकाश डालते हुए कहा कि मानव अधिकार रक्षक की महिला बिंग बहुत ही सक्रीय होकर ह्लबेटी बचाव बेटी पढ़ाओह्व सामाजिक सरोकार अभियान के तहत समाज में जागृति पैदा करने में, समाज में व्याप्त कुरीतियों जैसे दहेज प्रथा, बल विवाह, अशिक्षा आदि के निवारण हेतु प्रयास, महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु आर्थिक एवं शक्षनिक स्तर बढ़ाने हेतु, महिलाओं से संबंधित सरकारी योजनाओं की जानकारी एवं भागीदारी में सहयोग कार्य कर रही है।

उन्होंने बताया कि प्रतिभावान छात्र छात्राओं को सम्मानित कर प्रोत्साहित करने,युवाओं में कौशल विकास हेतु समाज के सहयोग से प्रशिक्षण, मार्गदर्शन एवं आर्थिक सहायता के रूप में रोजगार को प्रोत्साहन देना, आर्थिक रूप से कमजोर छात्र छात्राओं को अध्ययन के लिए आर्थिक सहायता, प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी हेतु सहायता और मार्गदर्शन उपलब्ध कराने के कार्यों को करती है।

बिहार प्रदेश अध्यक्ष चेतन थिरानी ने संस्थान की गतिविधियों की जानकारी देते हुए बताया कि तीन वर्षों में संस्था ने कानूनी जानकारी देने के लिए, निःशुल्क स्वास्थ्य सेवा देने के लिए, रक्तदान के लिए, निःशुल्क भोजन वितरण एवं गेट-टुगेदर बैठक की लगभग 150 से अधिक कैंप लगाया गया है।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बिहार प्रदेश मीडिया प्रभारी जितेन्द्र कुमार सिन्हा ने संस्थान के गतिविधियों पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हुए कहा कि मानव अधिकार रक्षक में सदस्यता ग्रहण करने वालों को योगदान के समय आधार कार्ड की फोटो कॉपी, पैन कार्ड की फोटो कॉपी, चरित्र प्रमाण पत्र और बायोडाटा जमा करायी जाती है और उसके बाद मात्र 5 महीनों के लिए ही सदस्यता दी जाती है। सदस्य यदि सक्रीय रूप से काम करते है तो फिर उसकी अवधि बढ़ायी जाती है। यह निर्णय पूरी तरह सही है। उन्होंने मीडिया के माध्यम से कार्यकलापों की जानकारी आमजन तक नियमित रूप से पहुंचाने के संबंध में भी जानकारी दी।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय कमिटी और प्रदेश कमिटी द्वारा जिन सदस्यों को टारगेट दिया गया था और जिन्होंने टारगेट पूरा किया उन्हें अंग वस्त्र और स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। सम्मानित होने वालों में पटना जिला अध्यक्ष पुजा सिन्हा, एससी एसटी विंग महासचिव आशा देवी, कला एवं संस्कृति प्रकोष्ठ की सचिव स्वेता बॉबी, रोहतास जिला सचिव संतोष अग्रवाल, सक्रिय सदस्य रश्मि सिन्हा, सरिता सिंह, रमा गुप्ता, सूरज कुमार शामिल थे। वहीं दो खास सदस्यों में गीता प्रसाद एवं किरण कुमारी को स्टार परफॉर्मर के रूप में अंग वस्त्र, स्मृति चिन्ह और क्राउन से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में अनिल कुमार (युवा सचिव,अशोक नगर ग्राम), सक्रिय सदस्य निरंजन कुमार, संतोष कुमार, प्रेरणा गौरव, नेहा गुप्ता, सीमा सिंह समाजसेवी आनंद त्रिवेदी को जल जीवन हरियाली का संदेश देते हुए पौधो से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में संस्था के मोतिहारी जिला अध्यक्ष पारस ठाकुर, सक्रिय सदस्य अमरजीत सिंह, रोहतास जिला संयुक्त सचिव राकेश तिवारी, रोहतास जिला उपाध्यक्ष मनीष कुमार राय, सासाराम प्रखंड अध्यक्ष डॉ० शिव शंकर शर्मा, पटना जिला से सरिता देवी, वंदना पांडे, मिनी देवी, प्रेरणा गौरव, पूर्णिमा बसक, माला देवी, कुमार प्रियेश, वैशाली जिला से ज्योति कुमार एवं पूनम सिन्हा, समस्तीपुर जिला अध्यक्ष लालू यादव, रोहतास जिला से कमलेश कुमार, डॉ० शिव शंकर शर्मा, मनीष कुमार राय शामिल थे।

बहुआयामी गरीबी और शोषण में जी रहे बच्चे

नांदेड़, महाराष्ट्र के मराठवाड़ा क्षेत्र के ऐतिहासिक स्थानों में से एक है। यह क्षेत्र गोदावरी नदी के उत्तरी तट पर स्थित है और अपने सिख गुरुद्वारों के लिए प्रसिद्ध है। यह मराठवाड़ा मंडल के तहत महाराष्ट्र के 36 जिलों में से एक है और इसे पिछड़े जिलों की श्रेणी में रखा जाता है। भौगोलिक रूप से, यह क्षेत्र ज्यादातर सूखाग्रस्त है। नांदेड़ में कृषि मुख्य व्यवसाय है और यहां के आम लोग ज्यादातर मजदूरी करके अपना जीवनयापन करते हैं। कम वर्षा के कारण अधिकांश मजदूर काम की तलाश में बड़े शहरों की ओर पलायन कर जाते हैं और कई दैनिक वेतन भोगी के रूप में काम करते हैं। यहां की 86 प्रतिशत महिलाएं गैर-कृषि व्यवसायों से जुड़ी हैं। ईंट भट्ठों में काम करने के अलावा लोग अपने परिवारों के साथ गन्ने के खेतों में भी मजदूरी करते हैं। कुछ लोग मुंबई और पुणे की कंपनियों में काम करने जाते हैं। यहां के लोग अक्सर काम के सिलसिले में दूसरे शहरों में पलायन करते रहते हैं। कुछ महिलाएं गृहिणी के रूप में काम करती हैं, जबकि कुछ पुरुष कपड़ों की दुकानों में सहायक और विक्रेता के रूप में काम करते हैं। नांदेड़ के अलग-अलग इलाकों में कपड़े का कारोबार अच्छा चल रहा है। शहर में अच्छी कपड़े की दुकानें होने के कारण जिले भर के गांवों और कस्बों से अच्छे ग्राहक यहां आते रहते हैं। नांदेड़ में वजीराबाद, श्रीनगर, जूना मोंढा और चौक अपनी कपड़े की दुकानों के लिए जाने जाते हैं। इन जगहों के आसपास दलित बस्ती है। इन दुकानों में काम करने वाले ज्यादातर लोग इन्हीं बस्तियों से आते हैं। शहरी आवास योजना के तहत कुछ लोगों को पक्के मकान मिल गए हैं, लेकिन यहां के ज्यादातर लोग पीढ़ियों से एक या दो कमरे के किराए के मकान में रह रहे हैं। यहां सरकारी नल से पानी की आपूर्ति की जाती है। शहर के लोग आमतौर पर स्वास्थ्य देखभाल के लिए जंगंबरी, शिवाजी चौक, श्याम नगर और शिवाजी नगर के सरकारी अस्पतालों में जाते हैं। यहां का सबसे बड़ा सरकारी अस्पताल विष्णुपुरी में है लेकिन स्कूल की बात करें तो इस क्षेत्र के आसपास बहुत कम सरकारी स्कूल हैं। ज्यादातर बच्चे मजदूर हैं। इसके पीछे गरीबी एक बड़ा कारण है। पिछड़े वर्ग के अधिकांश बच्चे परिवार की आर्थिक जरूरतों को पूरा करने के लिए छोटी उम्र में ही काम करना शुरू कर देते हैं। नतीजतन, बाल श्रम का आंकड़ा बढ़ा है क्योंकि बाल श्रम वयस्क श्रम से सस्ता है इसलिए, नियोक्ता बच्चों से काम करवाना पसंद करते हैं। दलित और आदिवासी बच्चों के साथ जाति-आधारित भेदभाव उनके सामाजिक और आर्थिक बहिष्कार से जुड़ा है। इन बच्चों को कई स्तर पर शैक्षिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिनमें उच्च ड्रॉपआउट दर, निम्न पारिवारिक साक्षरता दर, सरकारी स्कूलों में खराब शैक्षिक मानक, स्कूलों में भेदभाव और बहिष्करण प्रथाएं आदि शामिल हैं।

वाजपेयी जी कहते थे राजनीति और साहित्य दोनों ही जीवन के अंग हैं

जितेन्द्र कुमार सिन्हा, पटना

भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म 25 दिसंबर 1924 को मध्यप्रदेश के ग्वालियर में, ग्वालियर रियासत के प्रसिद्ध कवि पंडित कृष्ण बिहारी वाजपेयी के घर हुआ था। उनके दादा पंडित श्यामलाल वाजपेयी थे। वाजपेयी जी प्रतिष्ठित राष्ट्रीय नेता, प्रखर राजनीतिज्ञ, निःस्वार्थ सामाजिक कार्यकर्ता, सशक्त वक्ता, कवि, साहित्यकार, पत्रकार और बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे।

वाजपेयी जी आजीवन अविवाहित रहे। उन्हें 25 जनवरी, 1992 को भारत के प्रति निस्वार्थ समर्पण और समाज की सेवा के लिए भारत का दूसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्म विभूषण, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान ने 28 सितंबर 1992 को उन्हें हिंदी गौरव' , 20 अप्रैल 1993 को कानपुर विश्वविद्यालय उन हें डी लिट की उपाधि, 01ली अगस्त 1994 को लोकमान य तिलक पुरस कार, 17 अगस्त 1994 को श्रेष ठ सांसद के पुरस कार तथा पंडित गोविंद बल्लभ पंत पुरस्कार, वर्ष 1971 में पाकिस तान से स वतंत्रता प्राप त करने में बांग लादेश की मदद करने के लिए वर्ष 2015 में उन हें बांग लादेश सरकार ने फ्रेंड्स ऑफ बांग्लादेश लिबरेशन वार अवॉर्ड, 27 मार्च, 2015 को सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया था।

वाजपेयी जी जनता की बातों को ध्यान पूर्वक सुनते थे और उनको आकांक्षाओं को पूरा करने का प्रयास करते थे। उनके कार्य राष्ट्र के प्रति समर्पण को दिखाते हैं। वे एक साथ छंदकार, गीतकार, चंदमुक्त रचनाकार तथा व्यंग्यकार थे। जबकि उनकी कविता राष्ट्रप्रेम के साथ साथ सामाजिक तथा वैचारिक विषयों पर भी रहता था।

वाजपेयी जी का कहना था कि साहित्य के प्रति रुचि उन्हें उत्तराधिकार के रूप में मिली है। परिवार का वातावरण साहित्यिक था। उनके बाबा पंडित श्यामलाल वाजपेयी को संस्कृत और हिन्दी की कविताओं में बहुत रुचि थी। लेकिन वे कवि नहीं थे, परंतु काव्य प्रेमी थे। उन्हें दोनों ही भाषाओं की बहुत सी कविताएं कंठस्थ थीं। ये अकसर बोलचाल में छंदों को उदधृत करते थे। जबकि वाजपेयी जी के पिता पंडित कृष्ण बिहारी वाजपेयी प्रसिद्ध कवि थे। वे ब्रज और खड़ी बोली में काव्य लेखन करते थे।

वाजपेयी जी ने कई पुस्तकें लिखी हैं। इसके अलावा उनके लेख, उनकी कविताएं विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई, जिनमें राष्ट्रधर्म, पांचजन्य, धर्मयुग, नई कमल ज्योति, साप्ताहिक हिंदुस्तान, कादिम्बनी और नवनीत आदि शामिल हैं।

वाजपेयी जी जब पांचवीं कक्षा में थे तो उन्होंने प्रथम बार भाषण दिया था, जिससे लोग काफी प्रभावित हुए थे। उच्च शिक्षा के लिए जब वे विक्टोरिया कॉलेजियट स्कूल में थे तो उन्होंने वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में प्रथम पुरस्कार जीता था। वे राजनीति में रहते हुए साहित्य से जुड़े रहे या साहित्य की साधना करते हुए राजनीति के रंग में रंगे रहे, यह निर्णय करना थोड़ा कठिन है। वैसे वाजपेयी जी कहा करते थे कि राजनीति और साहित्य दोनों ही जीवन के अंग हैं।

वाजपेयी जी ने पोखरण में अनु परीक्षण करके संसार को भारत की शक्ति का एहसास कराया था। कारगिल युद्ध में पाकिस्तान के छक्के छुड़ाने का श्रेय

भी इन्ही को मिला था। उन्होंने कहा था कि मैं अपनी सीमाओं से परिचित हूं। मुझे अपनी कमियों का अहसास है। निर्णायकों ने अवश्य ही मेरी न्यूनताओं को नजरअंदाज करके मेरा चयन किया है। सद्भाव में अभाव दिखाई नहीं देता है। यह देश बड़ा है अद्भुत है, बड़ा अनूठा है। किसी भी पत्थर को सिंदूर लगाकर अभिवादन किया जा सकता है। वाजपेयी जी 'रामचरितमानस' को अपने लिए प्रेरणा का स्रोत मानते थे। वाजपेयी जी अपने छात्र जीवन के दौरान पहली बार राजनीति में तब आए जब उन्होंने वर्ष 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया था। वह राजनीति विज्ञान और विधि के छात्र थे और कॉलेज के दिनों में ही उनकी रुचि विदेशी मामलों के प्रति बढ़ी थी।

वाजपेयी जी बचपन से ही प्रखर राष्ट्र भक्त थे। अध्ययन के प्रति रुझान उनमें बचपन से ही प्रगाढ़ थी। वे वाद विवाद प्रतियोगिता में सदैव भाग लेते थे। निजी जीवन में सफलता, उनके राजनीतिक कौशल और भारतीय लोकतंत्र की देन रही है। महिलाओं के सशक्तिकरण और सामाजिक समानता के पुरजोर समर्थक थे। उनका सपना था कि भारत सभी देशों के बीच एक दूरदर्शी, विकसित, मजबूत और समृद्ध राष्ट्र के रूप में आगे बढ़े।

उनका मानना था कि मरेंगे तो देश के लिए, इस पावन धरती का कंकर-कंकर शंकर है, बूंद बूंद गंगाजल है। वे कहते थे कि भारत के लिए हंसते-हंसते प्राण न्योछावर करने में गौरव और गर्व का अनुभव करूंगा। वे अपनी वाणी, विवेक और संयम का ध्यान रखते थे।

वाजपेयी जी 1951 में भारतीय जनसंघ पार्टी में शामिल हुए थे। भारतीय जनसंघ पार्टी वर्तमान समय में भारतीय जनता पार्टी के नाम से जाना जाता है। वाजपेयी जी राजनीति क्षेत्र में चार दशक तक सक्रिय रहे थे। वे लोकसभा में नौ बार और राज्यसभा में दो बार चुने गए, जो अपने आप में एक कीर्तिमान है। वाजपेयी जी 1980 में गठित भाजपा के संस्थापक अध्यक्ष भी रहे थे। वाजपेयी जी राजनीतिक प्रतिबद्धता के लिए जाने जाते थे। वे 1996 में पहली बार बहुत कम समय के लिए प्रधानमंत्री बने थे। 13 अक्टूबर 1999 को उन्होंने लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की नई गठबंधन सरकार के प्रमुख के रूप में भारत के प्रधानमंत्री का पद ग्रहण किया था। इसके अतिरिक्त विदेश मंत्री, संसद की विभिन्न महत्वपूर्ण स्थायी समितियों के अध्यक्ष और विपक्ष के नेता के रूप में भी। रहे थे। उन्होंने आजादी के बाद भारत की घरेलू और विदेश नीति को आकार देने में एक सक्रिय भूमिका निभाई थी।

वाजपेयी जी पंडित जवाहर लाल नेहरू और इंदिरा गांधी के बाद, सबसे लंबे समय तक गैर कांग्रेसी प्रधानमंत्री के रूप में रहे थे। वाजपेयी जी ही पहले विदेशमंत्री थे, जिन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ में, हिन्दी में भाषण देकर भारत को गौरवान्वित किया था। वाजपेयी जी परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्रों से बिना डरे वर्ष 1998 में राजस्थान के पोखरण में द्वितीय परमाणु परीक्षण किया था, भारत की इस परीक्षण का अमेरिका की खुफिया एजेंसी सीआईए को भनक तक नहीं लग पाई थी। अटल बिहारी वाजपेयी का नाम लेने से विराट व्यक्ति का बोध होता है, जिसके व्यक्तित्व की व्यापकता असीमित था। एक राजनेता के रूप में तो उन्हें हर कोई जानता और मानता है। लेकिन, एक संवेदनशील साहित्यकार के रूप में भी वे व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के कण-कण में समाहित थे।

वाजपेयी जी की कविता है :-

जाने कितनी बार जिया है,
जाने कितनी बार मरा हूँ।
जन्म-मरण के फेरे से मैं,
इतना पहले नहीं डरा हूँ।
अन्तहीन अंधियार ज्योति की,
कब तक और तलाश करूंगा।
मैंने जन्म नहीं माँगा था,
किन्तु मरण की मांग करूंगा।
बचपन, यौवन और बुढ़ापा,
कुछ दशकों में खत्म कहानी।
फिर-फिर जीना, फिर-फिर मरना,
यह मजबूरी या मनमानी ?

वाजपेयी जी अपनी पार्टी या विरोधी पार्टी का नेता हो, सबको साथ लेकर चलने की खूबी उन्हें दूसरे नेताओं से अलग करती थी। वे कहते थे : -

बाधाएं आती हैं आएं,
घिरे प्रलय की घोर घटाएं,
पांवों के नीचे अंगारे,
सिर पर बरसे यदि ज्वालाएं,
निज हाथों में हंसते-हंसते,
आग लगाकर जलना होगा,
कदम मिलाकर चलना होगा।'

अटल बिहारी वाजपेयी जी का किडनी में संक्रमण और कुछ अन्य स्वास्थ्य समस्याओं के चलते अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में 16 अगस्त 2018 को उनका निधन हो गया। उनकी लिखी यह पंक्तियां आज भी प्रासंगिक है :-

हम जिएंगे तो देश के लिए
काल के कपाल पर लिखता
गीत नया गाता हूँ
अपनों के मेले में मीत नहीं पाता
हूँ गीत नया नाता हूँ
जूझने का मेरा इरादा न था
मोड़ पर मिलेंगे इसका वादा
हर चुनौती से दो हाथ मैंने किया
आंधियों में जलाए हैं बुझते दिए।

इको फ्रेंडली उद्योगों को बढ़ावा दें : राज्यपाल

माननीय राज्यपाल श्री राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने मालसलामी, पटना सिटी में आयोजित ह्यौब्भ्ड. ठपींतश्ये ब्ै प्दपजपंजपअम ब्मतमउवदलह्ल को संबोधित करते हुए कहा कि बिहार में इको फ्रेंडली उद्योगों को बढ़ावा दें ताकि हम प्रदूषण की समस्या से बचे रहें। इस दृष्टिकोण से कृषि आधारित उद्योग हमारे लिए अधिक उपयुक्त होंगे। हमें ऐसे वातावरण का निर्माण करना चाहिए जिसमें स्वरोजगार को बढ़ावा मिले।

उन्होंने कहा कि कॉरपोरेट सोशल रेस्पॉन्सिबिलिटी (ब्ै) की अवधारणा हमारे ऋषियों की संकल्पना का ही नया रूप है। हमारे मनीषियों ने हमें बताया है कि हम अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद आय के शेष अंश को समाज के लिए समर्पित

कर दें। हमारी संस्कृति हमें बताती है कि समाज के लिए कुछ करना हमारा स्वाभाविक

धर्म है। हमें इस बात पर ध्यान देने की जरूरत है कि औद्योगिक क्षेत्र समाज एवं देश की जरूरत के अनुरूप कार्य करे।

इस अवसर पर राज्यपाल ने स्वरोजगार प्रोत्साहन योजना अंतर्गत लाभुकों को स्वचालित सिलाई मशीन का वितरण भी किया।

कार्यक्रम को माननीय उद्योग मंत्री श्री समीर कुमार महासेठ एवं पूर्व मंत्री व विधायक श्री नंद किशोर यादव ने भी संबोधित किया।

इस अवसर पर एसोचैम, बिहार, बिहार इंडस्ट्रीज एसोसियेशन एवं श्रीबिहारी जी मिल्स प्रा॰ लि॰ के पदाधिकारीगण तथा विभिन्न व्यावसायिक एवं सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधिगण एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

मेष अष्टम शनि के लिए चांदी का टुकड़ा अपने पास रखें। दशम सूर्य आपके जीवन में विशेष कृपा बनाएगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।प्रतिष्ठा तो मिलेगी। लेकिन धनागमन में थोड़ी परेशानी होगी।मा के महालक्ष्मी रूप की पूजा करें। शुभ अंक 3 रंग हरा और लाल।

बृषभ श्री लुक्ष्मी नारायण की पूजा से धन लाभ होगा। संध्या प्रहर घी का चतुर्मुख दीपक अपने घर के मुख्यद्वार पर प्रतिदिन जलाए। मंत्र के वेश में छुपे शत्रु से सावधानी की जरूरत है। उत्सव और मांगलिक कार्य की बातें करने का उपयुक्त समय है। शुभ रंग नीला। शुभ अंक 8।

मिथुन शनिबार की संध्या में लड्डू गरीबों में बांटे। सेहत का ध्यान रखें। गुरु की कृपा से भाग्य की बृद्धि होगी।कर्म स्थान का शनि मेहनत के बाद ही सफलता देगा। भगवान श्री सूर्यनारायण को अर्ध्य प्रदान करें। शुभ अंक 1 और शुभ रंग लाल है।

कर्क प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अनुकूल समय है। सेहत का ध्यान रखना बहुत जरूरी है।घर के स्त्री पक्ष का सेहत चिंता का कारण बनेगा। हनुमान जी की आराधना करें। बजरंगबाण का पाठ करें। शुभ अंक 7। शुभ रंग- गुलाबी

सिंह जीवन में आनंद का वातावरण बनाने के लिए दुर्गासप्तशती का पाठ करें।विद्यार्थी के लिए और प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अनुकूल अवसर हैं। मन खिन्न रहेगा।बहुत मेहनत के बाद सफलता मिलेगी। शुभ अंक 2 और शुभ रंग सफेद या ऑफ वाइट।

कन्या पंचम शनि करियर के क्षेत्र में अच्छे अवसर देंगे।विद्या व बुद्धि से सफलता प्राप्त होंगे।गुरु के प्रभाव से लीवर या पेट की समस्या रहेगी। महामृत्युंजय मंत्र का जाप या श्रवण करें। शुभ रंग पीला। शुभ अंक 3।

बृश्चिक भाई के लिए समय अनुकूल नही है।बाएं सुर बाले पीले गणपति का तस्बीर घर में रखें। आपके आराध्य श्री लक्ष्मी नारायण की कृपा से धन आगमन का योग है। प्रतिष्ठा व सम्मान का योग है। शुभ रंग सफेद। शुभ अंक 5।

तुला भाग्य का राहु राजनीतिक व सामाजिक क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करेंगे। गुरु की कृपा से शत्रु व रोग का नाश होगा। शनि माता के स्वास्थ्य के लिए ठीक नही है।चांदी के पात्र से गाय का कच्चा दूध नदी में बहाएं।अनुकूलता बनी रहेगी। शुभ रंग लाल। शुभ अंक 4।

मकर जिद्द छोड़ना होगा।बाएं हाथ की कलाई में पीला धागा बांधने सेनुक्सान कम होगा।राहु अचानक व विचित्र परिणाम दे सकता है।कालभैरव जी की पूजा करें। शुभ रंग सफेद। शुभ अंक 7।

कुम्भ सूर्य की कृपा से पद व प्रतिष्ठा की बृद्धि होगी। गुस्सा पर नियंत्रण रखें।दुश्मन से सचेत जरूरी है। नजर बचना होगा।घर की शांति राहु के कारण नियंत्रण में नही रहेगा। सफेद कपड़े में सिंधा नामक घर के मुख्य द्वार पर बांधे। शुभ रंग -हरा। शुभ अंक 9।

धनु धन का आगमन होगा। लेकिन सूर्यास्त के बाद दूध व दही का सेवन नही करें। आत्मभिमान से बचना होगा।अहंकार को हावी नही होने दे। हनुमान चालीसा का पाठ करें। शुभ अंक 6। शुभ रंग हरा।

मीन झूठ से नफरत होगी।झूठे लोगों से सामना होगा। लाभ होंगे लेकिन मन के अनुकूल नही।लेकिन मान सम्मान बढेगा। मंगल कार्य के लिए आगे बढ़े।आवश्यकता को कम करें। चोट चपेट से बचना होगा।हल्दी का गांठ अपने पर्स में रखें। ॐ नमो नारायणाय का जाप करें। शुभ रंग-गुलाबी। शुभ अंक 8।

प्रदीप पांडेय चिंटू और यशपाल शर्मा की फिल्म 'कोख' का ट्रेलर आउट, दिखेगी सेरोगेसी पर आधारित फिल्म में रिश्तों की परीक्षा

सेरोगेसी वर्तमान समय में एक संवेदनशील मुद्दा है, जहां सेरोगेसी से मां नहीं बन सकने वाली महिलाओं के गोद भरी जाती है। इसी कहानी को लेकर बनी बेहद महत्वपूर्ण भोजपुरी फिल्म "कोख" का ट्रेलर आउट हो गया है। इसमें सुपरस्टार प्रदीप पांडेय चिंटू, यशपाल शर्मा और संचिता बनर्जी मुख्य भूमिका में हैं। यह फिल्म सेरोगेसी के बीच रिश्तों की परीक्षा लेती ट्रेलर के अनुसार नजर आ रही है। फिल्म का ट्रेलर वेव म्यूजिक के ऑफिस यूट्यूब चैनल से साल 2024 के पहले दिन ही रिलीज हुआ है, जो अब वायरल है। लोग फिल्म के ट्रेलर को बेहद पसंद कर रहे हैं।

आकृति एंटरटेनमेंट प्राइवेट लिमिटेड प्रस्तुत प्रदीप पांडेय चिंटू ने अपनी भोजपुरी फिल्म "कोख" को लेकर कहा कि यह एक मजेदार और सकारात्मक फिल्म है जो वर्तमान दौर में किसी भी परिवार को संतान के सुख से प्रमुख ना रखने वाली कहानी और इस प्रक्रिया में रिश्तों की परीक्षा पर आधारित है। फिल्म में मेरा किरदार बेहद अहम है। साथ ही फिल्म में यशपाल शर्मा जी के साथ काम करने का अनुभव भी शानदार रहा। फिल्म महिला प्रधान है लेकिन यह हर वर्ग के दर्शकों को देखना चाहिए। चिंटू ने कहा कि नव वर्ष में ट्रेलर के साथ हम दर्शकों को मनोरंजन और ढेर सारी शुभकामनाएं भेज रहे हैं। उम्मीद है सबों फिल्म का ट्रेलर पसंद आएगा और जब फिल्म रिलीज होगी तो फिल्म भी उन्हें खूब पसंद आएगी।

फिल्म को लेकर यशपाल शर्मा ने कहा कि भाषा के आधार पर फिल्मों के प्रति धारणा बनाना सही नहीं है मेरा मानना है कि एक कलाकार के रूप में किरदार महत्वपूर्ण है जो मैंने आज तक अपनी सभी फिल्मों में निभाया है और भोजपुरी की इस फिल्म में भी मैं अपने किरदार को बखूबी जिया हूं। उम्मीद करता हूं कि हिंदी की तरह भोजपुरी के दर्शक भी हमें अपना आशीर्वाद और प्यार देंगे। अभिनेत्री संचिता बनर्जी ने कहा कि यह फिल्म मेरे लिए बेहद संवेदनाओं से भरी है औरत होने के नाते मन न बनने की मजबूरी और किसी और के बच्चे को पालकर जन्म देने के बाद उसे छोड़ने की जर्नी दो महिलाओं के बीच बेहद कष्टकारी अनुभव को दशार्ता है जो महिलाएं ही समझ सकती हैं। इस किरदार को पर्दे पर जीना मेरे लिए आसान नहीं था, लेकिन कलाकार होने के नाते मैं अपना हंड्रेड परसेंट दिया। अब दर्शकों को डिसाइड करना है कि यह उन्हें कितना पसंद आती है। आपको बता दें कि फिल्म "कोख" के निमार्ता राकेश डांग और लाल विजय शाहदेव हैं, जबकि इस फिल्म का निर्देशन प्रबीण कुमार शर्मा ने किया है। फिल्म की सहनिमार्ता अमृता शाहदेव और मधुकर वर्मा हैं। फिल्म "कोख" के लेखक लाल विजय शाहदेव हैं। छायांकन अजित सिंह ने किया है। संगीत ओम झा का है। संकलन अखिलेश सिंह का है। क्रिएटिव डायरेक्टर कामाक्षी ठाकुर हैं। गीतकार प्यारे लाल यादव, अरबिंद तिवारी, ओम झा, राकेश निराला, विनय निर्मल हैं। नृत्य लक्की विश्वकर्मा व एमके। गुप्ता जोय (मनोज) और कला नाजीर शेख का है। पी आर ओ रंजन सिन्हा हैं। फिल्म में प्रदीप पांडेय चिंटू और यशपाल शर्मा के साथ पूजा गांगुली, संचिता बनर्जी और माया यादव भी मुख्य भूमिका में हैं।

सोशल मीडिया से ब्रेक की घोषणा के एक दिन बाद इंस्टाग्राम पर लौटीं

सेलेना गोमेज

सेलेना गोमेज सोशल मीडिया पर वापस आ गई हैं। सिंगर और एक्ट्रेस द्वारा कुछ समय के लिए सोशल मीडिया से ब्रेक लेने की योजना की घोषणा करने के एक दिन बाद, उन्होंने शेफ गॉर्डन रामसे के साथ एक कोलेबोरेटिव कूकिंग वीडियो को बढ़ावा देने के लिए इंस्टाग्राम पर पोस्ट किया। पीपल मैगजीन की रिपोर्ट के अनुसार, 31 वर्षीय गोमेज ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर क्लिप के साथ लिखा, गॉर्डन रामसे ने मेरी रसोई में कदम रखा और मुझे बताया कि एक अद्भुत नाश्ता बर्गर कैसे बनाया जाता है। पूरे वीडियो में, 57 वर्षीय रामसे, सेलेना को नाश्ते के बर्गर के लिए तले हुए अंडे से लेकर टर्की बेकन और बहुत कुछ पकाने और सामग्री इकट्ठा करना सिखाते हैं। इससे पहले, सेलेना ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर अपने रिकॉर्ड निमार्ता बॉयफ्रेंड बेनी ब्लैंको के दो छोटे बच्चों के साथ चंचल पल बिताते हुए एक वीडियो साझा किया था। उन्होंने क्लिप के साथ लिखा, मैं कुछ समय के लिए सोशल मीडिया से दूर हूं। जो मेरे लिए वास्तव में मायने रखता है उस पर ध्यान केंद्रित कर रही हूं।

ओटीटी पर गूँजी टाइगर-3 की दहाड़, 14 देशों में बनी नम्बर-1

सलमान की फिल्म टाइगर 3 ने बॉक्स ऑफिस पर रिकॉर्ड सेट कर दिया है। ड्ळळ पर भी फिल्म हिट साबित हो रही है। 7 जनवरी को ग्लोबल स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म अमेजन प्राइम पर टाइगर 3 रिलीज होने के बाद से सोशल मीडिया इसका सेंसेशन बढ़ गया है। इस सक्सेस को देखते हुए सलमान ने मीडिया से अपनी खुशी व्यक्त की है। सलमान ने कहा, 'टाइगर फ्रेंचाइजी को पहली फिल्म से ही जबरदस्त प्यार मिला है, चाहे वह थिएट्रिकल रूप से हो, सैटेलाइट पर या स्ट्रीमिंग पर! इसलिए, यह देखना आश्चर्यजनक लगता है कि टाइगर 3 की तीसरी किस्त पहले सिनेमाघरों में और अब स्ट्रीमिंग पर कैसे हिट रही है। मैं अपने सोशल मीडिया के माध्यम से अपने दर्शकों के साथ निकट संपर्क में हूं और अब टाइगर 3 ओटीटी पर आने के बाद मैं प्यार का प्रवाह देख सकता हूं। एक अभिनेता के रूप में मेरा सबसे बड़ा और एकमात्र काम लोगों का भरपूर मनोरंजन

करना है और मुझे खुशी है कि टाइगर 3 को दुनिया भर के लोग पसंद कर रहे हैं। ' ''टाइगर 3 एक ऐसी फिल्म है जो मेरे दिल के बहुत करीब है. इसलिए, जब यह सिनेमाघरों में हिट हुई तो यह बेहद व्यक्तिगत लगा और अब जब यह रिलीज होने के कुछ ही दिनों के भीतर ओटीटी पर हिट हो गयी है. टाइगर लोगों का मनोरंजन करने के लिए हमेशा मौजूद होगा. सलमान खान, कैटरीना कैफ और इमरान हाशमी अभिनीत वाईआरएफ की टाइगर 3 ने दुनिया भर में 472 करोड़ का कलेक्शन करके बॉक्स ऑफिस पर जबरदस्त धमाल मचाया।

Run under Guidelines of NABL and WHO

आपके स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर BioQ Diagnostics ने डेंगू के फैलाव को देखते हुए

डेंगू फॉलो अप टेस्ट पैकेज लाया है .....

DENGUE TEST M.R.P.:₹1200/- Now at ₹600/- only

PACKAGE-1
- CBC with Manual Platelet Count
- SGOT
- SGPT

Price : ₹780/- Now at ₹450/- only

PACKAGE-2
- CBC with Manual Platelet Count
- Liver Profile (LFT)
- C-Reactive Protein (CRP)

Price : ₹1650/- Now at ₹ 900/- only

BioQ DIAGNOSTICS

A Complete
DIAGNOSTIC SOLUTION
The Most Systematic Organised
& Most Advanced Lab of Bihar & Jharkhand

- Complete Diagnostic Facilities under one Roof
- Run under Guidance and Supervision Of PGI Chandigarh Traind Doctor and other team of experts.
- Home collection facility & Membership Scheme Available

CANCER TEST | RTPCR | URINE TEST | STOOL TEST
CULTURE | SPUTUM TEST | BLOOD TEST | SWAB TEST

Auth. Collection Centre
Aditya vision-Shop no 20, Ground Floor, Yuvraj Palace, Near by Sri Ram hospital, Lohiya Nagar, kankarbagh, Patna-800020

BioQ Healthcare Private Limited
Regd. Office :- S.D.O. Road, Andar kila
Beside St. John's School, Hajipur (Vaishali) Bihar-844101
www.bioqhealthcare.com

Mobile : 95070 00102 | 91170 00102 | 95550 55828
Phone : 06224-350043 | 06224-35004
Email : info@bioqhealthcare.com

FORD HOSPITAL, PATNA

A NABH Certified Multi Super-Speciality Hospital

PATNA

A 105-Bedded Hospital Run by Three Eminent Doctors of Bihar

उत्कृष्ठ एवं अपनत्व की अनुभूति

Dr. Santosh Kr.

Dr. B. B. Bharti

Dr. Arun Kumar

हृदय रोग चिकित्सा के लिए बेहतरीन टीम

2nd Multi Speciality NABH Certified Hospital of Bihar

Best Promising Multi Speciality Hospital 2018 Bihar.

फोर्ड हॉस्पीटल में उपलब्ध सेवाएं

क्लीनिकल सर्विसेस

- कार्डियोलॉजी
- क्रिटीकल केयर
- न्यूरोलॉजी
- स्पाईन सर्जरी
- नेफ्रोलॉजी एवं डायलेसिस
- ऑर्थोपेडिक एवं ट्रॉमा
- ओब्स एवं गॉबनेकोलौजी
- पेडिएट्रिक्स
- पेडिएट्रिक सर्जरी
- साइचिरेट्री एवं साइकोलॉजी
- रेस्पिरेट्री मेडिसिन
- यूरोलॉजी
- सर्जिकल ऑन्कोलौजी

Empaneelled with CGHS, ECR, CISF, NTPS, Airport Authority, Power Grid & other Leading PSUs, Bank, Corp. & TPS

New Bypass (NH-30) Khemnichak, Ramkrishna Nagar, Patna- 27
Helpline ; 9304851985, 9102698977, 9386392845, Ph.: 9798215884/85/86
E-mail : fordhospital@gmail.com web. : www.fordhospital.org